विश्व चिंतन सीरीज़

- सार्त्र—शब्दों का मसीहा : प्रस्तुति—प्रभाखेतान
- प्लेटो—संवाद : प्रस्तुति—बद्रीनाथ कौल
- नीत्शे—जरथुष्ट्र ने कहा : प्रस्तुति—मुद्राराक्षस
- मैकियावली—शासक : प्रस्तुति—शशिवंधुम
- शेख सादी—गुलिस्तां : प्रस्तुति—रामकिशोर सक्सेना

सम्पादन : डॉ० नीलिमा सिंह

सरस्वती विहार

प्रस्तुति

मुद्राराक्षस

नीत्शे : ज़रथुष्ट्र ने कहा
(चिंतन)

सम्पादन
डॉ० नीलिमा सिंह

© प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण : १९८६
द्वितीय संस्करण : १९८७

प्रकाशक :
सरस्वती विहार
जी० टी० रोड, शाहदरा
दिल्ली-११००३२

मुद्रक:
सोनी आफसेट प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली - 110032

मूल्य : पैंतीस रुपये

ZARATHUSTRA NE KAHA
[illegible] HE

Second Edition : 1987
Price : 35-00

क्रम

दूसरे महायुद्ध से पहले, जिसे जर्मन राष्ट्र के अन्दर एक प्रदेश की हैसियत मिली हुई थी, उस प्रदेश सैक्सोनी का रूप उन्नीसवी सदी में कुछ और था। चौदहवी सदी से लेकर उन्नीसवी सदी के शुरु तक यह क्षेत्र स्वतंत्र राज्य अथवा करदाता स्वायत्त शासन के रूप मे रहा। कभी वह पूरी तरह स्वाधीन हो गया, तो कभी दूसरे शक्तिशाली राष्ट्रों की लडाइयो मे शामिल होकर टूटता-फूटता रहा।

इसी इलाके के एक पुराने शहर लाइपजीग में १४०६ मे एक विशाल विश्वविद्यालय स्थापित हुआ और बाद मे जब प्रदेश दो उत्तराधिकारियो मे बंटा तो विटेनबर्ग मे एक दूसरा विश्वविद्यालय खुला, जहां से ईसाइयत की रूढ़ियो के खिलाफ मार्टिन लूथर ने अपना संघर्ष शुरु किया था।

सोलहवीं सदी में सैक्सोनी समृद्ध औद्योगिक राज्य के रूप मे उभरा। चांदी, ताबे, जस्ते और नमक की खानो के अलावा यहां जवाहरात की खानें भी थी; लेकिन इसके बाद यह राज्य दूसरों की लड़ाइयों मे शामिल होता रहा। १८१५ में सैक्सोनी जर्मन महासंघ का सदस्य हो गया और इसके कोई अठारह बरस बाद ही प्रशा व्यापार शुल्क संघ मे शामिल हो गया। इसके बाद यहां के प्रशासन ने एक संविधान भी तैयार किया।

१८४८-४६ की जर्मन क्रान्ति के समय एक बार फिर सैक्सोनी ने गलत निर्णय ले लिया। सैक्सोनी के शासन ने बिस्मार्क की नीतियो को अस्वीकार कर दिया। नतीजा बहुत अच्छा नही हुआ। बोहीमिया के मैदान में बिस्मार्क ने उसे हरा दिया और उसे दुबारा जर्मन महासंघ का सदस्य बनना पड़ा।

जर्मन क्रान्ति और बिस्मार्क के उदय के इन्हीं कुछ आशंका-भरे दिनों में, बार-बार रास्ते बदलकर थके हुए सैक्सोनी के इतिहास में १८४४ में एक छोटे-से शहर रोकेन में एक व्यक्ति पैदा हुआ फ्रेडरिख विल्हेल्म नीशे (या आम तौर पर जाना गया नीत्शे) !

विटेनबर्ग विश्वविद्यालय से मार्टिन लूथर ने जो वैचारिक क्रांति शुरू की थी, उसे सुधारवाद के नाम से ईसाइयत में एक महत्त्वपूर्ण दर्जा मिल गया था। ईसाई रूढ़िवादी और सुधारवादी, दो दलों में बंट गए थे। रोचक है कि सैक्सोनी का इतिहास न सिर्फ आस-पड़ोस के मुल्कों की दुश्मनियों, दोस्तियों से चपेट खाता रहा, बल्कि सुधार और रूढ़ि की आंधियों में भी झूलता रहा था। सैक्सोनी के शासक जान फ्रेडरिख ने जर्मन सम्राट् चार्ल्स पंचम के विरुद्ध लूथर की रक्षा की थी। सत्रहवीं सदी में जब पोलैण्ड का शासक आगस्टस रोमन कैथोलिक हुआ तो सैक्सोनी के सुधारवादी प्रशासन की जगह उसने रूढ़िवादी लोग वहां बिठा दिए।

फिर भी लगातार अपना पांव जमाए रखने की कोशिश करते हुए सुधारवाद कुछ गिरिजाघरों पर जमा ही रहा था। ऐसे ही एक गिरिजाघर के सुधारवादी पादरी का बेटा था नीत्शे। आज धर्म-संबंधी आस्थाएं कुछ कम खतरनाक होती हैं। खासतौर से बुद्धिजीवियों में। पिछली सदी तक इन्हीं आस्थाओं में टकराव होने पर गर्दन उतार ली जाया करती थी।

बान और लाइपज़ीग विश्वविद्यालयों में नीत्शे ने पश्चिमी दर्शन पढ़ा। बिस्मार्क और सैक्सोनी शासन के बीच संघर्ष में पढ़ाई पूरी करने के बाद नीत्शे सैक्सोनी से दूर स्विट्ज़रलैण्ड चला गया। यहां बेसेल विश्वविद्यालय में वह अध्यापक हो गया। चूंकि अध्यापक का यह पद स्विट्ज़रलैण्ड में नियमित प्रशासनिक सेवा में शामिल था, इसलिए वह वहीं का नागरिक भी हो गया।

ऊबे हुए और बीमार, किसी कदर चिड़चिड़े सैक्सोनी के इतिहास से नीत्शे अपने-आप को जोड़ नहीं पा रहा था। यहां नये तन्त्र में उसे थोड़ा सुकून मिला। तभी एक और भयानक दुर्घटना हो गई।

१८७० में फ्रांस और प्रशा के बीच लड़ाई छिड़ गई। लड़ाई में पहल . ने की; लेकिन ताज्जुब की बात थी कि फ्रान्स ही नहीं प्रशा के सम्राट्

की ओर से समूचे जर्मन महासंघ मे युद्ध का उत्साह फैल गया। दोनों तरफ से भारी तैयारियां हो चुकी थी। दोनों ताकतें आखिरी फैसले के लिए उत्सुक थी; लेकिन लड़ाई इतनी आसान नहीं थी। १९ जुलाई, १८७० से लेकर २९ जनवरी, १८७१ तक लगभग आधे योरोप मे यह लड़ाई दहकती रही और आखिर फ्रान्स हार गया। नेपोलियन तृतीय की गद्दी छिन गई। फौजों से घिरे पेरिस के लाखों लोग भूख से तिलमिलाते रहे और लाशों की तादाद बढ़ती ही गई।

यह सारा कुछ नीत्शे ने देखा। इसके बीच से गुजरा। गुजरना पड़ा। यह भी अजीब नियति थी, क्योंकि नीत्शे सैक्सोनी का था। ग्रावलाते और सेन्ट प्रिवा पर, जहां सबसे भयानक युद्ध हुआ, सैक्सोनी का युवराज स्वयं अपनी सेना के साथ जर्मन सेनाओं की मदद कर रहा था। देश से बाहर लेकिन करीबी राज्यों में रहने वाले तमाम सैक्सोनीवासी इस लड़ाई में शामिल हो रहे थे। नीत्शे को भी शामिल होना पड़ा।

नीत्शे दार्शनिक था। गनीमत है, उसके हाथ मे बन्दूक नहीं दी गई। उसे फौजी घायलों की देख-रेख करने वाले डाक्टरो के साथ बतौर नर्स लगा दिया गया था। यहां उसने 'युद्ध' जैसे खौफनाक शब्द के पीछे पागलों की तरह भागकर कटवा दिए गए आदमी की दर्दनाक चीखें सुनी और वह उनके बारे मे सोचता रहा।

१८७१ में यह लड़ाई आधे योरोप के चेहरे को झुलसाकर चली गई। नीत्शे लड़ाई के बाद स्विट्जरलैण्ड वापस आ गया। वह अब बेहद बेचैन रहने लगा था। दर्शन भी अब उसे शान्ति नहीं दे पाता था। ऐसे में उसे एक सहारा मिला—संगीत। संगीत में उसे सुकून मिलता था और इसी डोर के सहारे वह एक दिन रिचर्ड वाग्नेर का दोस्त हो गया, प्रशंसक हो गया। उम्र में वाग्नेर उससे काफी बड़ा था। ख्याति बहुत ही बड़ी थी।

वाग्नेर लाइपजीग मे पैदा हुआ था। इत्तफाक की बात है कि वाग्नेर खुद अपने-आप से परेशान था। उसकी मां ने दो शादियां की थी। एक तो पुलिस अफ़सर से और बाद मे एक अभिनेता से। वाग्नेर का ख़याल था कि वह अभिनेता का बेटा था। उसकी दो बहनें संगीत नाटकों की

अभिनेत्रिया थी। वह खुद बीथोविन से प्रभावित था और छिपकर संगीत सीखता था। उसने एक और गड़बड़ी में भी हाथ डाल रखा था। फ्रान्स की क्रान्ति में उसने काफी हिस्सा लिया था और लाइपजीग के आस-पास भी वह उसी तरह की राजनीतिक हवा फैलाने लगा था। इसलिए जर्मन शासन ने आखिरकार उसे देश निकाला दे दिया था। तब से वह स्विट्ज़रलैण्ड में रह रहा था। अपने समय का सबसे बड़ा संगीतकार और संगीतनाटक लेखक होने के बावजूद जिन्दगी से ऊबा हुआ और तनावों में उलझा जी रहा था।

उसने जिससे प्यार किया था उसके एक बेटी पहले से ही थी, जो अवैध थी और जिसे वह औरत वाग्नेर को अपनी बेटी नहीं बहिन बताती रही थी। १८६० में उसे हर जर्मन प्रदेश में जाने की इजाज़त मिल गई; लेकिन सैक्सोनी, जिससे उसे प्यार था, वह फिर भी नहीं जा सकता था। उसके ऊपर कर्ज़ इतने हो गए थे कि उसे जर्मनी से वियना भाग आना पड़ा था। यहां वह एक विवाहिता औरत से प्यार करने लगा था। उसके अवैध संबंध अगले कई बरस तक दर्दनाक बने रहे।

इसी मनःस्थिति में वाग्नेर युवा नीत्शे का दोस्त हो गया। नीत्शे ने एक किताब लिखी—'संगीत की आत्मा से त्रासदी का जन्म'। किताब लोगों को बहुत अच्छी नहीं लगी। उसकी पहली किताब यही थी। पहले हिस्से में उसने शास्त्रीय कृतियों की परम्परा तोड़ते हुए संगीत की आत्मा की परिभाषा की थी और दूसरे हिस्से में वाग्नेर के बीसियों संगीत नाटकों की व्याख्या द्वारा त्रासदी के पुनरुत्थान की कल्पना की थी। नीत्शे ने यूनानी पौराणिक कर्मकाण्डों से जुड़े नाट्य वृत्तों की व्याख्या करते हुए उन्हें भविष्य से जोड़ा था। उसका ख्याल था कि मंच वहीं पहुंचेगा।

आश्चर्य की बात है कि ग्रातोव्स्की जैसे निर्देशकों ने आज नाटक को सचमुच वहीं पहुंचा दिया। लगता है—नीत्शे भविष्य द्रष्टा भी था।

वाग्नेर नीत्शे के बाप की उम्र का था। दोस्ती लगभग अनगढ़ थी। वाग्नेर से ज्यादा संवाद मुमकिन नहीं था। नीत्शे फ्रान्स के पुनरुत्थानवादी विचारकों से काफी प्रभावित होता जा रहा था; लेकिन वाग्नेर उनसे घृणा करता था। नीत्शे को शक हुआ कि वाग्नेर फ्रांस-प्रशा युद्ध के बाद

जानबूझकर ऐसा कर रहा था, ताकि जर्मनी से उसके संबंध सुधर जाएं। नीत्शे धीरे-धीरे वाग्नेर से कतराने लगा। इसके बाद वह और ज्यादा टूटन, तनाव और उलझन महसूस करने लगा।

वाग्नेर आखिर जर्मनी लौट गया और शक्की नीत्शे आघात खाकर बीमार हो गया। उसका स्वभाव अजीब था। उसके दोस्त तो थे ही नहीं। लड़कियों के प्रति भी उसे रुचि नहीं थी, बल्कि लडकियों से वह चिढता ही था।

इसकी एक वजह भी बताई गई है। जिन दिनों वह पढ़ता था, अपने कुछ दोस्तों के साथ एक वेश्यालय गया था। दुबारा भी गया। उसके कुछ दिनों बाद वह बीमार पड़ा था। बहुत कठिनाई से, अकेले कहीं जाकर उसने इलाज कराया था। शायद उसे सिफलिस हो गई थी। उन दिनों यह रोग भयानक ही था। मुमकिन है कि इसीलिए उसे औरत से नफ़रत रही हो। उसने शादी कभी नहीं की। प्यार जैसी चीज भी नहीं। अजीब विरक्ति में डूबा हुआ अक्सर अपने-आप को तकलीफ देने की कोशिश करता रहता था। खाना न खाना, सर्दी झेलते रहना या और इसी तरह के काम जैसे किसी एकान्त तपस्वी की तरह करता रहता था। नतीजा यह कि अब वह खासा बीमार रहने लगा था।

१८७९ में उसने अध्यापन का काम छोड़ दिया। नौकरी से इस्तीफा दे दिया। इतना कमजोर हो गया कि न तो उससे लिखाई-पढाई होती थी, न नौकरी। अब वह साल में दो बार जगह बदलता था। गर्मियों में स्विट्जरलैण्ड चला आता था और सर्दियों में इटली चला जाता। इटली का सीलन-भरा गर्म मौसम उसे और ज्यादा बीमार कर देता था।

लिखना उसने जैसे-तैसे जारी रखा। वह जो कुछ लिखता, वह कविता और प्रलाप का कुछ मिला-जुला रूप जैसा लगता था। वह बेतरतीब होता था; लेकिन फिर भी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अक्सर बहुत सूक्ष्म बातें भी कह जाता था, जिन्हें पढ़कर लोग चौंक जाते थे। उस वक्त का लिखा बहुत कुछ उसे और भी ज्यादा उदास करता था, क्योंकि उसे लोग स्वीकार नहीं कर पा रहे थे।

तब उसने अपनी सबसे ज्यादा मशहूर किताब लिखी—'जरथुष्ट्र ने

कहा'। इसके चार खण्ड छपे। पहले दो खण्ड १८८३ में, तीसरा अगले साल और चौथा इस तरह छपा कि उसकी सिर्फ सात प्रतियां लोगों तक पहुंच पाईं। इसमें सन्देह नहीं कि नीत्शे की यह कृति क्लासिकों में अपना स्थान द्र्। सकी।

नीत्शे अब अच्छाई-बुराई, मूल्यों, मर्यादाओं और नैतिक प्रश्नों के साथ ज्यादा उलझ रहा था, बल्कि इस विषय पर लिखते वक़्त अक्सर वह गुस्से मे भरा लगता है। वह दार्शनिक सिद्धांतों को जन्म देने से नफरत करता है। उसका मूल विश्वास शोपेनहावर के इच्छाशक्ति वाले सिद्धांत से मिलती-जुलती शुरुआत करके भी अलग जा खड़ा होता है। शोपेनहावर ने इच्छाशक्ति द्वारा दुखों से मुक्ति की कल्पना की थी। वह चाहता था कि मानव-मानव का सहभोक्ता हो, दूसरे के दुखों को स्वयं जिए और इस तरह जीवन में निर्वाण की स्थिति पा जाये।

नीत्शे इस सिलसिले में घोर नकारवादी है। वह परमशक्ति प्राप्त करने के लिए इच्छाशक्ति पर जोर देता है। इस प्रक्रिया में वह हर परम्परा से, चाहे वह विचार ही क्यो न हो, लड़ता है। वह मनुष्य में शक्तिशाली होने के सहज स्वभाव को जगाना चाहता है। वह मानता है कि मनुष्य युद्ध इसलिए करता है कि वह कमज़ोर इच्छाशक्ति वाला होता है। रचनात्मक शक्ति के अभाव में वह तलवार उठाता है। आदमी मरने के बाद स्वर्ग जाने के लिए तथाकथित अच्छे काम इसीलिए करता है कि वह जीते जी अपने को कमज़ोर पाता है।

नीत्शे ईसाइयत का गहरा आलोचक था और उसने व्यंग्य किया है कि ईसाई अपने दुश्मन से इसलिए प्यार करता था कि वह चाहता था कि वह इसी आधार पर स्वर्ग जाए और दुश्मन को नरक की आग में जलता देखकर खुश हो। इसीलिए उसने सारे सामाजिक मूल्यों और नैतिक मर्यादाओं पर प्रश्नचिह्न लगाया है।

१८८६ में उसने एक और किताब लिखी—'अच्छाई और दुष्टता से परे'। उसने अच्छे और बुरे तथा अच्छे और दुष्ट के बीच अन्तर किया। उसने अच्छे और दुष्ट की धारणा को दासों की नैतिकता कहा है। 'नैतिकी वंशावली' उसने अगले साल प्रकाशित की।

इसके बाद उसने काफी अन्तरंग किस्म की किताबें लिखी, मसलन 'मूर्तियों का धुंधलका' या 'अपनी बात'। अपनी बात में बेहद व्यग्यात्मक ढंग से नीत्शे ने अपने-आप को एक तटस्थ द्रष्टा मानकर खोजा और परखा है। यह उसके मनोवैज्ञानिक अध्ययन की एक कथा जैसी मानी जा सकती है।

इन दोनों किताबों के बीच उसने अपनी जबर्दस्त विवादास्पद किताब लिखी—'ईसा के विरुद्ध'। इसमें उसने ईसाई नैतिकता की खुलकर आलोचना की है।

इन महत्वपूर्ण कृतियों के अलावा उसने कुछ और रचनाएं भी लिखीं। जब वह शोपेनहावर से काफी प्रभावित था तब उसने लिखी—'शोपेनहावर : एक शिक्षक'। मानव व्यवहार के सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक विवेचन के बारे में उसकी लिखी पुस्तक का नाम है 'मानवः अत्यधिक मानवीय'। 'बोध का आनन्द' लगभग औपनिषदिक् आध्यात्मिकता और कविसुलभ कल्पनाशीलता की कृति है।

बीसवीं सदी में, उन्नीसवी सदी के इस बीमार और टूटे हुए आदमी की कृतियों को व्यापक प्रतिष्ठा मिली। यहा तक कि नाज़ी भी उसकी उपेक्षा नहीं कर सके। हालांकि मूलतः वह नाज़ियों के राष्ट्रीय समाजवाद से बिल्कुल ही अलग और अक्सर विरोधी बात कहता था, फिर भी नाज़ियो ने उसकी रचनाओं को तोड़-मरोड़कर छापा था।

इस सदी में नीत्शे के अलावा शायद ही कोई ऐसा दार्शनिक हो, जिसने गैर मार्क्सवादी दुनिया में इतने अधिक बुद्धिजीवियो को प्रभावित किया हो। टामस मान, हर्मन हेस, आन्द्रे मार्लो, आन्द्रे जोद, अल्बेयर कामू, रिल्के, स्टीफेन जार्ज, ज्यापाल सार्त्र और जर्मनी के अनेक अस्तित्ववादी नीत्शे से गहरे तक प्रभावित हैं। यहां तक कि फ्रायड जैसे विचारक ने भी नीत्शे की तारीफ करते हुए स्वीकार किया है कि नीत्शे मानव-मनोविज्ञान में गहरी पैठ रखता था। उसने यहां तक कहा कि 'अपना अन्तरंग समझने वाला नीत्शे के अलावा दूसरा व्यक्ति न पैदा हुआ है, न होगा।'

१८८६ मे हमेशा की तरह सर्दियों का मौसम नीत्शे इटली में बिता रहा था। जनवरी के महीने में सर्दी यहां भी थी। बिखरे बालों ...।

बदहवास आदमी इधर कई रोज से बुरी तरह खामोश दिखने लगा था।

दो पतली नदियों के मुहाने पर बसे पुराने शहर तुरिन या तोरिनों की गलियों के लोग अब उसे पहचानने लगे थे। अचानक उस दिन वह सड़क पर एक जगह खड़ा हो गया, लड़खड़ाया और गिर पड़ा। उसका सिर, मैले बालो सहित सडक के भूरे पत्थरों वाले फ़र्श से टकराया। लोगों ने देखा, सोचा शायद वह अब उठ पड़े; लेकिन वह वही, गुजरते हुए जुलूस के बाद छूट गए विरोध के काले झडे की तरह बिखरा पड़ा रहा।

भीड ने उसे उठाया। उठाकर सड़क के किनारे बैठा दिया। मगर वह नीत्शे नही कुछ और ही था। वह फटी-फटी, अजनबी आंखों से लोगो को घूर रहा था। उसे अब कुछ भी याद नही था। अपनी सदी की सबसे बडी चुनौती, नीत्शे अब एक कोरी स्लेट में बदल चुका था।

उसे एक पागल खाने मे भरती कर दिया गया। थोडे दिन बाद उसे उसके परिवार वाले, सैक्सोनी के उसी पुराने इलाके मे ले आए। ग्यारह बरस वह एक कोरी स्लेट की तरह बोधहीन, विक्षिप्त जीता रहा।

कुछ लोगो का खयाल है कि वह पुराने रोग सिफलिस के कारण ही पागल हुआ और यह रोग उसे वेश्यालय मे नही मिला था, बल्कि उन दिनों मिला था, जिन दिनो वह फ्रांस और प्रशा की लड़ाई में नर्स का काम कर रहा था। अगर वह वहा मिला था, तो बहुत कीमती था कि भले ही ग्यारह बरस के लिए नीत्शे का दिमाग खा गया; लेकिन उससे पहले वह कुछ दे गया, जो आदमी को आदमी से कुछ ज्यादा बनाता है!

ज़रथुष्ट्र ने कहा

प्रवेशक

तीस वरस की उम्र में जरथुष्ट्र पहाड़ों पर चला गया। उसने घर छोड़ दिया। वहां उसने दस वरस तक अपने अकेलेपन को सुख में जिया। आखिर एक गुलाबी सुबह उसने अपने-आप को बदला हुआ पाया। तब उसने सूर्य को संबोधित किया :

ओ महान् सितारे! सोचो तो जरा अगर यह संसार न हो तो तुम किसे रोशन करोगे? क्या तब भी तुम इतने ही खुश होगे?

मेरे अन्दर के गिद्ध और मेरे मन के सांप के लिए नहीं, तो फिर तुम किसलिए दस वरस मेरी इस गुफा में हर रोज बिना थके झांक जाते थे?

मैं अब अपने बोझ को ढोता-ढोता थक गया हूं। जैसे तुम हर शाम अंधेरे में खो जाते हो, उसी तरह अब मैं भी अतल में समा जाना चाहता हूं; लेकिन कहां?

ओ निस्संग दृष्टि! मुझे दुआ दो कि यह प्याला छलकने से पहले एक चमक दे जाए। दुआ दो, क्योंकि यह प्याला अब छलक रहा है और जरथुष्ट्र फिर आदमी बन रहा है!

२

जरथुष्ट्र पहाड़ से उतर आया। जंगल में उसे एक बूढ़ा मिला, जो भूखा था। बूढ़े ने जरथुष्ट्र से कहा :

यह वही जरथुष्ट्र है, जो कई बरस पहले इधर से गुजरा था। अब वह बदल गया है।

अब तू जाग गया है। यहां इन सोए हुए लोगों के बीच तू क्या करेगा ?

जरथुष्ट्र ने कहा :

मुझे आदमी से प्यार है। मैं आदमी के लिए एक भेंट लाया हूं।

बूढ़े ने कहा :

आदमी भिखारी है। उसे भीख दो और भीख मांगने दो।

जरथुष्ट्र ने कहा :

नहीं ! यह मुझसे नहीं होगा।

बूढ़ा जरथुष्ट्र की बात पर हंसा और बोला :

आदमी को भूल जाओ। उससे बेहतर तो जानवरों में मिलो।

जरथुष्ट्र बच्चों की तरह हंसने लगा। बूढ़ा भी उसी तरह हंसा और एक ओर चला गया। जरथुष्ट्र अब फिर अकेला था। उसने सोचा :

क्या इस बूढ़े को नहीं मालूम कि ईश्वर मर चुका है ?

३

तब जरथुष्ट्र एक शहर में पहुंचा। बाजार में चहल-पहल थी और लोग एक नट का इन्तजार कर रहे थे। जरथुष्ट्र ने उनसे कहा :

मैं तुम्हें महामानव के बारे में बताऊंगा। मुझे बताओ आदमी में कुछ ज्यादा बनने के लिए तुमने क्या किया ? जैसे तुम एक बन्दर देखकर हंसते हो, महामानव तुम पर हंसेगा। आओ, मैं तुम्हें महा-मानव बनना सिखाऊं।

क्या तुम्हारी आत्मा गन्दी और गरीब नहीं है ? महामानव समुद्र होना है, मानव एक गन्दा नाला। तुम्हें समुद्र बनना होगा, जिसमें अपनी तमाम सड़न और गन्दगी के साथ छोटी-छोटी धाराएं समा जाती हैं।

जिसे तुम अच्छा या बुरा कहते हो, वह तुम्हारी कमजोरी है।

ज़रथुष्ट्र की बात सुनकर लोगों ने कहा :

हमने नट की बातें तो काफी सुन ली। अब हम उसका तमाशा भी देखना चाहते हैं। ओ नट ! रस्सी पर नाचो।

लोग ज़रथुष्ट्र पर हंस रहे थे और नट ने समझा वह बात उसके लिए कही गई है। इसलिए वह रस्सी पर नाचने लगा।

४

ज़रथुष्ट्र ने लोगों की तरफ आश्चर्य से देखा और कहा :

महामानव और पशु के बीच तनी हुई यह रस्सी ही है मानव ! इस रस्सी पर यात्रा ख़तरनाक होती है।

मानव तब बड़ा कहा जायेगा, जब वह एक पुल बने, मंजिल नहीं। मानव में वही प्यार करने लायक है, जो उसे नीचे नहीं, ऊपर ले जाता है।

मैं उसे प्यार करता हूं, जो अपनी मर्यादा खुद बनाता है और जो मर्यादाओं से लिपटता नहीं।

मैं उसे प्यार करता हूं, जो अपना ईश्वर स्वयं बनाता है।

मैं उसे प्यार करता हूं, जिसका अन्तर्मन मुक्त है और जिसकी समझ उसकी संवेदनाओं का प्याला है

देखो, मैं विद्युत् की चमक हूं। बादलों से गिरती एक भारी बूंद हूं और विद्युत् है स्वयं महामानव।

५

यह कहकर ज़रथुष्ट्र ने फिर लोगों की तरफ देखा। वे चुप थे। ज़रथुष्ट्र ने सोचा कि वे उसकी बात समझ नहीं सके। वह उन लोगों के कान नहीं बन पाया।

· क्या पहले उनके कान बहरे कर दिए जायें, ताकि वे आंखों से सुनना सीखें ?

आखिर लोग किस पर अभिमान कर रहे हैं ? क्या है उनके पास ? शायद वे अपने को छोटा कहा जाना पसन्द नही करते। तब जरथुष्ट्र ने उनसे फिर कहा :

> अब वक्त आ गया है कि आदमी अपनी मंजिल पहचाने। वक़्त आ गया है कि वह अपनी सबसे ऊंची आशा का बीज बोए। अभी उसकी जमीन काफ़ी उपजाऊ है।
>
> सुनो, तुम आज भी अंधेरे में दिशाहीन भटक रहे हो। अफ़सोस है कि वह वक्त आने वाला है, जब आदमी दुबारा किसी सितारे को जन्म देने लायक नही रहेगा।

आख़िरी आदमी आंख मारकर कह रहा है :

> हमने खुशिया बटोर ली।

यही मूर्ख है, जो बराबर भटकता हुआ पत्थरों से ठोकरें खा रहा है या आदमी से। थोड़ा-थोड़ा जहर खाता हुआ। कितना खुश है, अपने खुशियों-भरे सपनों मे ! अन्तिम जहर उसे कितनी आरामदेह मौत देगा !

आखिरी आदमी आंख मारकर कह रहा है :

> हमने खुशिया बटोर ली।

जरथुष्ट्र के उपदेशो का यह प्रवेशक यही समाप्त हो जाता है क्योंकि चीखती हुई भीड ने उसे टोक दिया।

६

फिर अचानक कुछ ऐसा हो गया कि हर मुंह खामोश हो गया और हर आख उसकी ओर उठ गई। रस्सी पर नाचते हुए नट ने अपना खेल शुरू कर दिया था। रस्सी एक मीनार से दूसरी मीनार तक तनी हुई थी। अभी वह आधी दूर ही था कि एक दरवाजा खुला और भद्दी पोशाक वाला एक आदमी निकलकर उसे गालिया देने लगा।

तभी वहा एक बहुत बडा हादसा हो गया। लोग चीख़ पड़े। सिर्फ़ एक आखिरी कदम रखने से पहले नट का पैर रस्सी से फिसल गया। लोगों की भीड़ नीचे से भाग पडी।

क्षत-विक्षत नट के पास जरथुष्ट्र अकेला घुटनों के बल बैठा था। थोड़े से होश में आकर नट ने कहा : मुझे पहले ही मालूम था कि शैतान मुझे धोखा देगा। उसने कहा था कि वह मुझे ऊपर ले जाएगा और अब वह मुझे नरक की ओर ले जा रहा है। क्या तुम उसे रोक सकते हो ?

जरथुष्ट्र ने कहा :

शैतान और नरक कहीं नहीं हैं। तुम्हारे शरीर के साथ ही तुम्हारे प्राण भी मर जायेंगे। डरते क्यों हो ?

मरते हुए उसने जरथुष्ट्र का हाथ आभार से थाम लिया।

७

जरथुष्ट्र ने उसकी लाश कंधे पर लाद ली। वह सोच रहा था कि यह उसकी पहली उपलब्धि है। तभी कोई उसके कान में फुसफुसाया :

इस शहर से चले जाओ जरथुष्ट्र! यहां लोग तुमसे नफरत करते हैं। लोग नीतिवान हैं। बेहतर है, तुम चले जाओ, वरना मैं ही तुम्हें मार दूंगा!

यह वही भद्दी पोशाकवाला आदमी था, जो अपनी बात कहकर गायब हो चुका था।

शहर के फाटक पर उसे कुछ क़ब्र खोदनेवाले मिले। उसे पहचान कर वे बोले :

अच्छा हुआ जरथुष्ट्र क़ब्र खोदने वाला बन गया।

जरथुष्ट्र ने कोई जवाब नहीं दिया। जब वह दूर निकल गया, तो उसने सुना—भूखे भेड़िए चीख रहे हैं। जरथुष्ट्र ख़ुद भी भूखा था। एक दरवाजे को खटखटाने पर एक बूढ़ा बाहर आया। जरथुष्ट्र बोला :

मैं भूखा हूं और मेरे साथ एक लाश है।

बूढ़े ने उसे रोटी और शराब दी और कहा :

इस लाश को भी खिलाओ।

जरथुष्ट्र ने कहा :
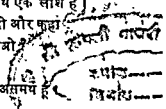
मैं इसे खिला सकने में असमर्थ हूं।

इसके बाद जरथुष्ट्र लाश लादकर चार घंटे और चला। तब उसने लाश को जंगली जानवरों से बचाने के लिए एक दरख्त पर रख दिया और खुद नीचे सो गया।

८

सुबह वह जागा तो उसे एक नया सत्य मिल गया था। उसने अपने-आप से कहा :

मुझे रोशनी मिल गई है। अब मुर्दा लाश नहीं जीवित साथी चाहिए।

अगर भेड़ों के उस झुण्ड से कुछ लोग मैं अपने साथ लूंगा तो लोग कहेंगे, जरथुष्ट्र डाकू है, भेड़ें ले गया।

कैसा अजीब है कि वे उसके दुश्मन हो जाते हैं, जो उनकी नैतिक मर्यादाओं का खोल तोड़ दे।

अब मुझे साथी चाहिए। जमीन तैयार है। वह मेरे साथ खेती करेगा।

ओ लाश! अब मैं तुम्हें यहीं छोड़ता हूं और अपनी मंजिल की तरफ यात्रा शुरू करता हूं।

जरा देखो! वे नफरत किससे कर रहे हैं? उससे जो उनके मूल्य तोड़ता है। वे नहीं जानते कि वह तोड़ने वाला ही सही निर्माण करने वाला है—स्रष्टा है।

अब दोपहर हो गई थी। उसने देखा—ऊपर एक पक्षी बोल रहा था। एक चील उड़ रही थी, जिसकी चोंच में सांप लटका हुआ था। सांप, किसी शिकार की तरह नहीं, दोस्त की तरह। जरथुष्ट्र अब अपने बोध के साथ नीचे आ रहा था।

ज़रथुष्ट्र ने कहा

पहला खण्ड

१. तीन कायाकल्प

मैं तुम्हें आत्मा के तीन कायाकल्प देता हूं : कैसे आत्मा एक ऊंट बन जाती है, ऊंट से शेर और शेर से एक शिशु बनती है।

भारी किसे कहते हैं ?—बोझ ढोती हुई आत्मा पूछती है और ऊंट की तरह घुटनों पर झुक जाती है।

उत्तर मिलता है—बोझ यही है कि समझदारी दिखाने के लिए अपनी कमजोरियों पर हंसो।

यही बोझ है, जिसे लादे हुए आत्मा किसी ऊंट की तरह वीराने में चलती चली जाती है।

वीराने में एक और कायाकल्प होता है—आत्मा शेर बन जाती है। वह मुक्त होती है और वीराने पर शासन करती है। आत्मा यहां ईश्वर नाम के जन्तु को बड़ा मानने से इनकार कर देती है। ईश्वर कहता है—तुम्हें करना चाहिए। शेर कहता है—मैं नहीं करूंगा!

तमाम मूल्य और मर्यादाएं उसके लिए अप्रासंगिक होती हैं। नई मर्यादाएं रचना उस शेर का काम होता है।

लेकिन वह शेर एक शिशु में क्यों बदल जाता है? क्योंकि वही एक नई शुरुआत। वही आत्म-सन्तरण है। वही क्षण अपने-आप को गति देता है। वह अपनी इच्छाशक्ति का एक नया नियन्ता होता है।

२. मूल्यों की शास्त्रीय कुर्सियां

लोगों ने जरथुष्ट्र की इसलिए तारीफ की कि वह समझता था और नींद और मर्यादा, दोनों के बारे में बता सकता था। युवा लोग उसके सम्मान में उसकी कुर्सी के सामने आ बैठे थे। जरथुष्ट्र ने उनसे कहा :

नींद के सामने तुम्हें विनयशील होना होगा। उन लोगों में मत

शामिल हो, जो रात को जागते हैं और नींद खराब करते हैं।

विनय तो उस चोर में है, जो रात में बिना आहट चोरी करता है। वह उद्दण्ड है, जो पहरेदार है और जो रात को बार-बार 'जागते रहो' की आवाजें लगाता है।

सोना मामूली कला नहीं है, क्योंकि इसके बाद आप दिन-भर जाग सकते हैं और इससे भी जरूरी यह है कि मर्यादा वाला आदमी अपनी मर्यादाओं को सोने की मोहलत दे।

शक्ति हमेशा टेढ़े-मेढ़े कदमों से चलती है।

यह कहकर जरथुष्ट्र ने सोचा : सुखी वही है, जो समझ के आमने-सामने होता है। मेरी इस शास्त्रीय कुर्सी में एक जादू पैदा हो गया है। मेरा काम है कि मैं जागने की वह समझ पैदा करूं, जो अच्छी नींद ला सके। अब मुझे पता लग गया कि लोग दरअसल नैतिक आदमी की तलाश इसलिए करते थे कि वे अच्छी तरह सो सकें और तब उन्हें नशीली मर्यादाएं स्वीकार करनी होती थीं।

३. पिछली दुनिया के आदमी

एक बार पिछली दुनिया के आदमियों की तरह जरथुष्ट्र ने भी आदमी से परे देखने में रुचि लेनी शुरू की। उस वक्त उसे दुनिया एक पीड़ित और संत्रस्त ईश्वर की रचना महसूस हुई। रचनात्मक दृष्टि से ईश्वर का यह रंगीन धुएं वाला सपना, जिसमें अच्छा भी था, बुरा भी, खुशियां भी थीं, गम भी, जरथुष्ट्र ने देखा और कहा :

यंत्रणा झेलने वाले के लिए इससे ज्यादा नशीली खुशी और क्या हो सकती है कि अपनी यातना की ओर से आंखें बन्द कर ले और अपने-आप को भूल जाये।

यह दुनिया अपने असमर्थ स्रष्टा से कितनी खुश है, जबकि यह दुनिया इस छोर से उस छोर तक अपूर्ण और अशुद्ध है। इसमें विरोधाभास है और यह अधूरेपन की कहानी है।

दोस्तो, मैं कहता हूं, जिस ईश्वर को मैंने रचा था, वह एक

मानवीय रचना-भर ही था और मानव के पागलपन से अधिक कुछ बन नहीं पाया था।

और सुनो, अब मैं पिछली दुनिया के आदमियों से कहता हूं—मैं अपने-आप से आगे निकल गया हूं। मैं जो यातना में जीता था, उसे पीछे छोड आया हूं और अपनी राख लेकर पहाड़ पर पहुंच गया हूं।

वह भोगी जाने वाली यातना और नपुंसकता ही थी, जिससे पिछली दुनिया बनी थी।

बीमार और धीरे-धीरे मरते हुए लोग अन्धों की तरह एक रास्ता चुनने के बाद उस पर चलते रहे है। इन्ही लोगो ने तो धरती छोडकर स्वर्ग का चुनाव किया था।

ज़रथुष्ट्र इस बीमार सभ्यता के प्रति सदय हो उठता है। वह जानता है कि धरती पर जीने वाले कृतघ्न लोग स्वर्ग की कामना करते हैं, पर वह उनसे नाराज़ नही होता। वह चाहता है कि वे अपने से कुछ ऊपर उठें। ज़रथुष्ट्र ने कहा :

इन्ही बीमार लोगों ने ईश्वर की कामना की है और इतने-भर से ही खुश है। उनके लिए सन्देह करना पाप करना है। वे चाहते हैं कि उनका यह विश्वास सभी ओढ़ें।

उनके लिए उनका शरीर घृणित है और उससे मुक्ति की वे तलाश करते हैं। इसीलिए वे उनकी सुनते हैं, जो पिछली दुनिया के उपदेशक हैं।

दोस्तो, उस स्वस्थ शरीर की बात सुनो, जो दृढ़ निश्चयी है और जिसकी आवाज़ शुद्ध है।

४. शरीर से नफ़रत करने वाले

ज़रथुष्ट्र ने सोचा कि मैं उन्हें सम्बोधित करूंगा, जो अपने शरीर से नफरत करते हैं। मैं न तो उन्हें कोई नई बात बताना चाहता हूं और न ही कुछ नया सिखाऊंगा। मैं चाहता हूं कि वे अपने शरीर को अलविदा कह दें और मौन हो जायें। ज़रथुष्ट्र ने कहा :

बच्चे ने कहा—मैं शरीर भी हूं और आत्मा भी, फिर वे जो शरीर और आत्मा वाले हैं, बच्चों की भाषा क्यों नही बोलते?
जो प्रबुद्ध है, वह कहता है—मैं सर्वांग शरीर ही हूं और आत्मा उसे मानना चाहिए, जो इसके अन्दर है।

जिसे इन्द्रियां जानती हैं और प्राण पहचानते हैं, वह स्वयंसिद्ध सत्य नही है। इन्द्रियों और प्राण का रिश्ता एक बाजे और बजाने की प्रक्रिया का रिश्ता है। इन दोनों के पीछे है स्वयं आत्मा।

आत्मा हमारी चेतना से कहती है—यह कष्ट है। इसे महसूस करो और हम यातना महसूस करने लगते हैं। वह कहती है—यह सुख है और हमे वही सुख लगने लगता है।

स्रष्टा आत्मा ने अपने लिए घृणा और प्यार को जन्म दिया और उसी ने सुख और दुख रच लिए। हा, यह अपने से परे कुछ नही रच सकता, इसीलिए वह ऐसी स्थिति की कामना करता है, जिसमें वह अपने से परे कुछ रच सके।

५. खुशियां और आकर्षण

ज़रथुष्ट्र ने कहा :

मेरे दोस्त, अगर तुम्हारे पास कोई मर्यादा है और वह तुम्हारी अपनी मर्यादा है, तो उसे सबसे अलग होना चाहिए। सबकी जैसी नही।

याद रखो, उस मर्यादा को न तो गाली देना, न गले लगाना। न उसे ताड़ना देना, न उससे खुश होना।

लेकिन जरा ध्यान से देखो, अब जिसे तुम अपनी मर्यादा कहते हो, वही भीड़ की मर्यादा भी है और इसीलिए सहसा तुम भेड़ों के हुजूम मे से एक लगने लगे हो।

मैं कहता हूं—अपनी मर्यादा इतनी ऊंची बनाओ कि वह दूसरो से अलग हो। तुम्हारी अपनी हो। ईश्वर की नैतिकता और आदमी के कानून की तरह वह सबकी नही, तुम्हारी अपनी हो।

एक बार तुम्हारे अंदर कामना जागी और तुमने कहा, यह पाप

है; लेकिन तुम्हारी मर्यादा आखिर आई कहां से ? इसी कामना से ही तो ! तुम्हारी कामनाएं ही अन्त में तुम्हारी मर्यादाएं बनती है।

६. भयभीत मुजरिम

समाज के नियन्ता और बलि देने वाले अकसर जानवर को उसका सिर झुकवाने के लिए मार डालते हैं। डरा हुआ अपराधी सिर झुका रहा है और उसकी आंखों में नफ़रत बोल रही है। ज़रथुष्ट्र ने कहा :

इस तरह जो यातना झेल रहा है, उसके लिए मुक्ति नही। ओ, बलि देने वालो, उसकी हत्या, तुम्हारा बदला नहीं, दया होगी। उसे एक झटके से मर जाने दो।

तुम उसे असमर्थ नही, बुरा मानते हो। मूर्ख नही, पापी कहते हो। अगर तुम सच बोलो, तो लोग चीखकर कहेंगे—दूर हो जा नारकीय कीड़े !

याद रखो, विचार एक चीज़ है—कर्म दूसरी चीज और तीसरी चीज है, कर्म की धारणा। इन तीनों मे कार्य-कारण का रिश्ता नही होता।

इस डरे हुए आदमी का डर उसकी यह धारणा ही है। कुछ करते वक्त वह ठीक-ठाक था। बस, उसी वक्त उसके लिए यह सब असह्य हो गया, जब अपने किए की धारणा उसके दिमाग मे आ गई।

सच कहूं—जो कुछ अपवाद था, वही उसके लिए नियम बन गया। जैसे—मुर्गी खड़िया की लकीर से डर जाती है, उसी तरह उसकी कमज़ोर बुद्धि अपने किए पर डर गई।

न्यायाधीश कहता है कि हत्यारा लूटना चाहता था। यह ग़लत बात है। हत्यारे की आत्मा हत्या करना चाहती थी, लूट नही। वह छुरे से मिलने वाली खुशी के लिए तड़प रहा था।

लेकिन उसकी कमजोर समझ में यह बैठ गया, खून तो इसीलिए हुआ कि उसके पीछे लूट या बदले की धारणा थी। यह तर्क उस भयभीत आदमी के दिमाग मे बैठ जाता है। इसीलिए वह हत्या के बाद लूट लेता है। यह आदमी क्या है ? बीमारियों का एक ढेर।

७. पढ़ना और लिखना

जरथुष्ट्र अपने-आप को हरहराकर बहती धारा के किनारे बनी वह दीवार मानता है, जिसे जो पकड़ना चाहे, पकड़ ले। हां, वह किसी की बैसाखी नही बन सकता। जरथुष्ट्र ने कहा :

अब तक जो कुछ भी लिखा गया है, उसमें से मैं सिर्फ उसे ही प्यार करता हूं, जो रक्त से लिखा गया है, क्योंकि रक्त से लिखे हुए में ही आत्मा की तलाश की जा सकती है। हर आदमी को पढ़ने की छूट है इसका नतीजा यह है कि आगे चलकर लिखना और सोचना दोनों बरबाद होंगे, जो रक्त से लिखता है, उसकी बात पढ़ी नही, दिल में उतारी जाती है।

अब मुझमे और तुममे कुछ भी एक जैसा नही रहा। अपने नीचे जो मुझे बादल और अंधेरा दीख रहा है, वह तुम्हारा है। तुम ऊपर देखते हो, क्योंकि तुम ऊंचे उठना चाहते हो और मैं नीचे देख रहा हूं, क्योंकि मैं ऊपर उठ चुका हूं।

हम जिन्दगी से इसलिए नही प्यार करते कि हम जिन्दा रहना चाहते हैं, बल्कि इसलिए प्यार करते हैं कि प्यार करना चाहते हैं। प्यार मे पागलपन होता है; लेकिन पागलपन में एक तर्क, एक सिल-सिला रहता है।

मैंने चलना सीखा और मैं दौड़ने लगा। मैंने उड़ना सीखा। तब से किसी एक जगह से आगे जाने के लिए अब मुझे धक्के की जरूरत नही रही।

अब मैं रोशनी हूं और उड़ सकता हूं और अपने नीचे अपने-आप को देख सकता हूं। अब ईश्वर मुझमें थिरक रहा है।

८. पहाड़ी पर दरख्त

जरथुष्ट्र ने देखा कि एक युवक उससे कतराता है। एक शाम जब वह ... पर घूम रहा था, उसने उसी युवक को एक दरख्त के नीचे बैठे

खा। वह थकी आंखों से घाटी में झांक रहा था। जरथुष्ट्र उस दरख्त के करीब बैठ गया और बोला :

अगर मैं इस दरख्त को अपने हाथ से हिलाना चाहूं, तो हिला नहीं सकूंगा; लेकिन हवा, जो दिखाई नही देती, इसे हिला देती है, झुका देती है। अदृश्य हाथ ही हमे कष्ट देते है और झुकाते हैं।

युवक, असम्पृक्त-सा उठा और बोला :

अभी मैं जरथुष्ट्र के बारे में सोच रहा था और अब उसी की आवाज सुनाई दे रही है।

जरथुष्ट्र ने कहा :

डरो मत। आदमी के साथ भी वही होता है, जो दरख्त के साथ। वह जितना ज्यादा ऊंचाई और रोशनी की ओर बढ़ता है, उतनी ही ज्यादा गहरी जमीन में उसकी जड़ें धंसती जाती हैं—नीचे, अंधेरी खाइयों में, पाप में।

युवक चीखा :

हां, पाप मे! तुम ठीक कहते हो। जब से मैं ऊंचाई पर आने लगा हूं, लोगों ने मुझपर विश्वास करना छोड़ दिया। मेरा वर्तमान मेरे अतीत को अस्वीकार करता है। ऊंचा उठने की आकांक्षा के साथ ही मेरा दर्द भी बढ़ता है।

युवक चुप हो गया। जरथुष्ट्र उस दरख्त के करीब खड़ा हुआ सोचता रहा, फिर बोला :

यह दरख्त यहा हर इन्सान और दरिन्दे से ऊपर उठकर अकेला खड़ा है। अब इसे किसका इन्तजार है? शायद इसे बादलों से बिजली गिरने का इन्तजार है।

युवक बेचैन होकर बोला :

जरथुष्ट्र, तुम ठीक कहते हो। मुझे मृत्यु का इन्तजार है और बादलों से गिरने वाली वह बिजली तुम हो।

युवक रो पड़ा। जरथुष्ट्र ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर उसे अपने साथ ले लिया। साथ चलते हुए वह बोला :

तुम मुक्ति चाहते हो। उसी की छटपटाहट महसूस कर रहे हो।

प्यार और आशा कभी मत छोड़ो। नया आदमी, नई मर्यादाएं बनाएगा। पुरानी मर्यादाओं को पुराने आदमी के साथ तहखानों में रख दो। मैं प्यार और आशा से तुम्हारा अभिषेक करता हूं। ये पहाड़ तुम्हारी सबसे बड़ी आशा का प्रतीक होगा।

९. मृत्यु के प्रचारक

कुछ लोग मृत्यु का प्रचार करते हैं और दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो जीवन से दूरी बतानेवाले उपदेश सुनना चाहते है। इन प्रचारकों के दो रंग हैं। एक पीला और दूसरा नीला; लेकिन ज़रथुस्ट्र दूसरे रंग भी जानता है। ज़रथुस्ट्र ने कहा :

कुछ लोग ऐसे भयानक होते हैं कि वे अपने अन्दर एक पशु पाले रखते हैं और उससे अपने-आप को लहूलुहान कराते रहते हैं। वे आदमी नहीं बन सकते। वे ज़िन्दगी से फ़ासले के बारे में भला क्या बता सकते हैं ?

कुछ ऐसे आध्यात्मिक भुक्खड़ होते हैं, जो पैदा होने के साथ ही मरना शुरू कर देते हैं। एक मरा हुआ या बीमार आदमी देखकर ही वे कह बैठते हैं, ज़िन्दगी असार है।

कुछ कहते हैं—जीवन एक यातना है। इसीलिए वे जीवन समाप्त करना चाहते हैं और यही असली यातना पैदा करता है।

कुछ कहते हैं—वासना पाप है। बच्चे मत पैदा करो। कुछ तो किसी को जन्म देना ही गुनाह मानते हैं। हर जगह मृत्यु के प्रचारकों की आवाज़ सुनाई देती है और हर कहीं मिल जाते हैं वे, जिन्हें इस आवाज़ की ज़रूरत है।

१० युद्ध और योद्धा

ज़रथुस्ट्र ने कहा :

मेरे सैनिक दोस्तो, मुझे तुमसे प्यार है, क्योंकि मैं तुम्हारा पूरक हूं।

मैं तुम्हारा सबसे अच्छा शत्रु भी हूं।

तुम इतने महान् नहीं हो कि घृणा और ईर्ष्या को न पहचान सको; लेकिन फिर तुम इतने बड़े ज़रूर बन जाओ कि इस अज्ञान के लिए शर्मिन्दगी महसूस न करो।

तुम शान्ति को युद्ध के एक साधन की तरह पसन्द करते हो। लम्बी शान्ति की तुलना में तुम्हें अस्थायी शान्ति से ज्यादा प्यार है। तुम्हें बताऊं, अच्छाई क्या है? अच्छाई है, साहस। तुम्हें लोग निर्दय कहते हैं। मैं मानता हूं, तुम यह हो, क्योंकि तुम्हारा दिल साफ़ है।

११. नयी मूर्ति

जरथुष्ट्र जानता है कि कहीं लोग हैं, भीड़ है; लेकिन वह हमारे साथ नहीं है। यहां शासनतन्त्र है। शासनतन्त्र क्या है आखिर?

जरथुष्ट्र कहता है :

सभी सर्द खून वाले दैत्यों में शासन सबसे सर्द खून वाला होता है। वह बड़े सर्द लहजे में बोलता है। उसका सर्द झूठ उसके जबड़ों से फिसलकर बाहर आता है, मैं शासन हूं, मैं ही जनता हूं।

यह झूठ है। वे स्रष्टा थे, जिन्होंने लोग बनाए और उन पर विश्वास और प्यार लटका दिए।

वे विध्वंसक हैं, जिन्होंने लोगों के लिए एक जाल फैलाया और उसे नाम दिया, शासन।

जहां आज भी लोग हैं और जहां शासन को सही-सही समझा जाता है, वहां लोग शासन को घृणित मानते हैं।

अच्छे और बुरे हर शब्द के माध्यम से शासन झूठ बोलता है और यही इसकी पहचान है। शासन अपने को ईश्वर की इच्छा मानता है।

इस नयी मूर्ति को पूजने पर तुम्हें सब कुछ मिलेगा। एक नारकीय धूर्तता के साथ शासन तुम्हें लोभ दिखाता है।

उनकी इस मूर्ति से बदबू आती है। इस बदबू से बचो! मानव की निरन्तर बलि के इस इतिहास में शामिल मत होओ।

शासन के समाप्त होने के बाद ही ऐसा मानव जन्म ले सकता है, जो निरर्थक न हो !

१२. कौमार्य का ब्रह्मचर्य

जरथुष्ट्र नगरों की तुलना में जंगल इसलिए पसन्द करता है कि जंगलों में लोग अपनी लोलुपताएं नहीं पालते। जंगल मे खड़े होकर जरथुष्ट्र ने कहा :

क्या किसी हत्यारे के हाथ पड़ जाने से यह अच्छा नहीं कि मैं किसी वासनादग्ध औरत के सपनों मे उलझा रहूं ?

जरा इन आदमियों की आखें देखो, जो कह रही हैं कि वे औरत के सामने झूठ बोलने से बेहतर काम अभी तक नहीं खोज पाए। उनकी आत्मा की तली में गन्दगी और सड़न पल रही है। अफ़सोस है कि उस सड़न को भी वे जी नहीं सकते।

मैं नहीं कहता कि अपनी संवेदनाओं की हत्या कर दो। मैं चाहता हूं, तुम उनमें मासूमियत पैदा करो।

मैं नहीं कहता कि तुम उस ब्रह्मचर्य का पालन करो, जो कुछ लोगों के लिए मर्यादा है; लेकिन वास्तव मे वह गुनाह है। वासना के कुत्ते को गोश्त न मिले, तो वह आत्मज्ञान के एक कण के लिए रिरियाता है।

तुम्हारी आखों में निर्ममता है और तुम्हारी वासना ही है, जिसे तुम समझते हो कि तुम लोगों के साथ दुख के भागी होने जा रहे हो।

जिनके लिए ब्रह्मचर्य मुश्किल है, उन्हें यह छोड़ देना चाहिए।

१३. दोस्त

जरथुष्ट्र ने कहा :

मैं हमेशा अपने-आप से बातचीत करता रहता हूं। अगर कोई दोस्त न हो, तो जीना मुश्किल हो जायेगा।

तपस्वी कहता है कि उसके आसपास एक की उपस्थिति भी भीड़ की उपस्थिति है।

सच यह है कि तपस्वी का 'दोस्त' हमेशा तीसरा आदमी होता है—वह तीसरा, जो दो के बीच दीवार बना रहता है।

अपने दोस्त की तरफ़ देखो, वह तुम्हारा आईना है। तुम्हीं हो वहां।

अपने उस दोस्त को देखकर तुम निराश हुए? तो फिर समझ जाओ कि तुम्हें अपनी मानवीय सीमाएं लांघनी हैं।

१४. एक हज़ार एक मंजिलें

ज़रथुस्त्र देश-विदेश घूमा। तरह-तरह के लोग उसने देखे। इस तरह उसने लोगों की अच्छाइयों और बुराइयों के बारे में जाना और वह समझ गया कि दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति अच्छाई और बुराई है।

लोग इस पैमाने के बिना ज़िंदा नहीं रह सकते। उन्हें लगता है कि वे अच्छाई की तरफ हैं और उनका पड़ोसी हमेशा बुराई की तरफ। एक आदमी की अच्छाई दूसरे को बुराई महसूस होती है।

कभी किसी ने अपने पड़ोसी को समझने का कष्ट नहीं उठाया। हर आदमी के सिर पर महानता की कलंगी लगी होती है।

यह अच्छा है कि लोग जिसे मुश्किल मानते हैं और जिसके बिना उनका काम नहीं चलता, उसे वे अच्छा मान लेते हैं और जो उनकी सबसे बड़ी मुसीबत के वक्त काम आता है, उसे वे पवित्र मानते हैं।

वे उसी को अर्थवान मानते हैं, जिसके ज़रिए वे दिग्विजय कर सकें, सबसे ऊंचे पर चमक सकें और जिससे उनके पड़ोसी जलें।

ज़रथुस्त्र ने कहा :

जो दूसरों की तुलना में शक्तिशाली बनाए और दूसरों पर प्रभुत्व स्थापित करे, वह यूनान के वासी को प्रिय था।

मेरा नाम जिस जाति के लोगों से जुड़ा है, उनका आदर्श था, सच बोलो और तीर-कमान का इस्तेमाल करो।

कुछ लोग मां-बाप की सेवा को ही सब कुछ मानते थे।

कुछ लोग नैतिक चरित्र की रक्षा के लिए जान ले लेते हैं या देने को तैयार रहते हैं।

मजे की बात है कि यह जो अच्छा या बुरा उन्हें लगता है, इसे उन्होंने खुद नही गढ़ा, बल्कि ईश्वर ने उन्हें बना दिया है।

आदमी इसीलिए अपने-आप को आदमी मानता है ताकि वह मूल्यांकन कर सके। वह मूल्यों को देना ही निर्माण करना मानता है।

सुनो, मूल्याकन ही सृजनात्मकता है। सभी मूल्यों में मूल्य स्थापित करने की प्रक्रिया महान् है।

ज़रथुष्ट्र जाने कहां-कहा घूमा, लेकिन उसे अच्छे और बुरे की रचना करने की योग्यता से ज्यादा बड़ी शक्ति कही नही मिली।

१५. रचनाकार का तरीक़ा

ज़रथुष्ट्र ने कहा :

खोजने वाला अपने-आप मे खो जाता है। दूसरो से अलग होने की धारणा ही गलत है। भीड़ यह मानती है और तुम लम्बे अरसे से भीड के ही हिस्से हो।

आज भीड़ ही तुममें बोलती है। जिस दिन तुम कहना चाहोगे कि तुम भीड से अलग हो, उस दिन तुम ज़ख्मी हो जाओगे।

हां, अगर तुम समझते हो कि तुम अकेले अपने-आप मे डूबने में समर्थ हो, तो जरा मुझे अपनी शक्ति देखने दो।

क्या तुम नयी शक्ति और नयी सामर्थ्य हो? क्या तुम स्वयं अपने-आप को गति दे सकते हो? क्या तुम सितारों को अपने ईर्द-गिर्द घूमने को मजबूर कर सकते हो?

अफसोस यही है कि लोगों मे ऊंचे उठने की महत्त्वाकांक्षाएं बहुत ज्यादा हो गई है। लोगों के पेट में श्लाघा की मरोड़ें उठती हैं। क्या तुम भी वही नही हो?

अफसोस यही है कि खयाल बहुत बड़े हैं और उन्हें लेकर

तुम जितना ज्यादा फूलते जाते हो, उतना ही अन्दर से खोखले भी होते जाते हो।

लोगों की इच्छा है कि वे मुक्त हो जायें। हर कोई अपना बोझ पटक देना चाहता है; लेकिन इससे ज़रथुष्ट्र को क्या? ज़रथुष्ट्र ने कहा :

किससे मुक्ति? किसलिए मुक्ति? क्या तुम खुद अपने अच्छे और बुरे के निर्णायक नहीं हो सकते? अपनी इच्छाशक्ति को अपना नियामक नहीं बना सकते?

एक दिन जल्दी ही ऐसा आएगा जब तुम चीखोगे कि तुम अकेले हो। तुम्हारी ऊंचाइयां गायब हो जायेंगी और तुम उस अपने छोटेपन को अपने करीब पाओगे और तब तुम कहोगे—सब कुछ झूठ है।

क्या तुमने मेरी बहन 'घृणा' को देखा है? क्या तुमने उस पीड़ा को पहचाना है, जो तुम अपने से घृणा करने वालों को न्याय देते वक्त महसूस करते हो?

तुम्हें कहना चाहिए—तुम मुझे न्याय क्या दोगे? मैं तो तुम्हारे अन्याय का हिस्सेदार होना चाहता हूं।

वे अकेले आदमी से नफ़रत करते हैं और उस पर गन्दगी उछालते हैं; लेकिन फिर भी तुम उन्हें रोशनी दो, क्योंकि इसी तरह तुम चमक सकते हो।

हां, सरल पवित्रता से बचो और देखो, प्यार तुम पर हावी न हो जाये।

अपने सबसे बड़े दुश्मन तुम खुद हो। घने जंगल में अक्सर तुम अपने-आप को लूट लेते हो। अपनी आग में खुद अपने को जलाने के लिए तैयार रहो। राख होने से पहले तुम नया कुछ बन नहीं सकते।

अकेले तुम उसी रास्ते पर जाओगे, जिस रास्ते स्रष्टा ईश्वर गया था। अपने सात शैतानों को मिलाकर तुम एक ईश्वर गढ़ दोगे।

रचना के लिए उसकी ज़रूरत होती है, जो तुम्हें प्यार करे, क्योंकि वही घृणा करता है, जो घृणा नहीं कर सकता, वह प्यार भी नहीं कर सकता।

मेरे भाई, अपना प्यार लेकर एकान्त में चले जाओ। वहीं तुम

रचना करोगे। तुम्हारे पीछे लंगड़ाता हुआ न्याय देर से आएगा।

मेरे भाई, एकान्त में जाओ तो अपने साथ मेरे आंसू ले जाओ, क्योंकि मैं उसी से प्यार करता हूं, जो अपने से परे कुछ बनाता है और इसी रास्ते मौत की तरफ़ जाता है।

१६. जहरीला सर्पदंश

एक दिन जरथुष्ट्र अंजीर के दरख्त के नीचे धूप से बचने के लिए, बाह अपने चेहरे पर रखकर लेटा था। तभी एक जहरीला सांप वहा आया और उसने उसकी गर्दन पर डस लिया। जरथुष्ट्र दर्द से चीख पड़ा। उसने अपनी बाह आखों पर से हटाकर सांप की तरफ़ देखा। सांप उसे पहचानकर आखें चुराता हुआ छिपने की कोशिश करने लगा। जरथुष्ट्र ने कहा :

नही, जाओ मत। अभी मैंने तुम्हें धन्यवाद कहां दिया? तुमने मुझे ठीक समय पर जगा दिया। अभी तो मुझे बहुत दूर जाना है।

साप ने कहा :

अब तुम्हारी यात्रा छोटी हो गई है। मेरा विष घातक है।

जरथुष्ट्र ने मुस्कराकर कहा :

महासर्प कही साप के जहर से मरता है? यह लो, अपना जहर, मै लौटाता हू। अभी तुम इस लायक नही हो कि मुझे यह भेंट दे सको।

साप दुबारा उसके गर्दन के करीब आया और उसके जख्म को चूसने लगा। जरथुष्ट्र ने जब यह कथा अपने शिष्यों को सुनाई, तो एक शिष्य बोला :

इस कथा से उपदेश क्या निकलता है?

जरथुष्ट्र ने कहा :

जो अपने को अच्छे और नीतिवान् मानते हैं, वे मुझे अनैतिक कहते है। मेरी कथा अनैतिक है।

अपने शत्रु की धूर्तता के बदले उसका उपकार मत करो, वरना उसका हौसला बढ़ जायेगा। तुम अपने व्यवहार से यह साबित कर

दो कि उसने तुम्हारा भला किया है। यही उसको चोट देगा। तुम्हें बद्दुआ मिले, तो ऐसा मत जाहिर करो कि उसके बदले तुम दुआएं देना चाहते हो।

एक बड़ा अन्याय तुमसे हो जाये, तो फौरन पांच छोटे अन्याय भी कर डालो। वह आदमी घिनौना दिखता है, जिसने इकलौता अन्याय किया हो।

छोटों से बदला लेने से तो ज्यादा मानवीय है कि बदला ही न लिया जाय।

मुझे तुम्हारे सर्द न्याय से नफरत है। तुम्हारे न्यायाधीश की आंखों में वध करने वाले आदमी और उसके गंडासे की झलक दिखाई देती है।

तपस्वी एक कुआं होता है। उसमें पत्थर फेंकना आसान है, लेकिन पत्थर डूब जाने के बाद उसे निकालेगा कौन?

तपस्वी को चोट मत पहुंचाओ और अगर पहुंचा दो, तो फिर उसे वहीं मार भी डालो।

१७. शिशु और विवाह

जरथुष्ट्र की इच्छा हुई कि अपने अन्दर घुमड़ते सवाल को वह अपने साथी के सामने रखे। उसने वह सवाल उसकी आत्मा के कुएं मे रस्सी की तरह लटकाते हुए कहा :

तुम जवान हो। शादी करना और बच्चे पैदा करना चाहते हो, लेकिन जरा बताओ तो, क्या तुम इस लायक हो कि सन्तान की कामना करो?

क्या तुमने अपने-आप को जीत लिया है? अपनी मर्यादाओं के स्वामी बन गए हो?

मैं चाहूंगा कि तुम्हारी विजय और तुम्हारी मुक्ति ही सन्तान की कामना करे। वे तुम्हारे बोध और विजय के जीवित स्मारक हों।

मैं विवाह दो व्यक्तियों की उस रचनाशक्ति को मानता हूं, जो

अपने से कुछ महान् का निर्माण करे। इसी उद्देश्य के लिए दो व्यक्तियों के पारस्परिक सम्मान को मैं विवाह मानता हूं।

वे जिसे विवाह कहते हैं, उसके बारे में उनका खयाल है कि वह स्वर्ग में सम्पन्न होता है। मुझे यह फालतूपन पसन्द नहीं। मुझे उन जानवरों से नफ़रत है, जिनके रिश्ते स्वर्ग तय करता है।

देखो, मेरे पीछे ईश्वर लंगड़ाता हुआ आ रहा है और वह उन्हें आशीष देना चाहता है, जिनके रिश्ते उसने तय नहीं किए। ऐसे विवाहों पर हंसो मत, जिनके रिश्ते स्वर्ग में तय हुए थे। भला बेटा भी कहीं अपने मां-बाप की गलती पर हंसता है!

हो सकता है, वह आदमी स्वर्ग में रिश्ते तय कराकर अपने-आप को धरती के लिए सार्थक मानता हो; लेकिन जब मैं उसकी पत्नी की ओर देखता हूं, तो मुझे लगता है, यह दुनिया पागलों से भरी हुई है।

जरूर यह ज़मीन थर्राएगी, अगर वह एक सन्त को किसी बत्तख के साथ मैथुन करते देख ले।

एक आदमी सत्य की तलाश में निकलता है और एक झूठ खोज लाता है, जिसे वह विवाह कहता है।

एक और आदमी विवाह के बारे में खासा संयम बरत रहा था और हमेशा के लिए उसने एक जहमत ओढ़ ली। वह इसे विवाह कहता है।

एक और ऐसी देवी चाहता था, जो सेविका भी हो। अब वह खुद एक औरत की सेवा करता है। यही उसकी शादी है।

१८. चाही हुई मृत्यु

ज़रथुष्ट्र जानता है कि कुछ लोग देर से मरते हैं, कुछ जल्दी, इसीलिए ज़रथुष्ट्र ने कहा :

ठीक वक्त पर मर जाओ।

सच यह है कि जो सही वक्त पर जीता नहीं, वही सही वक्त पर मरता भी नहीं।

हर कोई मृत्यु को एक बड़ी घटना मानता है, फिर भी वह मरना सुखद नही मानता। अभी आदमी ने इस सबसे बड़े पर्व को आनन्द के साथ मानने की आदत नही डाली।

मैं बताता हूं कि कैसे मृत्यु जीतने का एक आश्वासन एक उद्दीपन बन सकती है।

लोगों को मरना सीखना चाहिए, और मृत्यु के स्वागत के साथ ही जीने की कसम उठानी चाहिए।

मृत्यु सबसे अच्छी होती है। उससे कुछ कम अच्छा होता है, युद्ध में मरना।

लड़ाई मे मृत्यु जीते हुए और विजित, दोनों के लिए नफ़रत करने वाली चीज़ होती है। दांत निपोरे हुए मृत्यु चोर की तरह आती है और स्वामी की तरह सिर उठाकर चली जाती है।

मैं उस मृत्यु की कामना करता हूं, जो मेरे चाहने पर आती है। मैं उसी को पसन्द करता हू।

हर ऐसे आदमी की तरह, जिसे मंजिल और उत्तराधिकारी मिल गए हो, मैं भी उन्ही दोनों की प्राप्ति के बाद ठीक वक्त आया जानकर मृत्यु की कामना करता हूं।

मैं रस्सी बनाने वाला आदमी नही हूं, जो उतना ही पीछे होता जाता है, जितनी लम्बी रस्सी वह बनाता जाता है।

जो भी प्रसिद्ध होना चाहता है, उसे चाहिए कि वह एक नयी कला सीखे। यह कला बहुत मुश्किल है, ठीक वक्त पर चले जाने की कला।

सब कुछ भोग चुकने के बाद इसका इन्तजार नही करना चाहिए कि स्वय उसी को कोई भोगना शुरू कर दे।

बहुत-से लोगो के लिए जीवन विष है। उनके अन्तर में एक जहरीला कीड़ा बिलबिलाता रहता है। कम-से-कम उन्हें तो यही कोशिश करनी चाहिए कि मृत्यु अमृत बन जाये। वे जीवन को असफलता मानते है, तो मृत्यु को ही सफलता मे बदल जाने दें।

बहुत-से लोग पकते ही नही। वे गर्मियों मे भी कठोर बने रहते

हैं। इस तरह डाल से चिपके रहना कायरता है। पको और समय से डाल छोड़ दो।

अच्छा हो कि एक झटके से मृत्यु दिलाने वालों की भीड़ यहां आए और उस आंधी में हिलाकर हर दरख्त का फल गिरा जाए; लेकिन यहां तो धीरे-धीरे मरना सिखाने वाले लोग घूमते रहते हैं।

वह यहूदी बहुत जल्दी मर गया, जिसके अनुयायी हैं धीरे-धीरे मरने का उपदेश देने वाले। बहुत-से लोग मानते हैं कि वह बहुत जल्दी मर गया यही कयामत है।

अगर वह अच्छाई और नीति से दूर बीराने में रहा होता, तो शायद जीना भी सीख जाता, धरती को प्यार करना और हंसना भी समझ जाता।

विश्वास करो दोस्तो, अगर वह मेरी उम्र तक जिन्दा रहा होता, तो अपने ही सिद्धान्तों को अस्वीकार कर देता। मगर वह बहुत जल्दी मर गया।

वह अपरिपक्व, कच्चा था। कच्चा आदमी ही युवावस्था को प्यार करता है और बुढापे से पहले मरने की जल्दबाजी करता है।

मैं इस तरह नहीं मरूंगा। लो, मैं अपने लक्ष्य की सुनहरी गेंद तुम्हें सौंपता हूं, तुम इसके उत्तराधिकारी हो।

१६. मूल्यों द्वारा अभिषेक

'रंगीन गाय' नाम के उस शहर से जब जरथुष्ट्र चला, तो उसके साथ बहुत-से शिष्य थे। उस शहर से जरथुष्ट्र को प्यार हो गया था। वे सब लोग आखिर एक चौराहे पर पहुंचे। जरथुष्ट्र ने तब उनसे कहा कि अब वह अकेला जाना चाहता है। उसे अकेले चलना ही पसन्द है। विदा होते समय उसके शिष्यों ने उसे एक डण्डा दिया, जिसकी मूठ पर सूरज के चारों ओर लिपटे एक सांप की सुनहरी आकृति बनी हुई थी। जरथुष्ट्र उसे पाकर बहुत खुश हुआ और उसी के सहारे टिककर शिष्यों से बोला :

तुम लोग बताओ, सोना सबसे कीमती क्यों है? क्योंकि वह

असाधारण है, चमकता है, और अपने-आप को एक सुनहली महिमा से मण्डित रखता है।

सबसे ऊंची मर्यादा का ही प्रतीक है—सोने का सबसे कीमती होना।

सबसे ऊंची मर्यादा भी इसी तरह बहुमूल्य और असाधारण होती है और इसी तरह चमकती है। स्वयं को मूल्य या मर्यादा देना सबसे बड़ा मूल्य होता है।

मेरे मित्र, ज़रा बताओ तो सबसे बुरा हम किसे मानते है? सबसे बुरा हम समझते हैं सड़न को। और जहां अपने-आप को मूल्य देने मे समर्थ आत्मा दिखाई न पडे, वही सड़न मानते हैं।

हम वंश से महावंश की ओर ऊपर उठते हैं। अपने-आप को मूल्य देने की असमर्थता हमे नीचे ले जाती है।

इसी तरह यह शरीर इतिहास का हिस्सा बनता है। इस शरीर के प्राण क्या है? वंश से महावंश की ओर उठाने वाला मूल्य अपने-आप को देना।

यहां ज़रथुस्त्र थोड़ी देर के लिए रुक गया। उसने अपने शिष्यों की ओर प्यार से देखा। उसका स्वर थोड़ा बदल गया। उसने कहा :

मेरे दोस्तो, धरती के प्रति वफ़ादार रहो। अपने मूल्यो द्वारा इस धरती को अर्थ दो। मेरी यही कामना है, यही दुआ है।

ऐसा न हो कि तुम्हारे मूल्य धरती छोड़कर उड़ना शुरू कर दें और अनन्त की दीवारो पर अपने पंख पटकते फिरें। ओफ् ! यहां ये उड़ने वाले मूल्य कितने अधिक हो गए हैं!

मेरी तरह से इन उड़ने वाली मर्यादाओ को धरती पर वापस उतार लो। इनके द्वारा इस दुनिया को एक मानवीय अर्थ दे दो।

हजारों बार इसी तरह मर्यादाएं उड़ने की कोशिश में गलत रास्ते पर जाती रही है। अफ़सोस कि आज भी हममें वही वहम बना हुआ है।

इस भीड़ की समझ या इसका पागलपन अब मुझमें टूट रहा है। याद रखो, इस भीड़ का उत्तराधिकारी होना खतरनाक है।

अपने प्राण और अपनी मर्यादाओं को इस धरती के काम आने दो। हर चीज को तुम खुद नया मूल्य, नया अर्थ दो। तुम्हारा युद्ध भी यही है और तुम्हारी रचना भी यही है।

ओ चिकित्सक, पहले तुम अपने मर्ज का इलाज करो, तभी तुम किसी और के मर्ज का इलाज कर सकोगे। तुम्हारा सबसे बड़ा इलाज यही है कि तुम अपने-आप को पूर्णता दो।

हजारों ऐसे रास्ते हैं, जिन पर कभी कोई नहीं चला। न जाने कितने महाद्वीप और द्वीप बसे हैं, जहां किसी मनुष्य ने पाव नहीं रखा।

जागो और सुनो, ओ अकेले लोगो, भविष्य की ओर से हवाएं आ रही हैं एक छिपा हुआ सन्देश लेकर। सही कानों को ही उनके शब्द प्राप्त होंगे।

ज़रथुष्ट्र यह कहकर फिर रुका। लगा उसने अभी सब कुछ नहीं कहा। बहुत देर तक वह हाथ में उस डण्डे को सन्देह की तरह थामे रहा। उसका स्वर बदला और उसने कहा :

अब मैं अकेला यहां से जाऊंगा और मेरे दोस्तो, तुम भी इसी तरह यहां से अकेले ही जाओगे।

अब मैं तुम्हें हिदायत देता हूं कि मुझसे अलग हो जाओ और ज़रथुष्ट्र को भूल जाओ। उससे तुम मिले, इसके लिए शर्मिन्दा भी हो सकते हो, क्योंकि उसने तुम्हें धोखा दिया।

समझदार आदमी न सिर्फ़ अपने दुश्मन को प्यार करते हैं, बल्कि अपने दोस्त से नफरत भी करते हैं।

तुम मेरा आदर करते हो; लेकिन उस दिन क्या होगा, जिस दिन मेरे प्रति तुम्हारा यह आदर टूट जायगा? मूर्ति के नीचे तुम दब जाओ, इससे पहले ही होशियार हो जाना बेहतर है।

तुम कहते हो कि तुम्हें ज़रथुष्ट्र में विश्वास है; लेकिन ज़रथुष्ट्र की क्या कीमत है? तुम आस्थावान् हो; लेकिन आस्थावान् लोगों की क्या कीमत है?

तुमने अपने को नहीं खोजा था, इसीलिए मुझे पाया था।

यही तो हर आस्थावान् करता है, इसीलिए आस्था का कोई मूल्य नहीं।

अब मैं तुम्हें बताता हूं—मुझे छोड़ो और अपने-आप को पकड़ो। तुम सबके द्वारा तिरस्कृत मैं, तुम्हारे पास लौट आऊंगा।

"देवता मर चुके हैं, अब हम चाहते हैं कि महामानव जिए।" —हमारी अन्तिम वसीयत यही होगी।

ज़रथुष्ट्र ने कहा

दूसरा खण्ड

१. बच्चे के हाथ में आईना

इसके बाद जरथुष्ट्र फिर पहाड़ पर अपनी गुफा में लौट गया हालांकि उसकी आत्मा उन लोगों को देखने के लिए मचल रही थी जिन्हें वह प्यार करता था। वह अभी उन लोगों को और भी बहुत कुछ देना चाहता था।

वह महीनों और बरसों इसी तरह रहा। उसका ज्ञान बढ़ता गया और उसके साथ ही उस ज्ञान को अकेले झेलने का दर्द भी बढ़ता रहा।

आखिर एक सुबह वह जागा तो उसने अपने हृदय से कहा :

मैं सपने में चौंककर इस तरह जाग क्यों गया? क्या सचमुच यहां एक बच्चा आया था जो आईना लिए हुए था? और बच्चे ने कहा था :

ओ जरथुष्ट्र, इस आईने में अपने को देखो।

आईना देखकर मैं चौंक पड़ा, क्योंकि उसमें मेरी नहीं किसी मुस्कराते हुए पिशाच की छाया थी।

इस सपने को मैं समझ रहा हूं। मेरे सिद्धांत खतरे में हैं। मेरे शत्रु बढ़ गए हैं और उन्होंने मेरे सिद्धांतों का रूप बिगाड़ दिया है।

मेरे दोस्त खो गए हैं और मुझे अब उन्हें खोजना चाहिए।

इन शब्दों के साथ जरथुष्ट्र उठ खड़ा हुआ। उसके मन में दर्द नहीं था, बल्कि वह दिव्यता थी, जो किसी दार्शनिक या संगीतकार में होती है। उसके गिद्ध और सांप ने उसकी ओर ताज्जुब से देखा। जरथुष्ट्र ने कहा :

ओ प्राणियो! मुझे क्या हो गया है? क्या मैं बदल नहीं गया

हूं ? क्या अन्धड़ की तरह दिव्य दृष्टि मेरे अन्दर नहीं घुमड़ने लगी लगी है।

मेरी खुशियों ने मुझे घायल कर दिया है। हर यातना सहने वाला मेरा चिकित्सक होगा। मैंने अब बहुत देर इन दूरियों को घूर लिया। अब मैं अपने प्यार के लिए वह रास्ता खोजूंगा, जो दूसरों ने कभी नहीं खोजा।

अब मैं अपने दोस्तों के पास लौटूंगा। वहां मेरे दुश्मन भी होंगे; लेकिन जब मैं सबसे ज्यादा बिगड़ैल घोड़े पर सवार होता हूं, उस वक्त मेरा भाला काम आता है। मेरे इस दुर्दान्त शान से मेरे दोस्त भी चौंक जायेंगे। हो सकता है वे इसे देखकर भागने लगें।

हा, मुझे मालूम है कि तुम्हें बांसुरी बाजा बजाकर कैसे वापस लौटने के लिए फुसलाया जा सकता है। ठीक है—मेरी प्रज्ञा का सिंह थोड़ा आहिस्ता दहाड़ेगा, ताकि वे डरें नहीं।

२. खुशियों के द्वीप पर

पके हुए अंजीर के फल जब दरख्त से गिरते हैं, तो वे मीठे होते हैं। गिरने पर उनका सुर्ख छिलका चटख जाता है। ज़रथुष्ट्र ने यह देखा और कहा :

मैं ही हूं उत्तर की वह हवा, जिससे ये अंजीर पकते हैं।

अंजीर की तरह मेरे ये सिद्धांत तुम्हारे लिए गिरे हैं। दोस्तों, इसकी मधुरता और इसके रस को स्वीकार करो।

कभी जब लोग दूर समुद्र को देखते थे तो उसे ईश्वर कह लेते थे। मैंने तुम्हें सिखाया है कि इसे महामानव कहो।

ईश्वर तुम्हारा अनुमान है, लेकिन मैं नहीं चाहता कि तुम्हारा अनुमान तुम्हारी इच्छाशक्ति से आगे निकल जाय।

क्या तुम ईश्वर को बना सकते हो ? मैं कहूंगा तुम महामानव ज्यादा अच्छी तरह बना सकते हो।

ईश्वर अनुमान है लेकिन मैं चाहूंगा कि तुम उसी हद तक

अनुमान का प्रयोग करो जहां तक उसमें प्रामाणिकता बनी रहे।

ईश्वर ऐसा विचार है जो हर सीधी चीज को टेढ़ी कर देता है। हर खड़ी हुई चीज डगमगाने लगती है।

यह सोचना कि यह पेशियों की थकावट की वजह से होता है, गलत है। अस्वाभाविक चीज का अनुमान ही मितली पैदा करता है और उसी से चक्कर आते हैं।

सृजन पीड़ा से मुक्त कराता है, लेकिन खुद स्रष्टा का जन्म पीड़ा से ही होता है।

ओ रचनाकार, पहले एक कड़वी मौत के बीच से गुजरो।

सारी अनुभूतियां मुझे पीड़ा देती हैं। मुझे सींखचों में क़ैद करती हैं। हां, मेरी इच्छाशक्ति मुझे शांति और मुक्ति देती है।

मेरी इच्छाशक्ति मुझे ईश्वर और देवताओं की दुनिया से बाहर खींचती है। अगर मैं देवताओं की दुनिया में रहा तो रचूंगा क्या ?

३. धर्मगुरु

एक दिन जरथुष्ट्र ने एक ओर इशारा करते हुए अपने शिष्यों से कहा :

ये धर्मगुरु हैं। हालांकि ये मेरे दुश्मन हैं फिर भी इन पर तलवार मत उठाओ।

इन्हीं धर्मगुरुओं में से अनेक ऐसे हैं जिन्होंने बहुत पीड़ाएं सही हैं। इसीलिए अब वे चाहते हैं कि तुम उनके साथ पीड़ा सहो।

वैसे वे खतरनाक दुश्मन हैं। इनकी विनयशीलता के पीछे जिघांसा छिपी हुई है। जो भी इन्हें छुएगा, गन्दा हो जायेगा।

हां, मेरा-उनका रक्त का रिश्ता है। मैं भरसक उनके अन्दर अपने रक्त को आदर पाते देखना चाहता हूं।

धर्मगुरुओं के उधर से गुजर जाने के बाद जरथुष्ट्र के मन में पीड़ा की कचोट उठी। अपने दर्द से जूझते हुए उसने कहा :

उन धर्मगुरुओं के लिए मेरे मन में दया है, चूंकि मैं उनमें शामिल नहीं हूं इसीलिए अब वे मेरे लिए अप्रासंगिक हैं।

अफसोस है कि उनके साथ मुझे भी पीड़ा भोगनी पड़ती है। जिसे वे अपना उद्धार करने वाला कहते हैं उसने उनके पैरों में बेड़ियां डाल दी हैं। अब देखो उनके इस उद्धारक से उनका उद्धार कौन करेगा।

वे नींद में थे कि समुद्र ने उन्हें उछालकर एक द्वीप पर डाल दिया लेकिन अफसोस कि जिसे वे द्वीप समझ रहे थे वह किसी दैत्य की पीठ निकली।

गलत आस्थाओं से बड़ा और कोई दैत्य नहीं हो सकता। झूठी मर्यादाएं सबसे ज्यादा भयानक होती हैं।

जिसने भी उस द्वीप पर पांव टिकाए थे, उन्हें यह दैत्य खा गया।

किसने अपने लिए ये अंधेरी गुफाएं बनाईं? क्या यह वही नहीं हैं जिसने खुले आकाश से डरकर अंधेरा पसन्द किया था?

अपना उद्धार करने वालों से बचो! अगर शक्ति चाहते हो तो इनसे बचो।

४. सद्गुण की मर्यादाएं

जरथुष्ट्र ने कहा :

सौन्दर्य बहुत आहिस्ता बोलता है। वह सिर्फ उन्हें ही संबोधित करता है, जो जाग चुके हों।

ओ मर्यादाओं के गुलामो, आज मेरा सौन्दर्य तुम पर हंसा। हंसने के बाद मुझसे बोला :

अब वे कीमत भी मांगते हैं।

अब तुम कीमत भी मांगते हो मर्यादापुरुषो, मर्यादाओं का फल चाहते हो, दुनिया के एवज में स्वर्ग चाहते हो और अपने आज के एक छोटे-से दिन के बदले अनन्त का सौदा करना चाहते हो।

और सुनो! तुमने मुझे इसलिए पैदा किया कि मैं ज्ञान हूं; लेकिन ज्ञान का बदला चुकाने वाला कौन है? कौन देगा उसका प्रतिदान?

मुझे यही दुख है कि वस्तुओं की भी तुमने कीमत लगाई है और आत्मा की भी।

ठहरो, अभी तुम्हारे झूठ रोशनी में आ जाते हैं और तब तुम तड़पोगे, छटपटाओगे, लड़खड़ाओगे, टूट जाओगे।

तुम अपनी मर्यादाओं को अपने बच्चे की तरह प्यार करते हो लेकिन कभी ऐसी मां देखी है जो बच्चे से प्यार की कीमत मांगे?

तुम समझते हो तुम्हारे सद्‌गुणों का सितारा आकाश में आयेगा और रोशनी फैलाएगा; लेकिन तुम्हारे उस सितारे के साथ क्या उसकी रोशनी भी वहां तक जायेगी?

तुम मानते हो कि तुम्हारे सद्‌गुण तुम्हारा व्यक्तित्व हैं न कि तुम्हारे कपड़ों की तरह कोई बाहरी चीज।

तुम्हें यह समझने में वक्त लगेगा कि तुम्हारी मर्यादा वह कोड़ा है, जिसके प्रहार के नीचे मासूम आदमी छटपटाता है और तुमने उनकी चीखों से काफी फायदा उठाया है।

कुछ लोग हैं, जो घड़ियों की तरह चाबी दिए जाने पर टिक्-टिक् करना शुरू कर देते हैं और चाहते हैं कि लोग उनकी इस टिक्-टिक् को सद्‌गुण के रूप में स्वीकार करें।

मैं उन पर हंस-भर ही सकता हूं। जहां कहीं मुझे ऐसी घड़ियां मिलती हैं, मैं उनमें मजाक-मजाक में ही चाबी भर देता हूं और वे बजना शुरू कर देती हैं।

उनके मुंह से मर्यादा शब्द कितना घिनौना लगता है। जब वे कहते हैं कि वे सही हैं, तो मुझे लगता है कि वे कह रहे हैं—उनसे ठीक ही बदला लिया गया।

जरथुस्त्र उनमें शामिल नहीं है। वह उन झूठों और मक्कारों को सम्बोधित करके यह नहीं कहता है कि तुम सद्‌गुणों को नहीं जानते या तुम सद्‌गुण जान नहीं सकते।

५. भीड़

जिन्दगी खुशियों का एक कुआं है, लेकिन जहां भीड़ पानी पीती हो ऐसा कुआं और चूंकि भीड़ पानी पीती है, इसलिए हर पानी जहरीला हो जाता है। जरथुष्ट्र ने कहा :

हर साफ़-सुथरी चीज का मैं स्वागत करता हूं लेकिन मुझे खीसें निपोरे हुए चेहरे और गन्दगी की आदत से नफ़रत है।

उनकी वासनाओं से पवित्र पानी गन्दा हो गया है और जिस दिन से उन्होंने अपने गन्दे सपनों में मजा लेना शुरू किया उनके शब्द भी गन्दे हो गए हैं।

अपने भीगे हुए हृदय को जब वे आग पर रखते हैं तो लपट चिढ़ जाती है। उनके हाथों में अच्छे से अच्छा फल हास्यास्पद होकर सड़ने लगता है।

जो कहते हैं कि उन्होंने जीवन से किनारा कर लिया, दरअसल वे भीड़ से किनारे हुए हैं। वे दरअसल भीड़ के साथ अपने आह्लाद, अपनी आग या अपने फल की हिस्सेदारी नही करना चाहते थे।

लोग बस इतना चाहते रहे हैं कि इस भीड़ के गले पर अपना पैर रखकर उसे घोंट दें।

भीड़ की गर्दन पर रखकर दबाया गया पैर इतना समर्थ नही था कि वह जरथुष्ट्र को सिखा सके कि जीवन के लिए शत्रुता जरूरी होती है और जरूरी होती है मृत्यु या यन्त्रणा देने वाली सलीब। जरथुष्ट्र ने एक बार अपने-आप से सवाल पूछा और वह सवाल उसके गले मे इस तरह फस गया कि उसका दम घुटने लगा। जरथुष्ट्र ने कहा :

जिन्दगी के लिए भीड़ जरूरी नही होती। जहरीले पहाड़, बदबू देती आग, गन्दे सपने, रोटी में पड़े कीड़े—ये जिन्दगी के लिए जरूरी नहीं होते।

मैंने उन शासकों को अस्वीकार कर दिया है जो इस भीड़ से शक्ति के लिए सौदा करते हैं और अपने को नियामक कहते हैं।

हर अतीत और वर्तमान के बीच मैं अपनी नाक बन्द करके

घूमा हूं। वे सारे अतीत और वर्तमान भीड़ की दुर्गन्ध से भरे हुए है।

बड़ी मेहनत और सावधानी के साथ मैं सीढियां चढा। वहां मुझे ताज़गी मिली। ज़िन्दगी एक अंधे आदमी के साथ एक खम्भे पर सरक-सरककर चढ़ती रही।

मैं कैसे इस ऊंचाई पर आ गया जहां अब कुएं पर बैठी भीड़ कही नही है। यहां इस ऊंचाई पर मुझे सबसे कीमती आनन्द मिल गया है।

खुशियो का यह झरना मेरी ओर शायद बहुत तेजी से गिर रहा है। और अब मैं तुम तक बहुत विनय के साथ आना चाहता हूं, क्योंकि तुम्हारी तरफ़ मेरा मन तेजी से खिंचा चला जा रहा है।

ओ दोस्तो ! तुम भी यहीं आ जाओ ताकि यह सुख तुम भ अपने हिस्से में बटोर सको।

अब यह मेरी नही हमारी ऊंचाई है। मेरा नही, हमारा घर है। यह इतनी ऊंचाई पर है कि यहां गन्दे लोग अपनी प्यास ढोए हुए पहुंच नही सकते।

मेरे कुएं में सिर्फ़ पवित्र दृष्टि से झाको मेरे दोस्त ! यह कितना दिव्य है ! यह अपनी खुशियों की बूंदें तुम तक उछालता है।

भविष्य के वृक्ष पर हम अपना घोसला बनाएंगे और अकेले आदमी का भोजन लेकर चील वहीं आएगी।

तेज हवा की तरह एक दिन मैं यहां से उतरकर उनके बीच बहूंगा और उनके प्राण उड़ा ले जाऊंगा। मेरा भविष्य यही कहता है। यही उसकी इच्छाशक्ति है।

६. जहरीली मकड़ी

जरथुष्ट्र ने कहा :

यह जहरीली मकड़ी की गुफा है। क्या तुम खुद उस मकड़ी को देखना चाहते हो ? यह रहा उसका जाला, छत से लटकता हुआ। इसे छुओ, यह थरथराएगा।

लो, जहरीली मकड़ी खुद आ रही है। आओ, तुम्हारा स्वागत है! जहरीली सत्ता! तुम्हारी पीठ पर एक काला त्रिभुज है, यह तुम्हारा प्रतीक है और मैं तुम्हारी आत्मा को भी जानता हूं।

तुम्हारी आत्मा में जिघांसा और प्रतिशोध है। जहां भी तुम डसती हो वहां एक काला दाग़ उभर आता है और तुम्हारे जहर से लोग बेहोश होने लगते हैं।

ज़रथुस्ट्र ने इस तरह उदाहरण दिया और अपनी बात की पुष्टि करने लगा। उसने कहा :

यह बात मैंने तुम्हारे लिए कही है ओ समानता का उपदेश देने वाली! तुम आत्मा को बेहोश कर देते हो। मेरे अन्दर तुम जहरीली मकड़ी हो और छुपकर प्रतिशोध लेते हो। इसलिए मैं तुम्हारे इस जाले को फाड़ता हूं ताकि तुम अपने झूठ की गुफा से बाहर आ जाओ। मैं जानता हू, इस तरह तुम यह जो शब्द बोलते हो—'न्याय' इसके पीछे छुपा तुम्हारा प्रतिशोध भी उछलकर बाहर आ जाएगा।

मैं तुम्हे तुम्हारी गुफाओं से बाहर लाऊंगा और अपनी ऊंचाइयों से तुम्हारे चेहरे पर अपनी व्यंग्य-भरी हंसी पोत दूंगा।

मेरे दोस्त, यहां ऐसे लोग भी हैं जो मेरे सिद्धान्त का ही प्रचार करते है लेकिन उनके अन्दर भी वही ज़हरीली मकड़ी छुपी रहती है।

अब मैं समानता के सिद्धान्त का प्रचार करने वालो के साथ नही खड़ा हो सकता। मेरा न्याय कहता है : कोई भी इंसान किसी दूसरे के बराबर नही है।

अच्छाई, बुराई, अमीरी, ग़रीबी, ऊंचाई, नीचाई और दूसरी जो भी ऐसी मार्यादाएं हैं उन्हें लेकर आदमी निरन्तर आपस में लड़ते हैं और एक-दूसरे की ग़ैर बराबरी और बढ़ती जाती है।

हर इंसान बराबर नही हैं। मैं ज़रूर यही कहूंगा वरना मैं अपने महामानव से प्यार नही कर सकता।

मेरे दोस्तो! देखो, अभी जहा ज़हरीली मकड़ी की गुफा थी वहां एक प्राचीन मंदिर के खंडहर उठ खड़े हुए हैं। इन्हें समझदारी

के साथ पहचानने की कोशिश करो।

देखो, इस खंडहर की एक-एक मेहराब, इसका एक-एक खम्भा एक-दूसरे को छोटा करना चाहता है।

इसीलिए कहता हूं दोस्तो ! आओ हम लोग दुश्मन हो जायें। इस तरह हम एक-दूसरे से ऊपर उठेंगे।

अफसोस कि मेरी उंगली में जहरीली मकड़ी ने काट लिया है; मेरी इस पुरानी दुश्मन ने मेरी उंगली मे डस लिया है।

वह मेरी दुश्मन है और मानती है कि यह दुश्मनी निभानी ही होगी। हां, उसने बदला लिया है।

नहीं, मै बेहोश नही होऊगा।

७. रात्रिगीत

जरथुष्ट्र ने कहा :

अब रात हो गई है। फौवारों की आवाज तेज हो गई है। मेरी आत्मा भी एक फौवारा है।

अब रात हो गई है। अब सिर्फ प्यार करने वालो के गीत ही जागते हैं। मेरी आत्मा भी ऐसे ही एक प्रेमी का गीत है।

मेरे अन्दर कुछ ऐसा है जिसे अब कुछ भी सन्तुष्ट नही करता। मेरे शब्दो को बाहर आना ही होगा। मेरे अन्दर वह प्यार छटपटा रहा है, जो अपने आप-से सिर्फ प्यार की भाषा ही बोल सकता है।

मैं रोशनी हूं। अगर मै अकेला न होता तो मैं भी सिर्फ एक अंधेरी रात होता।

मैं अपनी रोशनी मे जीता हूं और जो किरणे मुझसे फूटती हैं, उन्हें मैं दुबारा अपने में समेट लेता हू।

मेरे सौंदर्य से एक भूख जन्म ले रही है। जिन्हें मैं रौशन करता हूं उन्हें मैं घायल करना चाहता हूं। जिन्हें मैंने उपहार दिए हैं, उन्ही को मैं लूट लेना चाहता हूं। इस तरह मुझमे मक्कारी की भूख पैदा हो रही है।

मैं चाहता हूं कि दूसरी ओर से गिर रहे आदमी को थामने के लिए हाथ बढ़ाऊं और जब वह हाथ फड़कने लगे उस वक़्त मैं अपना हाथ खींच लूं। मैं मक्कारी की भूख अपने अन्दर उभरती महसूस कर रहा हूं।

सच कहूं, मेरे मूल्य अपने को ढोते-ढोते थक गए हैं।

अब मेरी आंखों में पीड़ित के लिए कोई अनुकम्पा नहीं है। मेरे हाथ सहारे के लिए आगे नहीं बढ़ते। मेरी आंखों के आंसू गायब हो गए हैं।

वीराने रेगिस्तान में जाने कितने सूरज चक्कर लगाते हैं। और हर अंधेरे को अपनी रोशनी बांटते हैं; लेकिन मेरे सामने आकर वे खामोश रह जाते हैं।

मैं जानता हूं, जो चमकता है, उससे सूरज को दुश्मनी होती है।

ओ अंधेरे, और अंधेरे मे रहने वाले लोगो ! सूरज से सिर्फ़ तुम्हें ही गरमाई मिलती है।

मेरे चारों ओर बर्फ़ है। मेरा हाथ बर्फ़ के नीचे जल रहा है। मैं प्यासा हू और तुम्हारी प्यास से डरा हुआ हूं।

यह रात है और मुझे रोशनी बनना है। मुझे अंधेरे में डूबे और अकेले आदमी की प्यास बनना है।

यह रात है और हर झरने की आवाज़ तेज हो गई है। मेरी आत्मा भी एक हरहराता हुआ झरना है।

८. नृत्यगीत

एक शाम जरथुस्त्र और उसके शिष्य जंगल से गुज़रे। जरथुस्त्र एक कुआं खोजने लगा, तो उसने देखा, झाड़ियों और दरख़्तों से घिरा हुआ एक हरा-भरा कुंज है, जहां सुन्दरियां नाच रही है। जरथुस्त्र सहज भाव से उनके निकट गया और मित्रतापूर्वक उनसे बोला :

नृत्य मत रोको सुन्दरियो ! मैं ऐसा 'आदमी नहीं, जो सुन्दरता

से नफ़रत करता है और खेल-कूद नापसन्द करता है।

विश्वास करो मैं एक जंगल हूं। अंधेरे दरख्तों को घेरे हुए एक रात हूं, जो अंधेरे से डरता नही उसे इन घने दरख्तो की छांह में फूलों से लदे गुलाब के पौधे मिलेंगे।

देखो तो वह छोटा-सा ईश्वर दिन मे ही सो गया। सारी रात उसने तितलियों का कुछ ज्यादा ही पीछा किया।

मैं इस छोटे ईश्वर की ताड़ना करूं तो तुम बुरा मत मानना, सुन्दरियो, इसे जरा रो लेने दो। रोता हुआ ईश्वर हास्यास्पद लगता है।

आंखों मे आंसू भरकर वह तुम्हारे साथ नृत्य की कामना करेगा तब मैं गाऊंगा।

सुन्दरिया और रोता हुआ छोटा ईश्वर, जब नाचने लगे तो जरथुष्ट्र ने यह नृत्यगीत गाया :

ओ जीवन! तुम्हारी आंखों मे मैंने देर से ही देखा और तब लगा मैं वहां अतल में समाता जा रहा हू।

सभी मछलिया यही करती है। तुम कहती हो : बस वे सिर्फ़ उसकी थाह नही पा सकीं, जो अथाह है।

यह कहकर वह अविश्वसनीय हंसी हंसी और हंसती गई।

अब हम तीनों के लिए जीवन यही है। हृदय से तो मैं सिर्फ जीवन को ही प्यार कर सकता हूं और यह सब तभी होता है जब मैं उससे नफरत करता हू।

एक बार जीवन ने मुझसे पूछा : जिसे तुम अपना ज्ञान कहते हो वह क्या है?

आओ मैं बताऊं ज्ञान क्या है। उसकी ओर लगातार देखकर भी मन नही भरता। परदे पर परदे हटाकर वह दिखाई देता है।

वह सुन्दर है या नही, यह नही कह सकता। लेकिन बहुत पुराने जमाने से उसने लोगों को आकर्षित किया है।

लो, उसने फिर आंखें खोल दी हैं और फिर मैं अतल में लगा हूं।

जरथुष्ट्र ने यह गीत गाया। फिर जब गीत समाप्त हुआ और सुन्दरियां भी वहां से चली गई तो वह उदास हो गया। उसने कहा:

सूरज देर हुई डूब चुका है। कुंज भीग गया है। जंगल में सर्द हवाएं चलने लगी हैं।

मेरे चारों ओर कोई अज्ञात सत्ता है और मेरी ओर विचार में डूबी हुई देख रही है।

ओ जरथुष्ट्र ! तुम अभी जिन्दा हो ? क्यों ? किसलिए ? कैसे ? कहां ? किसके लिए ? क्या अभी जिन्दा रहना गलती नहीं है ?

६. क़ब्र का गीत

जरथुष्ट्र ने सोचा कि क़ब्रों का द्वीप आत्म स्मृति देता है। उसकी युवावस्था की कब्र उसे ठंडक देगी। यह सोचकर उसने समुद्र यात्रा की। क़ब्र के द्वीप पर उतरकर उसने कहा :

ओ मेरी युवावस्था की तस्वीरो ! तुम इतनी जल्दी कैसे नष्ट हो गईं ? आज तुम मेरे लिए मृत हो।

आज भी मेरे पास सबसे अधिक धन है, क्योंकि मैं अकेला हूं। बताओ तो भला मुझे छोड़कर और किसे इस दरख्त ने इतने ज्यादा पके हुए सेब दिए ?

कभी हम एक-दूसरे के लिए बने थे और आज तुम पालतू परिन्दे की तरह स्मृति बनकर मुझ तक आई हो।

मेरे लिए तुम्हारी मृत्यु बहुत जल्दी ही हो गई। दरअसल उन्होंने मुझे मारना चाहा और मेरी युवावस्था की तस्वीरों का गला घोंट दिया।

उन्होंने उन्हें लक्ष्य बनाया, क्योंकि वे मुझे मारना चाहते थे। उन्होंने मेरे सबसे कोमल स्थान का निशाना लेकर तीर चलाया। उन्होंने मेरी युवावस्था की हत्या की।

लेकिन मेरे शत्रु सुनें। उन्होंने जो मेरे साथ किया है उसकी तुलना में नर-हत्या कुछ भी नहीं है।

उन्होंने मुझसे वह छीना जो दुबारा कभी नहीं मिलता।

ओ मेरे शत्रुओ ! लो, मैं तुम्हें शाप देता हूं कि जो भी तुम्हारी अमर्यादा है वही मेरा दिव्य बोध होगा।

कभी मैं एक अंधे आदमी की तरह उनके अभिषिक्त रास्ते पर चला था। तब तुमने उस अंधे आदमी के आगे रास्ते पर गन्दगी बिखेर दी। अब वह उस पुराने रास्ते से विद्रोह कर आया है।

तुमने मेरी मिठास में जहर घोला। मेरी उदारता के पीछे तुमने डाकू छोड दिए।

जब मैंने अपनी सबसे पवित्र चीज को तुम्हारे सामने बलि के लिए पेश किया तुमने उसके पास अपनी अर्चना की सामग्री रख दी और उसके धुएं से मेरी पवित्रता का दम घुटने लगा।

एक बार मैं खुश होकर नाचना चाहता था, उस वक्त तुमने मुझसे मेरे साथी को अलग कर दिया। मेरी आशाएं तुमने अपूर्ण रहने दी और मेरी युवावस्था के सपने को अधूरा।

अब तुम हमारे लिए कब्र ढाने वाले शत्रु हो !

१०. अपने से परे

जरथुष्ट्र ने कहा :

मेरे समुद्र की सतह शान्त है। कौन कह सकता कि इसके अन्दर घिनौने दैत्य छुपे हैं !

आज मुझे एक पहुंचा हुआ आदमी मिला। मैं उसकी बदसूरती पर जी खोलकर हंसा।

वह सीना ऊंचा करके, सांस फुलाकर खड़ा था। बिल्कुल खामोश था। वह पहुंचा हुआ आदमी था।

उसने अपने भोंडे सत्य के कंधे पर अपने शिकार लटका रखे थे। उसने सीखें भी लटका रखी थी। हां, उसके पास गुलाब मुझे नहीं दीखे।

उसने हंसना या सुन्दरता को पहचानना नहीं सीखा था। वह

ज्ञान के जगल से चेहरा लटकाए हुए, गंभीर लौटा था।

वह जगली वहशी जानवरों से लड़कर आया था और उसकी गंभीरता से उसकी वहशत झांक रही थी।

वह शेर की तरह छलांग मारने को तैयार दीखता था लेकिन मुझे ऐसी तनाव-भरी आत्माएं पसन्द नहीं हैं। अपने-आप में डूबे रहने वाले ऐसे कृतघ्न लोगों से मुझे नफ़रत है।

अभी देखना वह अपनी लोकोत्तरता को ढोते-ढोते थक जाएगा। इसके बाद ही उसे जो कुछ भी सुन्दर है वह दिखाई देगा।

जब वह अपने-आप से विरक्त होगा तभी वह अपनी छाया को लांघ पाएगा। तभी वह अपने सूरज तक पहुंचेगा।

बहुत देर वह छांह में बैठा रहा है। उसकी आत्मा पश्चात्ताप मे मुरझा गई है। अनन्त की आशा मे वह सूख गया है। अब उसकी आंखों में तिरस्कार है और मुह में दुर्वचन। वैसे तो वह आराम कर रहा है, फिर भी उसे चैन नहीं है।

दरअसल उसे मिट्टी की गन्ध प्राप्त करनी चाहिए न कि मिट्टी के प्रति घृणा पालनी चाहिए।

उसका चेहरा काला पड़ गया है और वह बार-बार उस पर अपनी हथेली फिरा रहा है, फिर भी उसकी आखों में रोशनी लौटने वाली नहीं।

उसने जो कुछ किया है वही उसके चारों ओर अंधेरा किए बैठा है। अभी वह कर्ममुक्त भी तो नहीं हुआ।

उसने दैत्यों को पराजित किया है। बड़े-बड़े प्रश्नों के जवाब खोजे हैं; लेकिन वह अपने अन्दर के दैत्य को हरा नहीं सका। अपने प्रश्नों के सामने आज भी निरुत्तर है।

सच यह है कि ऐसे दिव्य पुरुष को सुन्दरता दीखती ही नहीं। ऐसी इच्छाशक्ति वालों से सौन्दर्य-बोध थोड़ा फ़ासला लेकर चलता है।

वह नायक है; लेकिन कमजोर है। जिस दिन वह आईने के सामने खड़ा होने लायक होगा, उस दिन वह समर्थ कहा जाएगा। वह नायक से महानायक बनेगा।

११. संस्कृति का देश

जरथुष्ट्र ने कहा :

मैं बहुत दूर उड़ आया हूं और अब मुझे भय महसूस हो रहा है।

जब मैंने अपने चारों ओर देखा, तो लगा वक्त ही मेरा समकालीन है।

यह कहकर जरथुष्ट्र वापस लौटा। वह घर की ओर उड़ा। इस बार उसकी गति ज्यादा तेज थी। जरथुष्ट्र ने कहा :

ओ मेरे समकालीनो ! अब मैं तुम्हारे बीच संस्कृति की धरती पर उतर आया हूं।

पहली बार मैं तुम्हें समझने की दृष्टि लाया हूं।

यह मेरे साथ कैसे हुआ ? हालांकि मैं भयभीत था फिर भी मुझे हंसी आ रही थी। वहां जो रंग मैंने देखे वे और कही नही दिखे।

ओ मेरे समकालीनो ! मैंने वहा से देखा, तुम्हारे चेहरो पर अजीब-अजीब रगों के धब्बे हैं। इतने बदरंग चेहरे देखकर मुझे ताज्जुब हुआ।

तुम पचास आईने लेकर बैठते हो और अपने चेहरे को खूबसूरत मानते हो।

देख लो, दुनिया मे तुम्हारे चेहरों से ज्यादा असली मुखौटे कहीं नही मिलेंगे। बताओ जरा, तुम्हारी पहचान क्या है ? क्या कोई भी तुम्हारी शिनाख्त कर सकता है ?

प्राचीनतम लिपि में लिखी थी तुम्हारी पहचान और उसके ऊपर तुमने अपने हाथ से फिर कुछ लिखा है। अब वहा पढ़ा जाने लायक कुछ नही बचा।

कोई भी तुम्हारे इन चेहरों पर पड़े परदो के पीछे बीसियों अलग-अलग रंग और अलग-अलग आकृतिया देख सकता है।

अगर तुम्हारे ये परदे हटा दिए जायें और तुम्हारी ये नकली आकृतिया और तुम्हारे ऊलजलूल रंग धो दिए जायें, तो तुम एक

डरावना कंकाल-भर बचोगे और तुम्हें खेत में खड़ा कर देने पर कौवे तुमसे डरने लगेंगे।

सच, मैं भी तुमसे डरा हुआ एक कौवा ही हूं। मैंने तुम्हें एक बार इसी तरह रंगहीन, बेपर्दा देख लिया था। डरकर मैं उड़ गया था।

तुम समझते हो कि तुम इतिहास में लोगों का विश्वास हो। तुम बहुत डरावने विश्वास हो।

तुम ऐसा अधखुला दरवाजा हो, जिसके बाहर कब्र खोदने वाले इन्तजार में खड़े रहते हैं।

मुझ पर लानत है कि तुम्हारी चालाकियों पर हंस नहीं सका और तुम्हारी सारी धूर्तता, तुम्हारी सारी गन्दगी निगल गया।

मगर कोई बात नहीं। अब मैं तुम्हें हलका कर दूंगा, क्योंकि तुम्हारा बोझ मैं ढो लूंगा।

मेरे लिए वह बोझ बहुत भारी नहीं होगा। तुम्हारा वह बोझ उठाने के बाद मुझे थकावट भी नहीं होगी।

अब मेरा घर कोई नहीं है। हर जगह मैं छोड़ता जाऊंगा और उड़ता जाऊंगा।

अब मेरे समकालीन मुझे अजनबी लगने लगे हैं और मैं अपनी मातृभूमि से ही विदा ले चुका हूं।

१२. बुद्धिजीवी

ज़रथुस्त्र जिस वक्त सोया हुआ था उस वक्त वहां एक बकरी आई और वह ज़रथुस्त्र के सिर पर रखे पवित्र पत्तियों के मुकुट को चर गई। इसके बाद बोली :

ज़रथुस्त्र अब विद्वान् बुद्धिजीवी नहीं रहा।

एक बच्चे ने ज़रथुस्त्र को बताया कि यह कहने के बाद गर्व से सिर उठाए वह बकरी एक ओर चली गई। ज़रथुस्त्र ने कहा :

मुझे इस टूटी दीवार के सहारे लेटना अच्छा लगता है। क़रीब

मे ही बहुत-से पॉपी के फूल उगे हुए हैं और यहीं बच्चे खेलते रहते हैं।

इन बच्चों के लिए मैं आज भी बुद्धिजीवी हूं। लेकिन उस बकरी के लिए मैं बुद्धिजीवी नही रहा। चलो अच्छा हुआ।

यह सच है कि मैंने विद्वत्ता दिखाने वाले बुद्धिजीवियों से रिश्ता तोड़ लिया और अब उनकी तरफ कभी नही लौटूगा।

उन लोगों की मेज पर जाने कब तक आत्मा की भूख लिए बैठा रहा। वे लोग खोजबीन से सन्तुष्ट हो जाते थे लेकिन मैं समझ के अखरोट को फोड़कर उसके अन्दर झांकना चाहता था।

ताजी मिट्टी की गन्ध-भरी हवा और मुक्ति मुझे ज्यादा पसद है। मैं उनके पदों और सम्मानपत्रों पर सोने के बजाय किसी जानवर की खाल पर सोना ज्यादा पसन्द करूंगा।

जैसे कोई आदमी गली मे खड़ा हो जाता है और उधर से गुजरने वाले दूसरे लोगों को देखता है उसी तरह ये बुद्धिजीवी इन्त-जार करते हैं कि दूसरों द्वारा सोचे विचार उधर से गुजरें और वे उन पर विचार करें।

कोई उनके करीब जाए तो आटा भरी हुई बोरी की तरह वे थोड़ा-सा आटा झाड़ देंगे गोया वे खुद आटा पैदा करने की सामर्थ्य रखते हैं। वे तो सिर्फ़ बोरी हैं। आटा तो खेत में पैदा किए हुए अनाज का है।

उनके ज्ञान से अक्सर सड़ते हुए नाले की गन्ध आती है।

वे एक अच्छी घड़ी है। उनमे चाबी जरूर देते रहना चाहिए। चाबी दे दो, तो वे ठीक-ठीक वक्त बतलाते हैं और बडी शालीनता से टिक्-टिक् करते हैं।

वे चक्की हैं, जो आटा पीस सकते हैं। उनमें अनाज डालो और वे उसे पीस देंगे।

वे एक-दूसरे को हमेशा सन्देह की नजर से देखते हैं। प्रायः वे मकड़ियों की तरह जाल फैलाए रहते हैं।

अपना जहर वे बड़ी सावधानी से तैयार करते हैं। जहर घोलते

वक्त अपने हाथ में वे अपनी सुरक्षा के लिए शीशे के दस्ताने पहन लेते हैं।

चौपड़ खेलते वक्त दूसरों को धोखा कैसे दिया जाये—वे खूब जानते हैं। इसीलिए इस खेल में उनकी गहरी रुचि होती है।

उन्हें यह अच्छा नहीं लगता कि कोई उनके सिर के ऊपर से होकर निकल जाये। इसीलिए उन्होंने मेरे और अपने सिर के बीच जाने कितनी गन्दगी, कहां-कहां के कूड़े का ढेर इकट्ठा कर लिया है।

इस तरह उन्हें मेरी उनके सिर के ऊपर से होकर गुजरने की आवाज नहीं सुनाई देती।

यह सच है कि विद्वान् बुद्धिजीवियों ने मेरी बातें बहुत कम ही सुनी हैं।

उन्होंने तमाम मानव-इतिहास की गलतियां और गन्दगी मेरे और अपने बीच खड़ी कर ली हैं। फिर भी मैं अपने विचार लिए हुए उनके सिर के ऊपर से होकर आगे जा रहा हूं।

न्याय कहता है—मनुष्य और मनुष्य के बीच समानता नहीं है। इसीलिए तो मेरी इच्छाशक्ति उनके पास नहीं है।

१३. कवि

एक बार जरथुष्ट्र के शिष्यों ने उससे कहा :

कभी आपने कहा था कि कवि झूठे होते हैं। ऐसा आपने क्यों कहा था ?

जरथुष्ट्र ने कहा :

क्यों ? मुझसे पूछते हो क्यों कहा था ? क्या तुम समझते हो कि मैंने पहले जो कुछ कहा था, वह गलत था ? अपने विचार बहुत पहले मैंने अनुभव के आधार पर बनाये थे।

अब तो मेरे लिए अपने विचारों को अपने पास रखना भी

मुश्किल हो गया है। मेरे विचारों के कई पक्षी तो अब उड़ भी गए।

हां, तो मैंने तुमसे कभी कुछ कहा था ? कहा था कि कवि झूठे होते हैं ? मैं भी तो कवि हूं।

जरथुष्ट्र भी कवि है तो तुम क्या समझते हो वह सच बोला होगा ? तुमने उसका विश्वास क्यों किया ?

शिष्यों ने कहा :

हमें जरथुष्ट्र में आस्था है।

जरथुष्ट्र ने इनकार मे सिर हिलाया और मुस्कराया। उसने कहा :

आस्थाएं मुझे सन्तोष नही देतीं। और अपने प्रति आस्था तो बिलकुल ही नही।

लेकिन अगर किसी ने गम्भीर होकर कभी कहा था कि कवि झूठे होते हैं, तो ठीक ही कहा था। हम लोग बहुत झूठ बोलते हैं।

हमलोग कम सीखते हैं और मुश्किल से सीखते हैं। इसीलिए झूठ हम लोगो की मजबूरी है।

हम लोग कम जानते हैं इसीलिए उससे मिलकर बहुत खुश होते हैं, जिनका अन्तरग खोखला हो, खासतौर से युवा लड़कियां।

कवि समझते है कि किसी पहाड़ी ढाल पर घास में लेटे हुए अगर कोई चीज उनके कान में चुभे, तो वे पृथ्वी और स्वर्ग के बीच की दूरी पहचान गए।

कभी अगर उनके मन में कोमल संवेदना पैदा हो तो उन्हें लगता है कि सारी दुनिया उन्हे प्यार करने लगी।

कवियों ने पृथ्वी से स्वर्ग तक न जाने कितनी चीजें पैदा कर ली जो यहां कहीं नहीं है। उन्होंने देवता तक पैदा कर दिए।

जरथुष्ट्र की ये बातें सुनकर उसके शिष्य असन्तुष्ट हो गए मगर चुप रहे। जरथुष्ट्र भी खामोश था और वह अपने अन्दर कहीं झांक रहा था। आखिर एक लम्बी सांस लेकर उसने कहा :

अब तक मैंने अतीत और वर्तमान की बात कही; लेकिन मेरे अन्दर कुछ है, जो भविष्य का है।

मैं नये और पुराने कवियों से इसलिए ऊब गया कि वे सतही हैं, उथले सरोवर हैं।

मैं उन्हें शुद्ध हुआ नहीं मानता। पानी को मथकर अक्सर वे उसे गन्दला कर देते हैं।

मैंने उनके सागर में जाल फेंककर मछली पकड़ने की कोशिश की; लेकिन जब भी जाल बाहर निकाला, उसमें किसी प्राचीन देवता का सिर मिला।

पानी से वे अक्सर पत्थर ही निकालते रहे हैं।

कवि मुझे बदलता दीख रहा है। वह वहां बदल रहा है, जहां से उसने अपने अन्दर झांकना शुरू किया है। वहीं से वह कवियों से ऊपर भी उठ रहा है।

१४. महान् घटनाएं

जरथुष्ट्र के अपने द्वीप से थोड़ी दूर समुद्र में एक और द्वीप है, जिस पर एक ज्वालामुखी लगातार आग उगलता रहता है। इस द्वीप के बारे मे लोग और अक्सर बूढ़ी औरतें कहती हैं कि यह दूसरी दुनिया के द्वार पर रखी हुई एक शिला है। इसी ज्वालामुखी से होकर एक पतला रास्ता उस दुनिया के द्वार तक ले जाता है।

जिन दिनों जरथुष्ट्र अपने द्वीप पर रह रहा था, उन्हीं दिनों उस ज्वालामुखी वाले द्वीप के किनारे एक जहाज ने लंगर डाला। नाविक अपने कप्तान के साथ द्वीप पर खरगोशों का शिकार करने निकल गए। दोपहर को जब वे अपने शिकार के साथ वापस लौट रहे थे, तो उन्होंने आश्चर्य से देखा कि एक आदमी हवा मे तैरता हुआ उनके करीब आया और तेजी से ज्वालामुखी की ओर चला गया। वह झपटती हुई छाया कह रही थी :

वक्त आ गया है। यही सबसे अच्छा वक्त है।

नाविकों ने इस छाया को पहचान लिया। उन्होंने चिल्लाकर कहा :

देखो ! जरथुष्ट्र नरक की ओर जा रहा है।

जस वक्त यह जहाज इस द्वीप पर आया उसी वक्त जरथुष्ट्र के द्वीप

पर भी एक अफवाह फैली। अफवाह यह कि जरथुष्ट्र गायब हो गया। रात के वक्त वहां एक जहाज आया था। जरथुष्ट्र उस पर चढ़ा और उसने किसी को नहीं बताया कि वह कहां और क्यों जा रहा है।

लोगों में एक बेचैनी फैल गई और तभी ज्वालामुखी के द्वीप से लौटे नाविकों द्वारा बताई कहानी का लोगों को पता चला। उससे लोगों की बेचैनी और ज्यादा बढ़ गई। लोगों ने कहा :

जरूर शैतान जरथुष्ट्र को ले गया।

जरथुष्ट्र के शिष्य इस ८.उ पर हंस पड़े। उन्होंने कहा :

जल्दी ही हम सुनेंगे कि जरथुष्ट्र खुद शैतान को ले गया।

लेकिन उनका दिल भी बेचैन था। पांचवें दिन जब जरथुष्ट्र लौट आया तो उनकी खुशी की सीमा नहीं थी। जरथुष्ट्र ने उसे आग के कुत्ते से भेंट की कथा सुनाई। उसने कहा :

कुत्ता बोला—पृथ्वी के ऊपर त्वचा भी है और त्वचा में रोग है। वह रोग है मनुष्य।

ऐसा ही एक और रोग है, जिसे आग का कुत्ता कहते हैं। इसके बारे में आदमी ने बड़े वहम पाल रखे हैं।

जरथुष्ट्र ने कहा :

मैं इसी रहस्य की थाह लेने के लिए समुद्र के उस पार गया था। मैंने वहां नंगा सत्य देखा।

मैंने आग के कुत्ते से कहा—तू उठ और मेरे अन्दर से बाहर आ और बता यहां गहराई कितनी है।

कहां से इतना शोर आता है ? क्यों इतनी उथल-पुथल होती है, जिन्हें आदमी बड़ी घटनाएं कहता है ?

कुत्ते ने कहा :

ओ शोर मचाने वाले दोस्त ! सुनो : बड़ी घटना उथल-पुथल नहीं होती बल्कि शान्ति होती है। सबसे शान्त क्षण, सबसे बड़ी घटना होता है।

जरथुष्ट्र ने कहा :

मैं शासक और गिरजाघर के धर्माधिकारी से कह आया हूं कि

तुम्हारी मर्यादाएं टूट रही हैं और आग का कुत्ता तुम्हें उखाड़ फेंकेगा।
कुत्ते ने पूछा :

गिरजाघर ? वह क्या होता है ?

जरथुष्ट्र ने कहा :

गिरजाघर भी एक राज्य जैसा है। मगर ओ कुत्ते ! तू चुप रह। क्या तू अपने साथियों को मुझसे बेहतर नहीं जानता ?

मेरी इस बात पर वह धीरे-धीरे शान्त होने लगा।

मैंने उस कुत्ते को एक और आग के कुत्ते की कहानी सुनाई। उस कहानी को सुनकर वह और पराजित हुआ और आखिरकार भौंकता हुआ अपनी गुफा में लौट गया।

१५. सबसे शान्त क्षण

जरथुष्ट्र महसूस करता है कि वह अनचाहे ही अपने मित्रों से अलग होना चाहता है। वह एक बार फिर अपने एकान्त की गुफा मे चला जाना चाहता है; लेकिन इस बार उसका दिल उदास है। जरथुष्ट्र ने कहा :

तुम्हे मालूम है कि किसने मुझे इस वापसी का आदेश दिया है ? मेरी पत्नी ने। क्या उसका नाम मैंने तुम्हे बताया है ?

मेरे सबसे अधिक शान्त क्षण ने कल मुझसे बात की। मेरा वही क्षण मेरी पत्नी है।

मैं अब सब कुछ बता देना चाहता हूं, ताकि मेरे जाने पर तुम उदास न हो।

कल सबसे खामोश क्षणों मे मेरे पैर के नीचे की जमीन धंसी और मैं एक सपने मे जा गिरा।

वहा एक न सुनाई पड़ने वाली आवाज ने मुझसे कहा कि अगर मैं बोल सकता हूं तो बोलता क्यो नही ?

बोलने की छटपटाहट मुझमे थी लेकिन यह भी सच था कि मैं बोलता किससे ? मेरी बात सुनने को कोई तैयार नही था।

मैंने सुना वह आवाज मुझसे कह रही थी कि अगर तुम बोल

नकते हो, तो अपने शब्द उन्हें सुनाओ, ताकि ये पहाड यहां से हट जायें।

मैं अपने रास्ते पर चलता रहा और वे लोग मेरी हंसी उड़ाते रहे। अब मेरे पांव कांपने लगे हैं।

आवाज ने मुझसे कहा— तब तुम रास्ता तो पहले ही भूल गये थे, अब क्या चलना भी भूल गए? उनके चिढ़ाने पर ध्यान क्यो देते हो? तुमने अनुशासन मानना छोड दिया है और अव तुम अनुशासन करोगे।

उस खामोश आवाज ने मुझसे कहा कि सबसे ज्यादा बडा तूफान तब पैदा होता है जब खामोशी बोलती है।

जब मैंने कहा कि मैं इसमे असमर्थ हू, तो सहसा चारो ओर डरावनी हंसी गूजने लगी। जब हंसी थमी तो उसी आवाज ने फिर कहा कि तुम्हारे फल तो पक गए है; लेकिन तुम उनके काबिल नही हो।

इसके बाद जरथुष्ट्र ने निश्चय किया कि अब उसे अपने एकान्त मे लौटना चाहिए। इसके साथ ही उसके मन मे अपने मित्रो से बिछुड़ने का दर्द टीसने लगा। वह जोर-जोर से रो पड़ा। लोगों ने उसे ढाढस बधाया। आखिरकार रात के अंधेरे मे वह अपने मित्रो को छोड़कर अकेला चल पड़ा।

ज़रथुष्ट्र ने कहा

तीसरा खण्ड

१. यायावर

करीब आधी रात के वक़्त जरथुष्ट्र अपने द्वीप की पहाड़ी के उस तरफ़ उतरा ताकि सुबह होने तक वह दूसरे तट पर पहुच जाये। उस तट पर अक्सर जहाज़ आते और लंगर डालकर खड़े हो जाते थे। इन पर वे लोग यात्राएं करते थे, जो एक द्वीप से दूसरे द्वीप पहुचना चाहते थे।

पर्वत से उतरते वक़्त बचपन से अब तक की गई अगणित यात्राएं जरथुष्ट्र को याद आने लगी। अब तक उसने न जाने कितनी घाटियों, पर्वतो और पर्वत शृंखलाओ को पार किया था।

उसने अपने-आपसे कहा :

मैं यायावर हू और मुझे पहाडो पर चढना पसन्द है। मैदान मुझे अच्छे नही लगते। मैं चुपचाप बैठ भी नहीं सकता।

इस यायावरी के साथ मेरे अनुभव बढ़ते जा रहे है। अब मेरे साथ दुर्घटनाएं नही हो सकती और अब जो कुछ भी होगा वह मेरा चाहा हुआ ही घटेगा।

एक बात और मुझे याद आ रही है। अब मैं अन्तिम शिखर पर खड़ा हूं। यहा से नीचे उतरना सबसे दुर्गम राह तय करना है।

हां, जो मेरे जैसे स्वभाव का होगा, वह इसकी परवाह नही करेगा। यही महानता की राह है।

जरथुष्ट्र अपने-आप से यह कहकर चुप होता है और नीचे उतरना शुरू कर देता है। थोड़ा-सा चलकर वह रुकता है और अपने-आप को दुबारा संबोधित करता है :

ओ जरथुष्ट्र ! तुम महानता की राह पर जा रहे हो; ले-

तुम्हारी हिम्मत इसीमें है कि अपने पीछे कोई रा मत छोड़ो।

अगर सीढ़िया तुम्हारे लायक न हों; तो तुम अपने सिर पर चढ़कर आगे बढ़ो।

अपने सिर पर चढ़ो और अपने-आप को ऊंचाई से देखो। यही पर्वत शिखर पर चढ़ना है। *यही अन्तिम शिखर अभी बाकी है।*

यह कहता हुआ ज़रथुष्ट्र दूसरी ओर जा पहुंचा। सामने अथाह समुद्र फैला हुआ था। उसने उदास होकर कहा :

मुझे अपनी नियति मालूम है। मैं उसके लिए प्रस्तुत हूं। क्या मेरा अन्तिम अकेलापन यहीं से शुरू होता है ?

यहां मेरे सामने चढ़ने के लिए सबसे ऊंचे पर्वत की चोटी है और चलने के लिए सबसे लम्बा रास्ता।

२. दृष्टि और भटकाव

जहाज पर चढ़ने के बाद ज़रथुष्ट्र के प्रति हर किसी के मन में एक गहरी उत्सुकता थी, लेकिन ज़रथुष्ट्र दो दिन तक लगातार चुप रहा। उसके अन्दर उदासी के कारण कुछ ऐसा गूंगापन और बहरापन पैदा हो गया था कि वह किसी के सवाल को न तो सुन रहा था, न किसी को कोई जवाब दे रहा था। आखिर उसका मौन टूटा और उसने कहा :

आओ, तुम लोगों को मैं उस भटकाव के बारे में बताता हूं, जिसे मैंने देखा और जिसे हर अकेले आदमी ने झेला है।

मैं एक दिन उदास चला जा रहा था। धुंधलका किसी लाश की तरह नीला पड़ चुका था। मेरे लिए हर सूरज डूब चुका था।

रास्ता कटीला, वीरान और पथरीला था और सूखी हुई टहनियां मेरे पैरों के नीचे चर्र-चर्र टूट रही थी।

हालांकि एक शैतानी ताकत मुझे नीचे खींच रही थी, फिर भी मैं ऊपर की ओर जा रहा था।

शैतान मेरे कंधे को दबा रहा था। उसने मुझसे कहा—ओ

जरथुष्ट्र ! याद रख, जो पत्थर ऊपर जाता है, वह नीचे भी आता है।

ओ जरथुष्ट्र ! तूने अपनी समझ का पत्थर ऊपर जरूर फेंका है; पर यह तेरे सिर पर ही गिरेगा।

उसके इन शब्दो के बाद वहां और सन्नाटा छा गया और मैं और ज्यादा अकेला हो गया। मैं अपने को बीमार महसूस करने लगा। लगा जैसे मुझे बुरे सपनों ने तोड़ दिया हो।

और तब मेरा साहस जागा। उसके जागते ही मैं सीधा खड़ा हो गया और मैंने कहा : ओ शैतान ! तू मुझसे छोटा है।

हिम्मत ही सबसे बड़ा हथियार है। हिम्मत से तुम अपनी हार को भी मार सकते हो।

३. चुनौती

जरथुष्ट्र ने चीखकर कहा :

ओ शैतान ! या तो मैं रहूंगा, या तू और मैं चूंकि शक्तिशाली हूं इसलिए मैं ही जिऊंगा।

तू इस द्वार की तरफ देख ! यह दो तरफ खुलता है। यहां दो रास्ते मिलते हैं और इन रास्तो के अन्त तक कोई नही गया।

और यह सामने की लम्बी गली—यह अनन्त की ओर जाती है। पीछे वाली लम्बी गली—वह एक-दूसरे अनन्त की ओर जाती है।

ये दोनों एक-दूसरे की विरोधी हैं; एक-दूसरे को काटती हैं।

बस, वे सिर्फ यहां इस द्वार पर ही मिलती हैं और वह द्वार है वर्तमान का यह क्षण।

इसे आसान मत समझ, वरना मैं अपने कंधे से तुझे नीचे उतार दूंगा।

ओ मेरे चारों ओर खड़े हुए साहसी लोगो, सुनो ! मैं तुम्हारे सामने यह पहेली रखता हूं। बताओ यह कौन है, जिसके कण्ठ में सांप घुस गया है ?

वह मैं हूं और अब मैंने उस सांप को काट लिया है और अब मेरा कायाकल्प हो रहा है। मैं वह होता चला जा रहा हूं, जो नहीं था।

४. अनचाहा आनन्द

भटकाव और चुनौती की कटुता लिए ज़रथुष्ट्र समुद्र यात्रा करता रहा। जब वह अपने द्वीप से चार दिन की यात्रा तय कर चुका, तो उसका दर्द थम गया। तब आत्मविश्वास के साथ ज़रथुष्ट्र अपने-आप से बोला:

अब मैं फिर अकेला हूं और यह अच्छा लग रहा है।

एक शाम मेरे दोस्त मुझे मिले थे। एक और शाम वे दुबारा मिले। इस बीच मैंने अकेलेपन का दर्द सहा और अब वह दर्द शान्त हो गया है।

स्वर्ग से पृथ्वी की ओर बढ़ रहा आनन्द ऐसी आत्मा की तलाश मे था जिसमे वह अच्छी तरह रह सके। मेरी आत्मा में उस आनन्द के उतरने के बाद अब दिन थम गया है, अंधेरा नही आएगा।

देखो, मैंने एक चीज़ कभी नही छोड़ी। मैं हमेशा अपने विचारों की नयी पौध लगाता रहा हूं। यही मेरी सबसे बड़ी आशा है।

अब मैं अपना काम आधा खत्म कर चुका हूं और इसे ही अपनी सन्तति के रूप मे छोड़ जाना चाहता हूं।

मेरे अतीत का मकबरा फट रहा है और उसमे दफ़न मेरे दर्द ऊपर आ रहे है। मकबरे की पुरानी लिखावट मुझसे कहती है—वक़्त आ गया है।

मुझे पता नही चला कि वक्त आ गया है। मुझे उसके आने का अहसास तब हुआ जब आकाश मेरे सामने से हट गया। देखो, आनन्द मेरे पीछे भाग रहा है!

५. सूर्योदय से पहले

ज़रथुष्ट्र अपने दुर्भाग्य का इन्तज़ार कर रहा था। सारी रात वह इन्तज़ार करता रहा। रात खामोश थी। सुबह ज़रथुष्ट्र अचानक हंस पड़ा। बोला :

देखो, मेरे पीछे खुशी भागकर आई। मैं औरत के पीछे नहीं भागता इसीलिए खुशी भागकर आई, क्योंकि खुशी भी एक औरत है।

ओ आकाश! मैं तुम्हारे अन्तराल को देखकर अपने अन्दर एक दिव्य कामना उभरती महसूस करता हूं।

मैं तुम्हारी ऊंचाई तक पहुंचना चाहता हूं। ईश्वर सुन्दरता को छुपाता है, इसीलिए उसने तुम्हें सितारों से ढक दिया है।

मैं तुम्हारा शुरू से ही दोस्त हूं। हम दोनों एक ही धरती, एक ही दर्द यहां तक कि एक ही सूर्य को जानते हैं।

हम एक-दूसरे से बात नहीं करते, क्योंकि एक-दूसरे को बहुत गहराई से पहचानते हैं।

अपनी यात्राओं में, अपने अकेलेपन में और पर्वत पर बार-बार चढ़ने की अपनी कोशिश में शायद कहीं मैंने तुम्हें छू लेने की लालसा ही छुपी देखी है।

मुझे तुम पर दाग डालने वाली हर चीज से नफ़रत है, चाहे वे तारे हों या बादल।

मेरे और तुम्हारे बीच कोई भी दूसरी चीज असहनीय होती है।

उस दिन आसमान साफ था, जिस दिन वहां से मेरे ऊपर यह सत्य टपका कि जो आशीष नहीं दे सकता, उसे शाप देना ज़रूर सीख लेना चाहिए।

मेरे अन्तर के आकाश में सत्य का यह एक सितारा गहरे अंधेरे में भी स्थिर होकर चमकता रहता है।

देखो, उन्होंने तो हर चीज में अपनी समझ की मिलावट

रखी है। हर चीज गन्दी कर रखी है।

ओ मेरे ऊपर के आकाश! ओ शून्य, सिर्फ़ तुम्हीं शुद्ध हो यहां, पवित्र हो। ओ आकाश! सूर्योदय से पहले तक तुम्हीं मेरी खुशी हो। लो, सूरज निकलने वाला है। आओ हम एक-दूसरे से विदा लें।

६. बौनी मर्यादाएं

द्वीप पर लौटकर जरथुष्ट्र सीधा अपने पहाड़ पर नहीं गया। वह जगह-जगह घूमकर हर चीज को देखता-परखता रहा। आखिर उसने अपने-आप से मज़ाक में कहा :

देखो, यह नदी घूम-घामकर अब उस तरफ़ बह रही है जहां से निकली थी।

जरथुष्ट्र जानना चाहता था कि उसकी अनुपस्थिति में लोगों ने क्या किया। वे बड़े हो गए या छोटे। एक जगह उसने नये बने मकानों की एक कतार देखी तो उसने कहा :

इन मकानों का क्या मतलब है? लगता है किसी शरारती बच्चे ने अपने खिलौनों के डिब्बे से निकालकर इन्हें यहां रख दिया है।

शायद अभी कोई दूसरा बच्चा आएगा और वह इन्हें वापस उसी डिब्बे में रख देगा।

जरथुष्ट्र थोड़ी देर खड़ा सोचता रहा फिर उसने कहा :

हर चीज यहां छोटी हो गई है। हर जगह दरवाजे और नीचे हो गए हैं।

अब मैं कब ऐसे मकान में पहुंचूगा, जहां झुककर अन्दर न जाना पड़े?

इसके बाद जरथुष्ट्र ने लोगों को बताया कि मर्यादाएं भी इसी तरह छोटी और बौनी हो जाती हैं। उसने कहा :

मैं लोगों के बीच से गुजरता हूं और आंखें खुली रखता हूं। मैं उन लोगों के सद्गुण नहीं अपनाता इसके लिए वे मुझसे नाराज हैं।

वे मुझसे बेहद नाराज़ हैं, क्योंकि मैंने उन्हें बता दिया है कि छोटे आदमियों के लिए छोटी मर्यादाएं ही ज़रूरी होती हैं।

नाराज़ लोग आग के चारों ओर बैठकर कहते हैं—देखो, यह भयानक आदमी और क्या विपत्ति लाता है। ज़रूर अब प्लेग फैलेगा। अपने-अपने बच्चों को बचाकर रखो।

उन्हें बौनी मर्यादाओं से डर नहीं लगता। उनके साथ वे सहज ही हिलमिल जाते है।

अपने मन में वैसे वे सिर्फ एक बात ही चाहते हैं कि उन्हें कोई चोट न पहुंचाए। हालांकि वे इसे सद्गुण मानते हैं मगर यह दरअसल कायरता है।

मैं उनके बीच से गुज़रा और मैंने अपने कुछ शब्द वहां गिरा दिए। उनकी समझ में नहीं आया कि वे उन शब्दों को फेंक दें या वहीं पड़ा रहने दें।

तब मैंने उन्हें ललकारकर कहा : तुम अभिशप्त हो कि कायर हो? ज़रथुष्ट्र का कोई ईश्वर नहीं इसलिए वह बुरा नहीं है।

मैं ईश्वरहीन हूं इसीलिए सच कहता हूं और सत्य को तुम्हें भी सुनाता हूं।

अगर मेरे शब्द बेकार गए तो तुम अपने छोटे-छोटे सद्गुणों और नन्हे-नन्हे गुनाहों के साथ नष्ट हो जाओगे।

७. गुज़रते हुए

इस तरह बहुत-से शहरों और अनगिनत लोगों के बीच से गुज़रते हुए टेढ़े-मेढ़े रास्तों से होता हुआ ज़रथुष्ट्र पहाड़ पर अपनी गुफ़ा में लौट आया। यहां अचानक ही उसे बड़े शहर का फाटक अपने सामने दिखाई पड़ा। अभी वह उसकी ओर देख ही रहा था कि एक उत्तेजित मूर्ख उसकी ओर हाथ बढ़ाकर झपटा।

लोग इस मूर्ख को ज़रथुष्ट्र का बनमानुष कहते थे। उसने ज़रथुष्ट्र से थोड़ी-थोड़ी समझ ले ली थी। नज़दीक आकर उस मूर्ख ने कहा :

ओ ज़रथुष्ट्र ! देखो यह रहा महानगर । यहां तुम्हें मिलेगा कुछ नहीं, तुम अपना सब कुछ खो भले दोगे ।

क्यों अपने पैर थकाते हो ? इस द्वार पर थूक दो और यहां से वापस चले जाओ ।

यहां हर महान् संवेदना सड़ने लगती है और लोग हर अच्छे विचार को उबालकर पिचपिचाकर देते हैं ।

ज़रथुष्ट्र ने उस उबलते हुए मूर्ख का मुंह बन्द करके खामोश कर दिया और कहा :

बहुत हो चुका । अब बकवास बन्द करो । तुम कीचड़ के पास इतने दिन क्यों रहे कि तुम आखिरकार खुद एक मेंढक बन गए ?

तुम्हारी इस चेतावनी से मुझे सख्त घृणा है । यह चेतावनी तुमने खुद अपने-आप को क्यों नहीं दी ?

यह कहकर ज़रथुष्ट्र महानगर के अन्दर चला गया । वह वहां बहुत-बहुत खामोश था । आखिर अपनी खामोशी तोड़कर उसने कहा :

मुझे वह आग दीख रही है जो इस शहर को निगल लेगी । यही इसकी नियति है । हां, यह समय आने पर ज़रूर होगा ।

ओ मूर्ख ! मैं तुमसे विदा लेते वक़्त यही एक बात कह जाना चाहता हूं कि जहां किसी को प्यार मिलने की आशा न हो, वहां से चले जाना चाहिए ।

ज़रथुष्ट्र ने यह कहा और वह महानगर छोड़कर मूर्ख के पास से गुज़रता हुआ एक ओर निकल गया ।

८. विधर्मी

जहां अब तक हरी-भरी लताएं और कुंज थे, वहां अब सब कुछ सूख चुका है । ज़रथुष्ट्र ने अपने-आप से पूछा :

अब तक मैं अपने छत्ते तक कितना शहद ला सका हूं ?

मैंने देखा था कि वे लोग बड़े उत्साह से ज़िन्दगी की राह पर

दौड़े जा रहे थे, उनके पैर थक चुके है। अब वे जमीन पर रेंग रहे हैं।

कभी वे रोशनी और मुक्ति के लिए कवियो और तितलियों की तरह उड़ रहे थे। अब वे सिर्फ रहस्य के जाल में उलझते जा रहे हैं।

बहुत थोड़े लोग ही होते हैं, जिनका साहस नहीं टूटता। बाकी सब सिर्फ कायर होते हैं।

उन लोगों को गिर जाने दो। उनके लिए अफ़सोस न करो।

जिन्होंने धर्म को तोड़ा है वे अब अपने को पवित्र मानते है। हां, उनमें से कुछ यह स्वीकार करते हुए डरते हैं।

मैं इन डरने वालो की आंखों में झांककर कह सकता हू कि वे कभी भी शिकार बना दिए जायेंगे। उन्हें फिर इबादत करनी पड़ेगी।

इबादत करना शर्मनाक हैं। सबके लिए नही, मेरे और इन जैसे लोगों के लिए।

चूंकि तुम कायर हो इसलिए तुम्हें लग रहा है कि तुम्हारे अन्दर अभी शैतान घुसा हुआ है। वही तुम्हें मजबूर करता है कि तुम इबादत करो। वही कहता है—तुम ईश्वर को स्वीकार करो।

याद रखो तुम रोशनी से डरने वाले लोगों में से हो और तुमसे रोशनी कतराती रहेगी।

अब कुछ लोग तो पहरेदार बन गए हैं। वे रात को 'जागते रहो' की आवाजें लगाते फिरते हैं और चाहते हैं कि पुराना जो कुछ भी है, वह अगर सो रहा हो तो जाग जाये।

पिछली रात मैंने पुरानी बातों के बारे में कुछ शब्द सुने। ये शब्द थके हुए पहरेदार से सुनाई दिए थे।

वे शब्द सिर्फ इतने तक सीमित थे कि लोग अपने बच्चों की देखभाल नहीं करते।

मैं उनकी बात पर जी खोलकर हंसा। मुझे आश्चर्य हुआ कि उन लोगो का क्या होगा जिन्होंने बीसियों ईश्वर खोज रखे हैं और

जिनसे ईश्वर अचानक कह देगा—तुम्हें सिर्फ एक ईश्वर मानने की ही इजाजत है। बाकी ईश्वर मैं खारिज करता हूं।

६. घर की वापसी

रंगीन गाय नामक अपने प्रिय शहर से जरथुष्ट्र को अपनी गुफा तक पहुंचने के लिए दो दिन की यात्रा करनी होती है। जरथुष्ट्र अब अपने घर की ओर लौट रहा था और उसका मन खुशी से झूम रहा था। जरथुष्ट्र ने कहा :

ओ अकेलेपन! मैं बहुत दिन तुमसे दूर जाने कहां-कहां भटकता रहा। अब मैं खुशी-खुशी वापस लौट रहा हूं।

अब तुम किसी मां की तरह मुझे धमकाकर मेरी ओर उगली उठाते हुए कहो : तुम कहां थे ?

ओ जरथुष्ट्र ! मुझे मालूम है कि हजारों लोगों के बीच भी तुम खोए हुए थे, जबकि अकेले होकर भी यहां तुम अकेले नही हो। वहा तुम उपेक्षित थे, यहां एकान्त हो।

ओ जरथुष्ट्र ! उपेक्षित होना और एकान्त होना अलग-अलग स्थितियां हैं। शायद तुम अब यह सीख गए हो।

यहा तुम्हें अस्वीकृति का भय नही महसूस होगा। अब यहां तुम खुलकर बोल सकते हो।

याद है—जब तुम एक लाश लेकर जा रहे थे और तुमने कहा था कि आदमियो की अपेक्षा तुम जानवरों मे रहना पसन्द करोगे ? यही उपेक्षित होने का अहसास है।

तुम्हें याद है—जब तुमने उन्हे शब्द दिए थे और वे चुपचाप बैठे रहे थे ? यही उपेक्षित होने का अहसास है।

जरथुष्ट्र ने अपने आप में खोकर कहा :

ओ अकेलेपन ! तुम मुझसे कितने प्यार से बात करते हो। अब यहां बोलना व्यर्थ है। अब मैं यहां खामोशी से बैठकर इस बात का इन्तजार करूंगा कि वे बीती स्मृतियां गुजर जायें। मैंने अब यही सीखा है।

अब मैं उनकी सांस भी पसन्द नहीं करता।

वहां उन लोगों में जो कुछ भी बोला जाता है, वह सब गलत समझा जाता है।

वहां जो बोलाजाता है उसने आगे की बात बोलने की कोशिश करने लगते हैं लोग।

मैंने वहां रहकर मैंने यह जरूर सीख लिया है कि अपनी अच्छाइयों और अपने सत्य के खजाने की रक्षा मुझे ही करनी होगी।

वहां कब्र खोदने वाले लोग अपने लिए बीमारियों के ताबूत ढोते हैं, उनकी पुरानी मर्यादाओं से बदबू उठती रहती है।

मैं उस गन्ध को कुरेदने के बजाय इन पहाड़ों पर रहना बेहतर समझता हूं।

१०. नये और पुराने विचार

१

जरथुष्ट्र ने कहा :

मैं यहां पुराने टूटे-फूटे खयालों के बीच बैठा हूं। यहां कुछ अधूरे नये विचार भी हैं। मेरा वक्त कब आएगा?

कब वह वक्त आएगा कि मैं इस पर्वत से नीचे जाऊं लोगों के बीच और उनसे बातें करूं।

लेकिन इसके लिए पहले मुझे इशारा मिलना चाहिए कि अब मेरा वक्त आ गया है। अब इस हंसते हुए शेर को बत्तखों के बीच चलना चाहिए। चलो, तब तक मैं अपने-आप से ही बातें करूंगा।

२

जब मैं आदमियों के पास लौटा तो मैंने उन्हें एक पुराने ढोंग पर टिका हुआ पाया। उनका खयाल था कि उनके लिए जो अच्छा

और बुरा है उसे वे बहुत पुराने जमाने से जानते हैं।
उनमें इस बात से खलबली मच गई जब मैंने उन्हें बताया कि तुममें से किसी को भी अच्छे और बुरे के बारे में कुछ भी पता नहीं।
सिर्फ वही आदमी अच्छे और बुरे का निर्माता हो सकता है जो आदमी की मंजिल की रचना कर सके और दुनिया को उसका अर्थ और भविष्य दे सके।

यही मुझे वह रास्ता मिला, जहां से मैंने अपना शब्द "महामानव" उठाया। यही समझा कि आदमी को अपने से ज्यादा कुछ बनना चाहिए।

मैंने लोगों को नये सितारे दिखाए। नयी बातें समझाईं। मैंने उन्हें यह बताया कि मैं किसी धारणा को कैसे कविता में बदलता हूं।

किसी संगीतकार, कवि, समस्या सुलझाने वाले और अवसरवादिता से लोगों की रक्षा करने वाले के रूप में मैंने उन्हें भविष्य बनाना सिखाया।

देखो, यह रहा नया विचार! लेकिन इसे कौन उठाकर लोगों की आत्मा की आदिमों तक ले जाएगा?
आदमी को अपने से आगे बढ़ना होगा। इसके कई तरीके हैं। सिर्फ कोई मसखरा ही इसे आसान मानेगा।

जो किसी पर अनुशासन नहीं कर सकते, दूसरों की हुकूमत में जीते हैं। कुछ ही लोग हैं, जो अपना नियमन स्वयं करते हैं।

जो सभ्यता को आगे ले जाने मे पहला होता है, उसे ही अपनी बलि देनी होती है। संयोग से मैं पहला हूं।

पुरानी मूर्तियों के पूजक अपने रहस्यों की वेदी पर हमारी बलि देते हैं और हम रक्त से लथपथ वहां सूखते रहते हैं।

हमारे विचार चूंकि ताजे और नये होते हैं, इसलिए पुजारियों को वे ताजे नन्हे बकरे के गोश्त की तरह अच्छे लगते हैं।

यही हमारे जैसे लोगों की नियति है और हमें ऐसे लोगों से ही प्यार है, जो इस तरह मरने से कतराते नहीं।

६

पानी के दोनों ओर बांध हों और किनारों पर मजबूत दीवारें खड़ी कर दी गई हों, तो उन लोगों को मेरी इस बात पर यकीन नहीं आएगा कि यहां सबकुछ गड़बड़ी में पड़ गया है।

आम आदमी भी उठकर मुझे चुनौती देगा, क्या गड़बड़? कैसी गड़बड़? देखते नहीं पानी दोनों ओर के बांध के बीच कितनी आसानी से बहता जा रहा है।

वह कहेगा—सब कुछ तो ठीक है, क्योंकि बांध मजबूत है। सारे मूल्य, सारे पाप और पुण्य सही दशा में है।

मगर जरा ध्यान से देखो, जिसे तुम बांध कहते हो वही है गड़बड़ी, क्योंकि वह मुक्ति को कैद करके रखता है।

७

एक पुराना वहम है—पाप और पुण्य। इसी के चारों ओर भविष्य बताने वाले पुजारी और ज्योतिषी चक्कर काटते हैं।

कभी लोग इन्हीं ज्योतिषियों में आस्था रखते थे और

लिए वे भाग्यवादी थे—जो होना है वही तुम करोगे। अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं कर सकते।

और तब वह आया जिसे इनपर आस्था नहीं थी और उसने कहा : मुक्ति हर कहीं संभव है। तुम्हरी इच्छाशक्ति ही तुम्हारे कर्म को नियंत्रित करती है।

८

कभी जो यह कहते थे कि तुम चोरी मत करो, हत्या मत करो उनके आगे जूते उतारकर तुम आदर से सिर नवाते थे।

मैं तुमसे पूछता हूं—क्या ये वही लोग नहीं हैं, जिन्होंने तुम्हें लूटा है और तुम्हारी हत्या कर दी है? ओ भोले लोगो! मैं कहता हूं, तोड़ दो! पुरानी इमारत मिटा दो।

९

मेरे दोस्तो, मैं तुम्हें महानता की एक नयी परिभाषा देना चाहता हूं। उसे लेकर तुम्हारा स्रष्टा जाग उठेगा। तुम नयी जमीन तोड़कर नये बीज उगा सकोगे।

महानता वह नहीं है जिसे अक्सर तुम व्यापारियों से खरीदते रहे हो।

इस नयी महानता को हाथ में लेकर तुम इस लायक बन सकोगे कि अपने-आपसे आगे जा सको। मैं तुम्हें नये शब्द दूंगा।

१०

आज भी एक पुराना विचार लोगों में घर किये हुए है : जीना निरर्थक है। सब कुछ व्यर्थ है। जीना बस सिर्फ़ जलते हुए राख हो जाना है। इस तरह की बातें बुद्धिमानी में गिनी जाती हैं। पुरानी

किताबें ऐसी बचकानी बातों से भरी पड़ी हैं।

तोड़ दो, तोड़ दो ऐसे विचारों को !

११

लोग कहते हैं कि जो पवित्र है, उसके लिए हर चीज़ पवित्र है। मैं कहता हूं—कुत्ते के लिए हर चीज मे कुत्तापन भरा हुआ है।

इबादत करने वाले सिर झुकाकर कहते है—सारी दुनिया में गन्दगी भरी हुई है।

इन लोगो के लिए हर आत्मा अपवित्र है, क्योंकि वे दुनिया को सामने से नही पीछे से देखने के आदी हैं।

उन लोगों से मै कहता हूं—आदमी जैसी ही यह दुनिया भी होती है और उसके पीछे भी भद्दापन होता है।

दुनिया में गन्दगी है, यह सच है लेकिन दुनिया खुद एक गन्दा दैत्य नही है।

१२

कुछ लोग अंधेरी गलियो मे छुपे हुए एक-दूसरे को समझाते हैं—जो बहुत कुछ सीख जाता है वह असली बातें भूल जाता है। यह नयी बात मैं तुम्हें बताना चाहता हू।

बहुत ज्ञान सिर्फ थकाता है, देता कुछ नही। इस नये विचार को बाजारो मे लटका दो।

विचारो पर विचार लोग खाते चले गए। यहां तक कि अब लोगों का पेट खराब हो गया है।

१३

लो, यहा वह नाव खड़ी है। यह नाव एक विराट् शून्य की ओर

ले जाती है। कौन सन्देह की इस नाव पर चढ़ेगा?
तुम लोग आज भी जहां थे वही चिपके रहना चाहते हो।

१४

कुछ बड़ी बातें इसलिए पैदा हुई थी कि लोग उनसे आगे सोचते-सोचते थक चुके थे।

कुछ बड़ी बातें इसलिए सामने रख दी गई थी कि लोग आलसी थे और उनके अलावा कुछ सोच नहीं सकते थे।

हालांकि ये दोनों विचार एक जैसे ही हैं लेकिन इनके निर्माता चाहते हैं कि दोनों अलग-अलग समझे जाएं।

१५

मैंने अपने आसपास एक दायरा बना लिया है। पहाड़ों की इन ऊंचाइयों पर शायद ही कभी कोई आता हो।

मेरे दोस्तो! जब भी मेरे पास पहाड़ पर आओ तो ध्यान रखो! कहीं तुम्हारे साथ कोई परोपजीवी प्राणी न आ जाये, जिसकी आदत होती है दूसरे के विचारों पर अपना घर बनाना।

यह परोपजीवी बड़ा चतुर होगा। जहां मौका पाएगा तुम्हारी यात्रा को अपनी यात्रा बना देगा।

वह वहीं अपना घोंसला बनाता है, जहां दूसरों को कमजोर और भला और सीधा पाता है।

१६

ओ मेरे दोस्तो! मैं निर्मम हो गया हूं। मैं धक्का देने में विश्वास करने लगा हूं। तुम मुझे उड़ना नहीं सिखा सके, मैं तुम्हें गिरना सिखा रहा हूं।

जहां कहीं भी देखो आज सब कुछ सड़ रहा है, टूट रहा है। मैं इसे एक और ठोकर देना चाहता हूं।

तुमने चट्टान को लुढ़काने के बाद उसको नीचे गिरते देखने का आनन्द कभी महसूस किया है? देखो, वे लोग अब किस बुरी तरह मेरी गहराइयों में लुढ़कते हुए गिर रहे हैं।

१७

देखो, जो यह समझ गया है कि पुराने विचारों की दुनिया कैसे पैदा हुई वही आखिर में इस बात की तलाश भी शुरू करता है कि नया भविष्य कैसे बनेगा।

जल्दी ही वह दिन आएगा मेरे दोस्तो! जब नया आदमी पैदा होगा और नये विचारों के स्रोत फूटेंगे।

जब ज्वालामुखी फटता है, तो वह हमारे विचारों को हिलाकर रख देता है, हमारे घर गिरा देता है; लेकिन साथ ही वह धरती के अन्दर से बिलकुल नये रहस्य उगल देता है।

मानव समाज नयी खोज का एक प्रयत्न है।—मैं यही सिखा सकता हूं।

१८

मानव-जाति के लिए सबसे बड़ा खतरा क्या है? क्या *अच्छाइयां और नीतियां ही सबसे बड़ा खतरा नहीं हैं?*

दुनिया का सबसे बड़ा नुकसान अच्छाइयों ने किया है।

दुनिया का सबसे बड़ा नुकसान नीतियों ने किया है।

अच्छे और नीतिवान् आदमी की बुराई यह है कि वह अपने-आपको मुक्त होकर समझ नहीं सकता। अच्छाइयों और नीतियों के कब्जे में उनकी चेतना बन्द रहती है।

यही वे लोग हैं, जो उनके सामने लटके तख्ते पर पुरानी इबारत

मिटाकर कुछ नया लिखने वालों को सलीब पर लटका देते हैं। इस तरह ये हमेशा नये भविष्य को सूली पर चढ़ाते रहते हैं।

१६

लो, तुम भाग रहे हो। तुम डरे हुए हो। तुम्हें मेरे नंगे शब्दों से कंपकपी छूटती है।

याद रखो, मैं कहता हूं, अपनी नीतियों के पुराने आलेख तोड़ दो। मैं तुम्हे गहरे सागर तक ले चलूंगा।

अच्छाइयों ने तुम्हें तट पर खड़े रहना सिखाया है। मैं तुम्हे यात्रा सिखाऊंगा।

अच्छाइयों और नीतियों की धरती छोड़कर आओ मैं तुम्हें उस द्वीप पर ले चलू, जहां तुम्हें आदमी मिलेगा। वही द्वीप हैं, जिसे 'आदमी का भविष्य' कहा जाता है। आओ, हम और तुम मिलकर उस नये द्वीप की यात्रा करें।

२०

ओ मेरी इच्छाशक्ति ! तुम हर छोटी जीत के लालच से मेरी रक्षा करो।

ओ इच्छाशक्ति ! तुम्हें ही मैं अपनी नियति मानता हूं। अब तुम मुझे सबसे बड़ी और अन्तिम घटना के लिए तैयार करो।

ओ मेरी इच्छाशक्ति ! अब मुझे छोटी-छोटी विजय यात्राओं से बचाकर अन्तिम, महाविजय की महायात्रा के लिए तैयार करो।

११. दूसरा मृत्युगीत

एक दिन जरथुष्ट्र को पशुओं ने घेर लिया। उनके पास बहुत-से सवाल थे। उन्होंने जरथुष्ट्र से कहा कि वह नीचे न जाये, यहीं अपनी गुफा में रहे।

जरथुष्ट्र को बहुत तकलीफ़ हुई और वह दर्द से बेहोश हो गया। सात दिन पशु उसे घेरे रहे। आखिर जब वह जागा, तो उसने कहा :

तुम ठीक कहते हो। अब मैं यहीं रहूंगा।

जरथुष्ट्र यह कहकर खामोश हो गया। पशु उसे घेरे इन्तजार करते रहे। उन्होंने सोचा, जरथुष्ट्र सो गया है। मगर उसके अन्दर का गिद्ध और सांप छटपटाने लगा था। अब उसकी आत्मा की जबान खुल गई थी। जरथुष्ट्र ने कहा :

ओ जीवन ! मैंने अभी तुम्हारी आंखों में झांका। तुम्हारी काली आंखों में सोने की जैसी चमक थी।

मैंने लहरों पर थपेड़े खाता, डूबता, उतराता, भीगता और बहता हुआ एक सुनहला लट्टा देखा।

तुमने मुझे अपने नन्हे हाथों से जरा-सा छुआ था और लो मेरे कदम नृत्य की गति से थिरकने लगे है।

मेरी एड़ियों की ताल को मेरे अंगूठे ने सुना। यह कैसे हुआ है कि अंगूठे के कान उग आए हैं।

तुमने अपनी कटीली आंखों से मुझे कटीली गति दे दी है। मैं तुम्हारी तरफ हाथ बढ़ाता हूं, तो तुम पीछे हट जाती हो। मैं पीछे हटता हूं तो वापस मुड़कर मेरी ओर देखती हो।

तुम निकट हो तो मुझे डर लगता है और दूर हो तो प्यार आता है।

मैं तुम्हारे कदमों पर नाचता हुआ आगे बढ़ रहा हूं। तुम कहां हो? मुझे अपनी उंगली का स्पर्श दो।

यहां गहन गह्वर हैं। मैं उनमें भटक सकता हूं। ठहर जाओ। क्या तुम्हें चारों ओर से झपटते चमगादड़ नहीं दिखाई दे रहे?

यह बिना सहारे का नृत्य एक शिकार है। तुम मेरे साथ शिकारी कुत्ते की तरह चलोगी या तुम्हीं मेरा शिकार बनोगी?

क्या अब तुम्हें थकावट हो रही है? आओ, अब मैं तुम्हें ले चलूं।

२

जीवन थोड़ा ठिठककर जरथुस्त्र की ओर घूमा। उसने कहा :

जरथुस्त्र, इतनी जोर से कोड़ा मत पटको। आवाज से विचार मर जाया करते हैं।

हम दोनों ने पाप और पुण्य के परे अपने इस हरे-भरे द्वीप की खोज कर ली है। हम लोग अकेले हैं, हम दोनों दोस्त रहेंगे।

जीवन के चेहरे पर थोड़ी उदासी आ गई। उसने इधर-उधर देखकर फिर कहा :

जरथुस्त्र, तुम अब मुझे उतना प्यार नहीं करते। मुझे मालूम है कि जल्दी ही तुम मुझे छोड़ जाओगे।

मेरे और तुम्हारे बीच एक घड़ी है। वह तुम्हें वक्त बताने लगी है।

आधी रात को जब यह घड़ी बारह बजाती है, उस वक्त तुम सोचते हो कि वह वक्त आ गया जब तुम मेरा साथ छोड़ दो।

जरथुस्त्र संकोच से भर गया। उसने धीरे से कहा :

हां, लेकिन तुम्हें भी तो इसका पता है।

जरथुस्त्र और जीवन ने एक-दूसरे की ओर देखा। हरी-भरी कुंजों के ऊपर से सर्द शाम धीरे-धीरे गुजर रही थी। वे दोनों रो पड़े और देर तक रोते रहे। जरथुस्त्र ने सोचा—आज जीवन मुझे जितना प्रिय हो गया है, उतना कभी नहीं था।

३

जरथुस्त्र ने कहा :

लो, घड़ी आगे बढ़ रही है वक्त के साथ।

एक

ओ आदमी! ध्यान दो।

दो

सुना, आधी रात का वक़्त क्या कह रहा है?

तीन

"मैं अपनी नींद सो चुका हूं—

चार

"गहरे सपने से मैं जागा और मैंने याचना की—

पांच

"दुनिया बहुत गहरी है,

छह

"जितना उसे यह संसार समझता था, उससे कहीं ज्यादा गहरी।

सात

"दुनिया का दर्द भी गहरा है—

आठ

"लेकिन आनन्द उस दर्द से भी गहरा है।

नौ

"दर्द कहता है : तुम चले जाओ ! जाओ, अभी !

दस

"लेकिन आनन्द को अनन्त की खोज है—

ग्यारह

"उसे गहरी, स्थायी अनन्तता चाहिए !"

१२. सात बातें

जरथुस्त्र ने कहा :

अभी तक मुझे ऐसी औरत नहीं मिली जिसके साथ मैं बच्चे पैदा करूं । ओ अनन्त ! मुझे तुमसे ही प्यार है और तुम्हीं से मैं वंश चला सकता हूं ।

मैं गिरजाघरों के साथ ईश्वर की कब्र से भी प्यार कर सकता हूं । शर्त यही है कि ईश्वर गिरजाघरों की टूटी छतों से कुछ शुद्ध आंखों से नीचे देखने की कोशिश करे ।

यह धरती दैवी इलहामों की इबादतों से भरी पड़ी है । जहां मैं इस पर एक नया शब्द लिखता हूं यह कांपने लगती है ।

मैं चाहता हूं मेरी सामर्थ्य दूरियों और नजदीकियों को इकट्ठा कर दे, आग और आत्मा, सुख और दुख, कोमलता और तिक्तता को एकसाथ ला खड़ा करे ।

मैं खुशी से चीखना चाहता हूं : देखो, दीवारें टूट गई हैं और मैं मुक्त हो गया हूं ।

मैं धूर्तता और कपट की हंसी हंसता हूं क्योंकि दूसरी हर हंसी में पाप लिथड़ा हुआ दिखाई देता है ।

शब्द उनके लिए होते हैं, जो वजन सह सकते हैं । हलके लोगों के लिए शब्द व्यर्थ हैं ।

जरथुष्ट्र ने कहा

चौथा खण्ड

१. मीठा बलिदान

जरथुष्ट्र अपनी गुफा के बाहर पत्थर पर बैठा रहा और महीने और साल गुजरते रहे। एक दिन वह चुपचाप उसी पत्थर पर बैठा शून्य की ओर दूर देख रहा था। तभी तमाम जानवर चारों ओर से आए और उसे घेरकर बैठ गए। जानवरों ने कहा :

ओ जरथुष्ट्र ! क्या दूर तुम अपनी खुशियों की तरफ देख रहे हो ?

जरथुष्ट्र ने कहा :

अब वे खुशिया मेरे किस काम की है ? खुशियों की खोज मैंने कब की बन्द कर दी। अब मैं सिर्फ़ काम करना चाहता हूं।

जानवरों ने कहा :

यह तुम क्यों कह रहे हो जरथुष्ट्र ? क्योंकि तुमने तो काम ही काम किया है। क्या तुम झूठ नहीं बोल रहे ?

जरथुष्ट्र ने खीझी मुस्कराहट के साथ कहा :

ओ पाजियो ! मेरी खुशी हल्की नहीं है कि लहरों के साथ दूर चली जाय। वह भारी है और मेरे पास ही रहती है।

एक बार इसी तरह वे जानवर फिर जरथुष्ट्र के पास आए और उसे चारो ओर से घेरकर बैठ गए। उन्होंने कहा :

ओ जरथुष्ट्र, तुम्हारे बाल अब सफेद हो रहे हैं।

जरथुष्ट्र ने मुस्कराकर कहा :

यह तो होता ही है। क्या तुम लोग भी पहाड़ की ऊंचाइयों तक नहीं पहुंचना चाहोगे ? मैं आज वहां जाऊंगा। देखो वहां अच्छा, ताजा, मीठा शहद तैयार रखना। मैं शहद की आहुति दूंगा।

यह कहकर जरथुष्ट्र पहाड़ की चोटी पर पहुंचा लेकिन वहां वैसे ही अकेला था। तपस्वियों वाले वे तमाम जानवर वहां . .

जरथुष्ट्र अपने-आप मे खुश होता हुआ बोला :

अच्छा ही हुआ कि मैंने शहद की आहुति की बात उनसे कह दी थी। अब वे यहा नही आएगे और मैं फिर अकेला हूं। अब उनकी ग़ैरहाजिरी मे मैं मुक्त होकर अपनी बातें कह सकता हूं।

दरअसल मैंने जिस शहर की बात की वह तो शिकारी का चारा था, जिसे देखकर लालची शिकार जाल में फंसता है।

मैंने अपनी खुशियों का चारा पूरब से पश्चिम तक सारी दुनिया के सामने फेंका और देखता रहा कि वे उस चारे को खाते हैं या नही।

मैंने अपनी खुशियां उनके बीच छोड़ दी, यह देखने के लिए कि वे उनसे दूर भागते हैं या उन्हें अपनाते हैं।

मैंने उन्हे ललकारा : तुम जो हो वही हो जाओ।

अब लोग मुझ तक आ रहे हैं। अब वक्त आ गया है कि मैं उनसे मिलने जाऊं। मुझे उनके बीच जाना ही होगा।

२. संत्रास की चीख

अगले रोज जरथुष्ट्र फिर अपनी गुफा के आगे पत्थर पर बैठा हुआ था। जानवर दुनिया मे घूम रहे थे ताकि वे नया भोजन और नया शहद खोजकर ला सकें। जरथुष्ट्र अपने हाथ के डण्डे से अपनी छाया को टटोल रहा था और कुछ सोच रहा था। सहसा वह चौंक पड़ा। चौंककर पीछे खिसक गया। उसने देखा, उसकी छाया के करीब एक और छाया दीख रही है। उठ खड़ा हुआ जरथुष्ट्र। तब उसने देखा, वहां उसके पीछे एक ज्योतिषी खड़ा है। यह वही ज्योतिषी था, जो दुनिया को असार कहा करता था। मगर अब उसका चेहरा बदल गया था। जरथुष्ट्र ने उसे देखा और दोनों ने एक-दूसरे को परखा। थोडी देर बाद दोनो ने अपने-आप पर थोड़ा नियंत्रण किया। थोड़ा-सा आगे बढ़कर जरथुष्ट्र और उस भविष्यवक्ता ने एक-दूसरे से हाथ मिलाया। यह इस बात का आश्वासन कि दोनों ने एक-दूसरे को पहचान लिया है। आख़िर ज्योतिषी ने

ओ बूढ़े आदमी ! लोग तुझे जरथुष्ट्र कहते हैं। मगर अब ज्यादा दिन तू इस धरती पर नही रहेगा।

जरथुष्ट्र ने व्यंग्य से कहा :

मैं सिर्फ धरती पर कहां हूं ? मेरे चारों ओर लहराता हुआ समुद्र भी है।

ज्योतिषी ने कहा :

वहम में मत रहो जरथुष्ट्र ! यह शरीर बहुत दिन ऊंचाइयों की खाक छान चुका। समुद्र की लहरें द्वीप के किनारे उछाल ले रही हैं। वे इस शरीर को भी ले जायेंगी।

इसी बीच एक हिलोर आई और सारी घाटी में एक चीख गूंज गई। जरथुष्ट्र ने कहा :

ओ अशुभ बोलने वाले ! इस चीख को सुन, यह आदमी की चीख है लेकिन अब मैं उस पर ध्यान नही देता। मैंने अन्तिम पाप अपने लिए बचा रखा है। तुझे मालूम है वह क्या है ?

ज्योतिषी ने कहा :

तुझ पर दया आ रही है क्योंकि मैं तुझसे वही आखिरी पाप पूरा कराने आया हूं।

इसी बीच उससे भी भयानक चीख गूंज गई। चीख की तरफ ध्यान दिलाकर ज्योतिषी ने कहा :

इसे सुना ? यह तेरी चीख है जरथुष्ट्र ! अब तू मेरे साथ आ, तेरा वक्त आ गया है।

जरथुष्ट्र खामोश हो गया। वह थोड़ा घबरा गया। थोड़ी-सी हिचक के साथ उसने पूछा :

लेकिन यह मुझे कौन बुला रहा है ?

ज्योतिषी ने कहा :

तुझे मालूम है फिर भी तू पूछ रहा है। यह उच्चतर मानव है जो तुझे बुला रहा है। तू यहां अकेलेपन की गुफाओं में अपनी खुशियों का भार ढो रहा है। बस, अब तुझे तेरा महामानव बुला रहा है।

जरथुष्ट्र ने चीखते हुए कहा :

ओ ज्योतिषी ! तू यहां से चला जा। मैं खुद खोजूंगा। जहां से भी महामानव की वह चीख आई है, मैं उस जगह को खोजगा।
अरे, मुझे विश्वास नही हो रहा ? मैं भी ज्योतिषी हू।

३. राजाओं के साथ बातचीत

जरथुष्ट्र करीब एक घटा जंगलो और पहाड़ो मे घूमता रहा। तभी उसने देखा उधर से एक जुलूस निकल रहा है। आगे-आगे राजसी पोशाक मे ताज पहने हुए दो राजा चल रहे थे। उनके आगे एक बोझ से दबा हुआ गधा चल रहा था। इस विचित्र जुलूस को देखकर जरथुष्ट जल्दी से एक झाड़ी के पीछे छिप गया। उसने अपने-आप से कहा :

ये राजा मेरे राज्य मे क्या करने आए है ?

जब राजा जरथुष्ट्र के करीब पहुंचे तो जरथुष्ट्र ने कहा :

कितनी हैरत की बात है। दो राजाओ के साथ गधा एक ही है।

दाहिनी ओर के राजा ने मुस्कराकर कहा :

ऐसी बात सोची हमने भी है, कही कभी नही। यह बात किसने कही ?

बायीओर के राजा ने कहा :

ऐसी बातें सोचना या कहना असम्यता होती है और हम सभ्य हो चुके हैं। हमे किस बात की चिन्ता ?

इसके बाद दोनों राजाओ मे सभ्यता के सवाल को लेकर देर तक झगड़ा होता रहा। दोनो एक-दूसरे को ग़लत साबित करते रहे। तब जरथुष्ट्र सहसा झाड़ी से बाहर आ गया। उसने आगे बढकर कहा:

जरथुष्ट्र ही एक ऐसा है, जो तुम्हें हमेशा सही बात बताएगा। तुमने अभी ठीक ही कहा कि राजाओं को किस बात की चिन्ता ? मैं भी यही कहा करता था।

यह मेरा इलाका है। तुम मेरे इलाके मे आखिर खोज क्या रहे हो ? तुम्हें एक रास्ता शायद पहले से ही मिला हुआ है; लेकिन मैं वह रास्ता खोज रहा हूं, जो उच्चतर मानव तक मुझे पहुंचा दे।

राजाओं ने एक स्वर से छाती ठोंककर कहा :

हमें तो लोग उच्चतर मानव के रूप में पहले ही स्वीकृति दे चुके हैं। और जो हमसे ऊंचा है, उसके लिए यह गधा है। वह इस पर सवार हो जाये।

ज़रथुष्ट्र ने कहा :

तुम्हारी बातों से मुझे बेहद खुशी हुई। इस पर मैं एक कविता अभी तुम्हें सुनाना चाहता हूं :

एक बार
बिना शराब पिए नशे में धुत
साइबिल ने गालियां देनी शुरू कर दीं :
—सब कुछ तबाह हो रहा है।
दुनिया गर्त में जा रही है।

४. जोंक

ज़रथुष्ट्र ख़यालों में डूबा हुआ ककरीले-पथरीले रास्ते पर चलता गया। जो भी गहरी बातें सोच रहा हो, वह इसी तरह खोया-सा दिखता है। तब अनजाने ही ज़रथुष्ट्र का पांव एक आदमी के शरीर से टकराया। उसे बेहद गुस्सा आया। गुस्से से उबलकर गालियां बकता हुआ ज़रथुष्ट्र उस आदमी को अपने डण्डे से पीटने लगा। मगर जल्दी ही वह शान्त हो गया और अपनी गलती पर हंस पड़ा। उसने कहा :

ओ चोट खाए आदमी! मुझे माफ करो और एक दृष्टान्त सुनो। ख़यालों में खोया कोई आदमी चला जा रहा हो और उसका पैर धूप में लेटे कुत्ते पर पड़ जाए।

इस पर दोनों घबरा जायेंगे और एक-दूसरे के ऊपर दुश्मन की तरह झपटेंगे।

लेकिन देखो, सही बात तो यह है कि उन दोनों को एक-दूसरे को देखने के बाद गले मिलना चाहिए।

मैंने तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया। इस

कैसा दुर्भाग्य लेकर आए हो ! पहले तुम्हें एक जानवर ने काट लिया और फिर मैंने तुम्हे अपने डण्डे से घायल कर दिया ।

जब उस आदमी को मालूम हुआ कि जो उससे टकराया था वह ज़रथुष्ट्र है, तो वह बिलकुल बदल गया । उसने कहा :

अब यह मुझे क्या हो गया ? देखो एक यह आदमी है जो मेरे दिल में खून सींचता है और एक प्राणी वह जोक थी, जो अब तक मेरा खून चूस रही थी और मैं कमज़ोर होकर यहां गिरा पड़ा था !

ज़रथुष्ट्र ने उसे उठाया और कहा :

आओ, अब हम एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ लें ।

उस आदमी ने कहा :

मैं आध्यात्मिक नैतिकता का पुजारी हूं और इस दलदल में पड़ा था जहां जोंक मेरा खून चूस रही थी ।

ज़रथुष्ट्र ने कहा :

यह जोक ही तुम्हारा परमार्थ रही है न ।

उस आदमी ने कहा :

तुमसे आज मैंने कितना कुछ सीख लिया । अब मैं सिर्फ इसी बात का इन्तज़ार करूंगा कि मुझसे फिर कोई टकराए ।

५. जादूगर

ज़रथुष्ट्र एक चट्टान के पीछे गया तो उसने देखा, एक आदमी पागल की तरह दोनों हाथ हवा में फटकारकर पेट के बल गिर पड़ा । ज़रथुष्ट्र ने अपने-आप से कहा :

ठहरो, शायद यही है वह उच्चतर मानव जिसकी जबर्दस्त चीख उस दिन मुझे सुनाई दी थी । शायद वह मुसीबत में है । आओ, मैं उसकी मदद करने की कोशिश करूं ।

ज़रथुष्ट्र ने उसे उठाने की कोशिश की तो देखा वह बूढ़ा आदमी था, फटी आंखों शून्य की तरफ देख रहा था । उसे शायद इस बात का नहीं था कि कोई उसके निकट बैठा है । ज़रथुष्ट्र ने उसे उठा-

कर खडा करने की जितनी भी कोशिशें की सभी बेकार रहीं। उसका शरीर ऐंठता और कांपता रहा और आखिर वह मरोड-सी लेकर बडबड़ाने और रोने जैसा लगा :

ओ बादलों के तट पर खडे शिकारी
तुमने थर्राते हुए सर्द
बर्फ के बाण मेरे तलुओं में
चुभो दिए हैं। मैं सर्द हो उठा हूं
मुझे कौन गरमी देगा ?
तुम्हारी उंगलियां गर्म हैं ?
नहीं तो कोयले की अंगीठी सुलगा दो।
ओ अपरिचित ईश्वर !
तुम्हारी विद्युत् से जलकर
मैं अब यहां यातना सहता पड़ा हूं।
और गहरा घाव करो
बहुत गहरा।
तुम्हारा तीर मुड़ा हुआ है
ओ धूर्त ! तुम आदमी की हत्या नहीं करते
उसे यातना देते हो।
ओ अपरिचित ईश्वर !
तुमने मुझे इस यातना के लिए क्यों चुना ?
जाओ, अब चले जाओ
इस सीढ़ी से
अब तुम मेरे अन्तर के रहस्य तक
कभी नहीं उतर पाओगे।
ओ यातना देने वाले,
ओ फांसी देने वाले हत्यारे ईश्वर !
चले जाओ !
अब तुम्हारा यह त्रिशूल

मेरे अन्दर
और गहरे नही धंसेगा
और ज्यादा यातना नहीं दे पाएगा।
ओ अपरिचित ईश्वर !
ओ राह के लुटेरे !
ओ छुपे धूर्त शिकारी !
तुम मुझे शिकार की तरह
कंधे पर लटका कर ले जाओगे
नही तो बदले में कुछ मांगोगे
क्या ?
सोना ?
मांगो, इतना सोना मांगो कि मैं
अपनी असमर्थता में टूट जाऊं।
ओहो !
तो तुम मुझे चाहते हो
मुझे ?
—समूचा मैं ?
अरे, यह किसकी गर्म उंगलियों ने मुझे छुआ ?
किसने मुझे
इस सर्द यातना से बाहर खींचा ?
लो, वह हत्यारा ईश्वर
मेरा सबसे बड़ा शत्रु
मेरा अपरिचित शिकारी
अब भाग रहा है।
नही
भागो मत।
मेरे लिए यन्त्रणा के यंत्र लेकर
लौट आओ।

ज़रथुष्ट्र अब अपने-आप को रोक नहीं पाया। उसने अपना डण्डा उठाया और अपनी पूरी ताकत से इस रोने वाले आदमी को मारा। उसने चीखकर उस आदमी से कहा :

खामोश हो जा! ओ ढोंगी आदमी! झूठे और मक्कार! अब तू खामोश हो जा!

वह आदमी उठकर खड़ा हो गया और बोला :

ओ ज़रथुष्ट्र! ठहर जा। मुझे मत मार। मैं यह सब सिर्फ़ अपने-आप का मज़ा लेने के लिए कर रहा था।

ज़रथुष्ट्र! मुझे यह भी पता चल गया कि तेरा सत्य क्या है और तू उससे कितना जबर्दस्त प्रहार करता है।

ज़रथुष्ट्र ने कहा :

ओ मक्कार! तेरी चापलूसी मुझे खुश नहीं कर सकती। मैं तुझे खूब जानता हूं। कवि और जादूगर दोनों मक्कार होते हैं। कवि बुरी चेतना लेकर आता है और जादूगर बुरा विज्ञान। अब तुम लोग धोखा नहीं दे सकते।

इस पर वह आदमी बिलकुल बदल गया। हंसकर बोला :

ओ ज़रथुष्ट्र! मैं तेरी परीक्षा ले रहा था। मैंने परीक्षा ले ली। तू सही आदमी है। तू ही वह अद्वितीय, सम्पूर्ण नीतिवान, ज्ञान का अधिष्ठाता और महान् है, जिसकी मुझे तलाश थी।

६. सबसे बदसूरत आदमी

ज़रथुष्ट्र बड़ी तेज़ी से दौड़ रहा था—जंगलों और पहाड़ों से गुज़रता हुआ। वह बहुत खुश था। थोड़ी देर के बाद रास्ता एक ओर मुड़ा, क्योंकि वहां एक बहुत बड़ी शिला थी। अब दृश्य बिलकुल बदल गया और ज़रथुष्ट्र मृत्यु के इलाके में खड़ा था। यहां चारों ओर वीरानी थी। एक पक्षी तक वहां नहीं था। काली और लाल, ऊंची-ऊंची शिलाएं खड़ी थीं। यहां कोई प्राणी नहीं आता था। बस, सिर्फ़ एक भारी, हरा और बदसूरत सांप कभी-कभी मरने के लिए आ जाता था। इसीलिए चरवाहे इस घाटी

को 'सांप की मौत' कहा करते थे।

जरथुष्ट्र काली स्मृतियों में खो गया, क्योंकि उसे लगा कि वह यहां दूसरी बार आया है। उसने आंखें मूंद ली थी। दुबारा जब उसने आंखें खोली तो रास्ते के किनारे एक अजीब प्राणी बैठा पाया, जो वैसे तो आदमी जैसा लग रहा था; लेकिन आदमी नहीं था। वह न पहचाना जा सकने वाला कोई प्राणी था। वह ऐसी चीज़ देखना नहीं चाहता था, इसलिए वहां से चलने लगा। तभी वहां की वह वीरानी अचानक बोलने लगी। आवाज़ ने कहा :

ओ ज़रथुष्ट्र ! तुम रहस्यों को भेद सकते हो। मेरे सवाल का जवाब दो। मेरे सवाल का जवाब दो। मेरा सवाल है—मैं कौन हूं?

ज़रथुष्ट्र ने ऊंची आवाज़ में कहा :

मैं तुझे जानता हूं। तूने ईश्वर की हत्या की है। तू सबसे बदसूरत है और तुझे यह बर्दाश्त नहीं होता कि कोई तेरी तरफ लगातार देखे।

उस आवाज़ ने कहा :

ओ ज़रथुष्ट्र ! तुम यहां से मत जाओ। मेरी बदसूरती उनके लिए, दया की पात्र है। अब तुम्हीं हो, जो मुझे आश्रय दे सकते हो।

और अगर जाना ही चाहते हो, तो उस रास्ते से मत जाओ, जिस रास्ते से मैं आया हू। वह रास्ता खराब है।

ओ ज़रथुष्ट्र ! मैं जिस रास्ते से आया हूं, वहां दयालु लोगों की भीड़ थी। वे मुझे भीख और पैसा देना चाहते थे। उसका मैं क्या करता? मेरा धन मेरे पास है; लेकिन वह है मेरी भयानक बदसूरती। ओ ज़रथुष्ट्र ! इसे सिर्फ़ तुमने ही सम्मान दिया है, सिर्फ़ तुमने।

ज़रथुष्ट्र, सुनो। मैंने पाया कि वहां प्यार नहीं होता, जहां दया होती है और जहां दया होती है वहां सृजन भी नहीं होता।

ओ ज़रथुष्ट्र ! तुम सच को ठीक-ठीक पहचानते हो। मैं तुम्हें दयाभाव से होशियार करना चाहता हूं।

और मैं तुम्हें अपने से भी आगाह करना चाहता हूं। उस ईश्वर ने वहां दया फैला दी थी। इसीलिए मैंने ईश्वर की हत्या कर दी।

और ज़रथुष्ट्र ने सोचा :

यही है वह उच्चतर आदमी जिसकी चीख मैंने सुनी थी।

७. छाया

बदसूरत आदमी के पास से लौटकर जरथुष्ट्र अकेला और डरा हुआ महसूस करने लगा। अपने अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए वह किसी की तलाश कर रहा था, तभी उसे एक भिखारी मिला। वह जरथुष्ट्र की प्रशंसा करना चाहता था; लेकिन जरथुष्ट्र उसके चक्कर में नहीं पड़ा। उसने उसे भगा दिया। अभी वह भिखारी वहां से टला ही था कि जरथुष्ट्र को अपने पीछे एक नयी आवाज सुन पडी :

ठहर जाओ जरथुष्ट्र ! यह मैं हू, तुम्हारी छाया !

जरथुष्ट्र ने कहा :

अब बहुत हो चुका। अब मुझे नया पर्वत खोजना चाहिए। अब तो मेरी छाया ही मुझे आवाज देने लगी।

फिर जरथुष्ट्र ने सोचा :

आखिर मैं अपनी ही छाया से क्यों भागू ? उससे क्यों डरू ?

जरथुष्ट्र के रुक जाने पर छाया ने कहा :

जरथुष्ट्र ! मैं तुम्हारी समझ को पसन्द करती हूं। और देखो, तुम्हारे साथ मैंने भी जाने कहां-कहां की यात्राए की है, कितने पर्वत और जंगल लाघे हैं।

मैं हर कही, हर स्थिति में तुम्हारे साथ ही रही हूं। अब जरा बताओ तो, मेरा घर कौन-सा है ?

जरथुष्ट्र ने अपनी छाया की बात सुनी। गंभीर होकर आखिर उसने कहा :

तो तुम मेरी छाया हो। तुम्हारा भय छोटा नहीं है। तुम्हे बहुत संकट झेलने पड़े।

अगर तुम थक गई हो और आराम और सुरक्षा चाहती हो, तो यह रहा रास्ता। इधर से तुम मेरी गुफा तक पहुंच जाओगी।

तुम जाओ। तुम्हारे जाने पर मेरे आसपास चारो ओर यहां रोशनी हो जायगी।

८. दोपहर का ज्वार

और ज़रथुष्ट्र जाने कहां-कहां भागता रहा। आखिर उसे अपने अकेलेपन में आनन्द आने लगा। वह घंटों अच्छी-अच्छी बातें सोचा करता। दोपहर के ज्वार के समय, जब सूरज ठीक ज़रथुष्ट्र के ऊपर चमक रहा था वह एक मरोड़ें खाकर उगे हुए टेढ़े-मेढ़े दरख़्त के पास से गुज़रा। उसके चारों ओर अंगूर की एक लता लिपटी हुई थी जो अंगूरों से लदी हुई थी। उसका मन हुआ कि वह अंगूर का एक गुच्छा तोड़े और खा ले; लेकिन उसकी यह भी इच्छा हुई कि वह उसके करीब लेटकर सो जाये। आखिर वह वहीं सो गया। सोते हुए उसने अपनी आत्मा से कहा :

खामोश रहो। देखो, दुनिया क्या सचमुच पूर्ण नहीं हो गई है? जैसे नन्ही पत्तियों पर हवा नाचती है, उसी तरह मेरी पलकों पर नींद हलके-हलके नाच रही है।

नींद मेरे इतने करीब आ गई है कि अब मेरी आत्मा जाग उठी है।

जैसे समुद्र की लम्बी यात्रा के बाद जहाज़ किसी द्वीप पर आकर ठहर जाता है, नींद भी ठहर गई है। ज़मीन कितनी अच्छी लगती है!

जहाज़ आकर किनारे से चिपक जाता है, उसके बाद उसे वहां रोकने के लिए मोटी रस्सियों की ज़रूरत नहीं होती। सिर्फ़ एक मकड़ी जहाज़ से तट तक एक झीना जाला बुन देती है और वही उसे रोके रखने को काफ़ी होता है।

मैं भी अपने तट पर बहुत महीन सूत से जुड़ा हुआ लेट गया हूं।

खामोश रहना। दोपहर की धूप खेतों में नींद लेने लगी है। उसके आधे खुले हुए होंठों पर आनन्द की एक बूंद ठहर गई है।

ज़रा ठहरो! यह मेरे साथ क्या हुआ? क्या वक्त उड़ गया? क्या मैं नीचे अनन्त के एक कुएं में गिर गया हूं?

और इसके बाद ज़रथुष्ट्र पैर फैलाकर वहीं सो गया। उसे महसूस

हुआ कि वह सो गया। तभी उसकी आत्मा ने कहा :

ओ छोटे मन वाले चोर, जाग ! उठ जा

६. शुभ कामनाएं

शाम गहरा आई थी, जब ज़रथुष्ट्र जाने कहा-कहां भटकने के बाद अपनी गुफा में लौटा। अभी वह वहां खड़ा ही हुआ था कि उससे दस कदम दूर ऐसी घटना हुई, जिसने उसे चौंका दिया : उसने फिर वही यातना-भरी चीख सुनी। आश्चर्य तो यह था कि इस बार वह चीख खुद उसकी गुफा के अन्दर से आई थी।

घबराकर वह अपनी गुफा के अन्दर गया, तो उसने आश्चर्यजनक दृश्य देखा। वहां वे सभी थे, जो उसे सारे दिन की यात्राओं में मिले थे। बाईं और दाईं ओर वाले राजा, जादूगर, भिखारी, छाया, ज्योतिषी, पादरी, गधा, बदसूरत आदमी और इन सबसे घबराया हुआ गिद्ध, जिसके गले में सांप लटक रहा था। गिद्ध उन सबके सवालों के जवाब देते-देते आतंकित हो चुका था। ज़रथुष्ट्र ने यह दृश्य आश्चर्य से देखा। उसने हर एक की आत्मा में झांककर देखा। वे सब आदर से उठकर खड़े हो गए। तब ज़रथुष्ट्र ने कहा :

ओह, तो यह तुम थे, जो हर बार इस तरह यंत्रणा से चीखते रहे थे ? आश्चर्य है—मैंने बिना कोई लालच दिए, तुम्हें यहां तक बुला लिया।

देखो, यही मेरी इस गुफा में है, वृहत्तर मानव—आदमी से बड़ा आदमी।

तुम सबकी मैं इज्जत करता हूं और यहां तुम्हारा स्वागत करता हूं, क्योंकि तुममें साहस आ गया है। अब मेरी दुनिया ही तुम्हारी दुनिया है।

देखो, तुमने मेरी छोटी उंगली पकड़ ली है। अब हाथ भी थाम लो। ज़रथुष्ट्र यह कहकर शरारत से हंसा। तब उसके अतिथियों ने उससे कहा :

इस धरती पर दृढ़ इच्छाशक्ति से ज्यादा मजबूत और ऊंची

चीज़ कोई नही। यह सबसे ऊंचा दरख्त होती है।

अब लोग तुम्हारे रास्ते की तरफ आ रहे हैं। तुम मानवों के बीच ईश्वरत्व के अन्तिम आश्वासन हो।

वे सब आ रहे हैं, जो दुबारा जीने को आशा पाना चाहते हैं।

१०. वृहत्तर मानव

आम तपस्वियों वाली गलती जरथुष्ट्र ने भी की कि पहली बार जब वह बाजार मे आ खड़ा हुआ, तो वहा उसे लगा कि वह सबसे बात कर रहा था, फिर भी कोई नही सुन रहा था। जरथुष्ट्र ने कहा :

शाम को सिर्फ़ नट ही साथी बचा था या फिर लाशें और खुद भी मैं एक लाश हो चुका था।

यह बाज़ार, बाजार की यह भीड़, भीड़ के ये तमाम लोग—ये मेरे किस काम के?

ओ वृहत्तर मानव! मुझसे यह सीख लो कि इस बाजार में वृहत्तरता के मैदान मे किसी को आस्था नहीं।

ओ, वृहत्तर मानव! भीड़ से बचो!

(२)

जानते हो ईश्वर कैसे मरा? ओ वृहत्तर मानव! दरअसल वही सबसे बड़ा खतरा था तुम्हारे लिए।

आज ईश्वर कब्र मे दफ़न है और तुम जिंदा हो गए हो। अब वृहत्तर मानव ही स्वामी होगा।

धीरज रखो! आदमी के भविष्य के पर्वत ने यात्रा शुरू कर दी है। ईश्वर मर गया था अब महामानव जी रहा है।

(३)

होशियार लोग पूछते हैं—आदमी को आदमी कैसे बनाए रखें? जरथुष्ट्र पूछता है—आदमी अपने से आगे कैसे निकलता है?

मेरे लिए मानव नही, महामानव ही सब कुछ है। आदमी में

मुझे इसीलिए आस्था है कि उसके पीछे बहुत कुछ, अपने को छोड़कर आगे निकल जाने के लिए होता है।

ओ उच्चतर मानव ! आगे निकलो। छोटी-छोटी मर्यादाएं, ओछी नीतियों की ढेरियां पार करके, आगे निकलो।

(४)

अब मेरे लिए यही काफी नही कि बादलों से गिरने वाली बिजली कोई नुकसान नही पहुंचाती। मेरा बोध बादलों की तरह गहरा हो रहा है। जिस बोध में बिजली गिराने की क्षमता होती है वह इसी तरह गहराता है।

इन लोगों के लिए रोशनी नही बनूगा। उन्हें रोशनी नहीं दूंगा। मैं उन पर बिजली बनकर गिरूंगा, ताकि वे अन्धे हो जाये।

(५)

अपनी शक्ति से अधिक आगे इच्छाशक्ति मत ले जाओ। जो लोग इच्छाशक्ति को सामर्थ्य से ज्यादा खींचते हैं वे गन्दा झूठ बटोरते हैं।

(६)

अगर तुम्हें ऊपर जाना है, तो अपनी टांगों का इस्तेमाल करो। ऐसा मत चाहो कि कोई दूसरा तुम्हें ऊपर ले जाय। लोगों के कंधों पर मत बैठो।

जब तुम अपने लक्ष्य तक पहुंचोगे और वहां अपने घोड़े से नीचे आओगे, ओ बृहत्तर मानव, तुम पाओगे कि तुम दरअसल नीचे झुके हुए हो !

(७)

ओ रचनाकार ! ओ बृहत्तर मानव, तुम्हारे गर्भ में [illegible] अपना ही बच्चा है।

जो सीखा है उसे भूल जाओ। वह सब भूल जाओ जो [illegible] चीज का कारण या हर चीज की मर्यादा समझाता है।

(८)

अपनी सामर्थ्य से ज्यादा भले न बनो। जो संभव है उसके अलावा कुछ चाहो भी नहीं।

अपने पूर्वजों के चरणचिह्नों पर चलोगे ? तो यह बताओ, उनसे ऊपर किस तरह उठोगे ?

११. उदासी का गीत

जरथुष्ट्र ने अपनी गुफा के द्वार पर खड़े होकर ये नीति वाक्य कहे। अन्तिम शब्दों के साथ वह उधर से थोड़ा-सा हटकर आगे खुली हवा में आ गया। उसने चीखकर कहा :

ओ हवा की गंध ! ओ चारों ओर की खामोशी ! मेरे वे प्राणी—मेरा गिद्ध और मेरा सांप कहां हैं ? आओ, तुम मेरे करीब आ जाओ।

एक बात बताओ ! ये जो लोग आकर बैठे हैं क्या इनमें सूंघ सकने की शक्ति नहीं है ? चारों ओर की यह कुआरी गंध वे सूंघ नहीं सकते ?

□

जरथुष्ट्र के वहां से हटते ही जादूगर धूर्ततापूर्वक मुस्कराया और बाकी लोगों से बोला :

वह चला गया। अब सिर्फ हम लोग बचे हैं। क्या हम लोग उस जैसी बातें नहीं कर सकते ?

ईश्वर मर गया। नया ईश्वर अभी जनमा नहीं। मैं चाहता हूं तब तक तुम मेरे जादू के प्रेत से समझौता कर लो।

वैसे जरथुष्ट्र मुझे भी अच्छा लगता है। साधुओं का मुखौटा बड़ा अच्छा लगाए रहता है।

□

□
शाम की पारदर्शी हवा में
कब ओस की बूंदें
धरती पर आती हैं
आहिस्ता से, बिना चाप
हर मीठे आश्वासन की तरह
निःशब्द !
दरख्तों के बीच
एक रहस्य झांकता फिर रहा है
ओ ! तू क्या सिर्फ कवि है ?
और तू झूठ बोलता है ?
हां, वह सिर्फ कवि है,
एक मूर्ख
मूर्खता के मुखौटे से
एक दिशाहीन चीख निकल रही है।
वह झूठ पर बहलाना चाहता था
और वह
ईश्वर की तरह
पत्थर की मूर्ति बनकर
मंदिर के सामने ठहर गया।
—जैसे वह खुद
ईश्वर का प्रहरी हो !
नहीं।
ईश्वर के जड़ प्रहरी को फोड़कर
बाहर आओ
और इस जंगल में थोड़ा-सा भटको
अपने होंठो से—
हिंसा, विनाश, उपहास और घृणा की
राल टपकने दो

या फिर गिद्ध की तरह उड़ो—
नीचे, बहुत नीचे
दृष्टि गड़ाए
अनन्त दूरियां लांघो।
तुम्हारी कामनाओं पर
कितने आवरण है।
ओ मूर्ख कवि !
तुम भी दुनिया को
ईश्वर की तरह
भेड़ों का हुजूम समझते हो !
शाम की झीनी हवा में
पतला-सा चांद दरख़्तों के पीछे
धीरे से उतर गया है।
इसी तरह एक दिन
मैं भी डूबा था।
अपने सत्य की विक्षिप्तता मे
अपनी समूची कामना के साथ
थके हुए दिन के सूरज की तरह
नीचे
छायाओं में
मैं भी एक दिन डूबा था !

१२. विज्ञान

जादूगर की बातों मे सभी आ गए थे। बस सिर्फ वही अप्रभावित था, जो प्रबुद्ध था। उसने झपटकर जादूगर की छड़ी छीन ली और चीख़कर कहा :

> हवा आने दो। साफ़ हवा अन्दर आने दो। ज़रथुष्ट्र को
> । तुमने इस गुफा को असह्य सीलन और जहर से भर दिया है

जादूगर, तुम्हीं बुराई हो !

तुम अपने भ्रमजाल द्वारा मुझे अपने-आप से अलग करना चाहते हो।

तुम्हारी धूर्तता मैं समझ गया हूं। मगर तुम बाकी लोग—तुम्हारा क्या प्रयास है ?

हम यहां जरथुस्त्र की गुफा में इस लिए आए थे कि इच्छा-शक्ति की एक मीनार उसमें देख सकें।

लेकिन इसने सब कुछ बिगाड़ दिया। अब और भयानक यातना सहोगे और ज्यादा बुरे दिन देखोगे।

तुम उससे नफ़रत करते हो जो तुम्हें खतरे से बाहर निकालना चाहता है और उसके पीछे भाग रहे हो, जो तुम्हें गलत जगह ले जाएगा।

भय मनुष्य की मूल और आधारभूत अनुभूति है। हर चीज की व्याख्या भय के सन्दर्भों में ही होती है। भय से ही मेरा यह सद्गुण पैदा हुआ, जिसे मैं विज्ञान कहता हूं।

जरथुस्त्र ने कहा है कि जंगली जानवरों का भय सबसे पुराना है। आदमी न जाने कितने युगों से यह भय अपने अन्दर में पाल रखा है। यही आन्तरिक पशु है।

यही सबसे अरसे का भय आखिर में सहज होकर बौद्धिकता बन जाता है और मैं उसे विज्ञान कहता हूं।

यह जीत का दिन है, जो चेतना नीचे खींचती है और जो मेरी सबसे बड़ी शत्रु है, वही पराजित होकर भाग रही है। यह दिन कितना अच्छा समाप्त हुआ ?

आज दुनिया गहरी हो गई है और आसमान ज्यादा चमकीला हो उठा है। यह जीना सार्थक है।

जरथुष्ट्र यह कहकर अभी खामोश ही हुआ था कि गुफा की ओर से चीखों से मिली-जुली हंसी सुनाई दी। जरथुष्ट्र ने कहा :

अब मुझे सही आवाज़ सुनाई दी है। उनको नीचे खींचने वाली शक्ति उन्हें छोड़कर चली गई।

तभी सहसा गुफा में सन्नाटा छा गया। जरथुष्ट्र ने कहा :

लो, अब वे फिर एक बार पवित्र प्रार्थनाएं करने लगे हैं। उन्हें शान्ति मिले, क्योंकि इस बार उनके बीच गधे ने उन्हें धोखा दे दिया।

लम्बे कान कितनी बड़ी समझ की निशानी है और यह आदत कि हमेशा 'हां' कहो, कभी 'ना' मत कहो ! क्या इसी ने दुनिया को ठीक अपने जैसा नहीं बना दिया ? अपने जैसा मूर्ख !

१४. गधों का उत्सव

जरथुष्ट्र इस बार खुद भी अपने को नहीं रोक पाया और शायद गधे से भी ज्यादा ऊंची आवाज़ में चीखा।

हां !

जरथुष्ट्र ने तब कहा :

काश कि तुम्हें हर किसी ने इस रूप में देखा होता। बस, सिर्फ जरथुष्ट्र ने न देखा होता !

तभी जादूगर ने कहा :

ओ जरथुष्ट्र ! ईश्वर अविनाशी है। हमेशा रहेगा। हर पवित्र इंसान ने यही माना है।

तू खुद गधा है और अपने ज्ञान के बोझ को ढो रहा है। एक दिन तू थकेगा, तब सोचेगा।

बदसूरत आदमी ने कहा :

ओ जरथुष्ट्र ! तू दुष्ट है। हां, एक चीज मैंने तुमसे सीखी है। सफल हत्यारे के लिए हसना सीखना जरूरी है।

(२)

जरथुष्ट्र सहसा गुफा की ओर आया और बोला :

ओ ठगो ! ओ मसखरो ! तुम यहां किस लिए आए हो ? तुमने किस लिए मुखौटे पहन रखे हैं ?

सब कुछ जानने के बाद तुम लोग बच्चो की तरह अनजान बन गए और प्रार्थना करने लगे।

अब तुम सब यहां से चले जाओ। मेरी इस एकान्त गुफा को खाली कर दो।

मुझे तुम्हारा स्वर्ग नही चाहिए। मैं मनुष्य हो गया हू और धरती पर ही जिऊगा।

(३)

जरथुष्ट्र ने फिर कहा.

तुम लोगो को देखकर मुझे हंसी आ रही है। तुम लोगो का यह गर्दभोत्सव तुम्हें याद रहे, यही चाहता हूं।

ल़ो, मेरा दिन आ पहुंचा। मेरी सुबह शुरू हो गई।

जरथुष्ट्र ने कहा और पहले से ज्यादा चमक और दृढता लेकर पहाड़ो के पीछे से उभरे सूरज की तरह गुफा छोडकर चल पड़ा।

धर्म और नैतिकता

१

बडे शिकारी के लिए, इतिहास के शुरू से लेकर अब तक, आदमी ने जो भी सोचा और अनुभव किया उसकी सारी मनोवैज्ञानिक खोज सबसे बडी शिकार यात्रा है। लेकिन अक्सर उसे घबराकर स्वीकार करना होगा कि वह अकेला है और इतिहास का यह जगल बहुत बडा। इसीलिए जरूरी होगा कि वह अपने साथ सैकडों ऐसे सहायक ले, जो हाका लगाए और पचीसों शिकारी कुत्ते साथ रखें।

फिर भी वह सफल नही हो सकता। उसकी निजी उत्सुकता को सही-सही समझकर साथ देने वाले कहां मिलेंगे! इस महा शिकार की एक और खराबी है। जैसे ही बुद्धिजीवी इस खोज के अन्त तक पहुचता है और उसका सबसे बडा शिकार उसके सामने आता है, उसी वक्त उसकी दृष्टि धुधली हो जाती है। धर्मनिष्ठ मनुष्य के जीवन में ज्ञान और विवेक की समस्याए जिस इतिहास को गढती हैं, उसे समझने में आदमी पागल की तरह घायल हो जाता है। इसके बाद वह सोचता है कि कोई दिव्य शक्ति उसे आगे ले जाएगी। इसके अलावा उसके पास रास्ता भी क्या होगा?

लेकिन मेरे लिए वह कौन-सी शक्ति आगे आएगी? और सही साथी भी मिलेंगे कहा? जाहिर है कि मुझे अपने भरोसे ही रहना होगा। खुद अपनी मदद करनी होगी। माफ कीजिए, इस तरह की जिज्ञासा और ऐसी शक्ति की कामना ही बुराई मानी जाती है।

२

प्रारंभिक और प्राचीन ईसाई दृष्टि जिस आस्था की अपेक्षा करती थी उसे स्वाधीन चिन्तन वाले सन्देहशील दार्शनिकों के बीच कम ही जगह मिली है। सदियों तक इस आस्था और दार्शनिक जिज्ञासाओं के बीच खींचतान चलती रही है। यह आस्था ही है, जिसने लूथर या क्रामवेल जैसे लोगों को ईश्वर से भी जोड़े रखा और एक दाससुलभ विश्वास से भी।

प्रारंभ से ही धर्मदृष्टि बलि की प्रक्रिया रही है। उसने विचारों की बलि ली है, स्वाधीनता की बलि ली है, आत्मा के आत्मविश्वास और विवेक की बलि ली है।

३

जब कभी धरती पर धार्मिक विक्षिप्तता ने क़दम रखे, तीन भयानक तत्त्व जरूर सामने आए : ऐकान्तिकता या वैराग्य, उपवास और औरत-आदमी के बीच शारीरिक रिश्ते का नकार। वैसे इन तत्त्वों और धार्मिक विक्षिप्तता में से कौन किसका कारण है, यह बताना ज़रा मुश्किल है। वैसे दोनों में से कौन निश्चित रूप से दूसरे का परिणाम है, यह कैसे कहा जाय। इस सन्देह की पुष्टि अत्यन्त आदिम या अत्यन्त विकसित समाजों में यौन-संबंधों पर अतिरिक्त जोर द्वारा भी होती है।

इस स्थिति को मैं यों कह सकता हूं कि धार्मिक विक्षिप्तता के साथ जुड़े ये तीनों तत्त्व मिर्गी का छुपा हुआ दौरा है। प्रश्नों से इतना परहेज और कहीं नहीं होता, जितना धार्मिक क्षेत्र में। इसके बावजूद आम लोगों को ही नहीं दार्शनिकों को भी इसने आकर्षित किया है और इन सबने मिल-कर बेहूदगी और अन्धविश्वास के कूड़े के ऊंचे-ऊंचे ढेर लगा दिए हैं।

शायद अब हमें थोड़ा-सा अलग ढंग से सोचना होगा। इस रास्ते से थोड़ा हटकर चलने की कोशिश करनी होगी। शोपेनहावर जैसे आधुनिक दार्शनिक के चिन्तन में इस आस्था के प्रति एक सवालिया निशान हमें स्पष्ट दिखाई देने लगा है।

इच्छाशक्ति से इनकार कैसे किया जा सकता है? सन्त कैसे बनता है? शोपेन हावर ने इसी सवाल से शुरुआत की थी और वह दार्शनिक हो गया। मैं जिसे धार्मिक विक्षिप्तता कहता हूं आप उसे धार्मिक प्रवृत्ति कह सकते हैं। इस प्रवृत्ति ने बाकायदा जैसे मुक्तिवाहिनी तैयार करके एक धार्मिक महामारी फैला दी है। अगर यह पूछा जाये कि इस महामारी ने बूढ़े, जवान, हर आदमी पर क्यों इतना प्रभाव डाला, तो मैं इतना ही कह सकता हूं कि इसने इस अन्धविश्वास को बड़ी सफलता से फैला लिया है कि इसके द्वारा बुरा आदमी भी सन्त बन सकता है। अब तक का मनोविज्ञान सिर्फ इसी एक चमत्कार के नाम पर अटककर रह जाता रहा है।

४

यूनानी समाज में धार्मिक जीवन की स्थिति आश्चर्यजनक रूप से उन लोगों में सीमित थी, जो उच्चतर मानव माने जाते थे। बाद में जब जन-समुदाय का उस व्यवस्था में प्रभुत्व बढा, धर्म ने भी भय का सहारा लेना शुरू कर दिया।

५

ईश्वर के प्रति निष्ठा उन लोगों का स्वभाव रहा है, जो निहायत बोदे, सीधे-सादे और दयालु तबीयत के रहे हैं, जैसे मार्टिन लूथर। उनमे चुनौती देने वाली जिज्ञासा नही होती। वे पौर्वात्य अध्यात्म के ऐसे नमूने होते है, जिन्हें पदोन्नति पाया हुआ गुलाम ही मान सकते हैं। उनमें एक स्त्रैण नम्रता और अनुराग की प्रवृत्ति होती है। बहुत-से लोगो मे ईश्वर के प्रति निष्ठा उसी तरह छिपे-छिपे आती है, जैसे किसी लड़की के जीवन मे कैशोर्य आता हो। कुछ लोगों मे बूढ़ी औरतों की बदमिजाजी की तरह यह निष्ठा पैदा हो जाती है।

६

बहुत शक्ति-सम्पन्न लोग भी सन्तों के आगे झुकते पाए गए हैं। आखिर वे सन्तों के आगे क्यों सिर झुकाते हैं? दरअसल सन्त की दुबली-पतली और बेहूदा काया के पीछे वे ऐसी ताकत देखते हैं, जो उनकी परीक्षा लिया करती है। वैसे वे सन्त का आदर इस नजर से करते हैं कि कहीं अपने प्रभुत्व को स्वीकृति देना और दिलाना उनकी नीयत में छिपा रहता है।

इसी का एक दूसरा पहलू यह भी है कि सन्त के पीछे वे एक ऐसी शक्ति की कल्पना कर लेते हैं, जो उन्हें अपराजेय लगती है और इस तरह वे अपनी इच्छाशक्ति को तोलते हैं।

७

आज नास्तिकता क्यों? ईश्वर का पिता होना अच्छी तरह अस्वीकृत कर दिया गया है। ईश्वर न्याय और फल देता है, इस वहम को तोड़ दिया गया है। कहते थे कि वह सुनता है। वह नहीं सुनता और अगर सुनता भी है, तो वह अब इस लायक नहीं रहा कि किसी की मदद कर सके। सबसे बड़ी बात तो यह कि ईश्वर अब हम तक अपनी बात साफ-साफ पहुंचा भी नहीं सकता। मुझे यूरोप में ईश्वरवाद की मृत्यु का बड़ा कारण यही लगता है। मेरा खयाल है कि जितनी तेजी से धार्मिक प्रवृत्ति बढ़ी है, उतनी ही तेजी से उसने ईश्वरवादी आस्था में सन्देह की दरारें डाली हैं।

८

आधुनिक दर्शन का उद्देश्य क्या है? डेकार्ट के बाद, अक्सर उसका खण्डन करते हुए, जो दार्शनिक सामने आए उन्होंने आत्मा-संबंधी पुरानी धारणा के विपरीत अस्तित्व और अस्तित्व के बोध के विचारों का मूल्यांकन किया; लेकिन उन्होंने धर्म के आधारभूत पूर्वाग्रहों की सीमाएं जरूर छोड़ीं। आधुनिक सन्देहवादी ज्ञान मीमांसा अक्सर जाने अनजाने धर्म-

विरोधी रही है। पहले लोग आत्मा पर इस तरह विश्वास करते थे, जैसे भाषा में व्याकरण की अनिवार्यता पर। 'मैं' एक स्थिति है और 'विचार' उसकी अवस्था। इसीलिए माना जाता है कि सोचना या विचार करना एक ऐसी क्रिया है जिसका कोई कर्त्ता भी हो।

इसके बाद इस जाल से छुटकारे का एक अत्यन्त कुशल प्रयत्न किया गया। चूंकि विचार, विचारक की सिद्धि करते है, इसलिए विचारक विचार प्रक्रिया का ही समग्र रूप है। इमैन्युएल काण्ट ने ठीक यही खोज की। इसीलिए काण्ट को वह चीज नही दिखाई दी, जिसे आत्मा कहते हैं और जिसके बारे में वेदान्त ने बहुत ज्यादा गंभीरता के साथ विचार किया था।

६

धार्मिक निर्ममता के तीन स्तर मुख्यतः पहचाने जा सकते हैं। गोकि उन स्तरों में भी जाने कितने उपस्तर होंगे; लेकिन तीन तो बहुत महत्त्वपूर्ण हैं! आदिम इतिहास में आदमी अपने ईश्वर के लिए नरबलि देता था। अनेक समाजों में पहले बच्चे की बलि दी जाती थी। राजा टाइबेरियस ने रोम के इतिहास मे ऐसी ही एक भयानक मिसाल दी थी। इसके बाद नैतिकता का जमाना आया। इस युग में लोग हर ऐसी चीज़ की बलि ईश्वर के लिए देते थे, जो उन्हें सुख-सुविधा पहुंचाती हो। तमाम तपस्या और साधना करने वाले लोग इसी युग की देन हैं। त्याग और तप के नाम पर हर सुखद वस्तु का त्याग और तरह-तरह की तकलीफें भोगने वाला तपस्वी अपने प्रति निर्दय हो जाता था।

इसके बाद बलि देने को बचा ही क्या? तब जरूरी हुआ कि आस्था, आशा और पवित्रता के प्रतीक ईश्वर की बलि दे दी जाये। अपने-आप पर एक और अत्याचार करने की नीयत से लोगों ने पत्थरों से लेकर जहालत, भाग्य और शून्य तक न जाने कौन-कौन-सी चीजों को पूजना शुरू किया। निर्दयता के इस अन्तिम प्रयत्न में शून्य के एवज़ में ईश्वर की बलि अपने-आप मे कितना बड़ा विरोधाभास है!

१०

ईश्वर के लिए मानव से प्यार करो। अब तक मानव जाति ने सबसे महान् उपलब्धि इस धारणा के रूप मे ही की है। जाने किसने यह सोच लिया कि मानव जाति से प्यार इस तरह बिना किसी स्पष्ट और तर्कसंगत आधार के पैदा किया जा सकता है। कोई एक पहला आदमी शायद सही बात कह पाने के लिए सही शब्द इस सिलसिले में खोज पाने में असमर्थ रहा होगा और अनायास उसकी जबान से कुछ का कुछ निकल गया होगा। लोग उस आदमी को इस तरह प्यार करने लगे, जैसे कोई तैरने निकला हो और बड़े आराम से डूब गया हो।

११

मेरे जैसे मुक्त बुद्धि-वाले लोग, जिसे दार्शनिक कहते हैं, उसका काम होता है—मानवजाति के विकास के लिए धर्म को एक अनुशासन या शिक्षा पद्धति के तौर पर इस्तेमाल करना। जैसे वह इसी उद्देश्य से समसामयिक आर्थिक-राजनीतिक परिस्थितियों का इस्तेमाल करता है, उसी तरह वह धर्म का करता है। धर्म का इस तरह इस्तेमाल जटिल प्रक्रिया है। धर्मनिष्ठ व्यक्ति तो मेरी इस बात मे खीजेगा ही।

धर्म का इस्तेमाल भारत मे ब्राह्मणों ने आश्चर्यजनक कुशलता से किया था। वे इसी के जरिये इतने शक्तिशाली हो गए कि अक्सर राजा की नियुक्ति तक वे ही करते थे।

१२

यूरोप में आज नैतिकता-संबंधी धारणाएं काफी सूक्ष्म और संवेदनशील हो गई हैं और लोगों ने उसमें एक और आयाम जोड़ दिया है—नैतिक विज्ञान। नैतिकता को पिछले दिनों विज्ञान बनाने की कोशिश मे उसे वैज्ञानिक आधार देने के प्रयत्न हो रहे हैं। दार्शनिक समझ रहे हैं कि इस

हास्यास्पद प्रयत्न का बहुत बड़ा महत्त्व है। वे नैतिकता को वैज्ञानिकता दे रहे हैं, जबकि नैतिकता स्वयं एक दी हुई चीज है।

राष्ट्र, समाज, इतिहास और काल के बारे मे अध्येताओं ने गलत-फ़हमियों की जो विरासत पाई है, उसी का परिणाम है उनका यह प्रयत्न ! मजे की बात तो यह है कि 'नैतिकताविज्ञान' के बारे में अब तक जो कुछ भी सोचा गया उसमें यह कहीं नही है कि नैतिकता स्वयं भी एक समस्या है। नैतिकता अपने-आप में उन्हें समस्या नही लगती।

१३

दार्शनिकों की धारणा यह है कि व्यक्ति मे नैतिकता एक 'स्वयंसिद्ध अनिवार्यता' है। ऐसी बात कहने वाले से प्रश्न किया जा सकता है कि स्वयं उसके बारे में ऐसी समझ का क्या स्थान होगा ? अनेक ऐसी व्यवस्थाएं हैं, जिनमें नैतिक मर्यादाएं सिर्फ इसीलिए बनाई गई हैं कि उनके निर्माताओं के प्रति लोगों में विश्वास पैदा हो। कुछ ऐसी नीति व्यवस्थाएं भी होती हैं, जो सिर्फ इसलिए बनी कि उनके निर्माताओं को उनका निर्माण करके आत्म-संतोष मिला। कुछ नीतितंत्र गढने वालों का उद्देश्य सिर्फ अपने-आप को सूली पर चढवाना-भर था। कुछ ने नीति मर्यादाएं नहीं गढ़ी, बल्कि उनके आवरण में फेर-बदल किया है। कुछ लोगों ने नीतिशास्त्र इसलिए बनाए कि वे अपने-आप को महान् साबित कर सकें, दूसरों से बड़ा बनाए रख सकें। संक्षेप मे कहूं, तो नैतिक व्यवस्थाएं भावानुभूतियों की प्रतीक-भाषा हैं।

१४

मुक्ति के विपरीत, नैतिकता प्रकृति और तर्क पर अत्याचार है। जब तक कोई नीतिशास्त्र हर किस्म के अत्याचार को गलत घोषित नही करता, तब तक तो ऐसा ही रहेगा। हर नीति पथ का सबसे बड़ा सत्य है—गति-रोध या बंधन या सीमा। कवियों से पूछो कि उन्हें अपनी रचना-प्रक्रिया

के दौरान नैतिकता के कारण ही कितना आत्मावरोध करना पड़ा है। वह रचनाकार के रूप मे एक जबर्दस्त मुक्ति की छटपटाहट महसूस करता है; लेकिन नीतिशास्त्र के हजारों वाक्य उसके सामने आ खड़े होते हैं और क़दम-क़दम पर उसकी मुक्ति को तोड़ते हैं।

नैतिक मर्यादाएं आज्ञाकारिता की अपेक्षा करती हैं। नीतितत्व हर आदमी को झुकाकर आज्ञाकारी बनने पर मजबूर करता है। चिन्तक चाहते हुए भी उन्ही दिशाओं मे सोचने को बाध्य होता है, जिधर उसे धर्मनीति इशारा करे। इस तरह उन्मुक्त चेतना का निरन्तर दम घोंटा जाता रहता है। उसके पैर में बेड़ियां डाली जाती रहती हैं। इस तरह इस शास्त्र ने कितना नुकसान पहुंचाया है, इसका अन्दाजा लगाना मुश्किल है और शास्त्री लोगों को इसके लिए खेद भी कतई नही।

सदियों तक यूरोपीय दार्शनिक 'किसी सत्ता के अस्तित्व' की सिद्धि की कोशिशें करता रहा। इसके विपरीत, अब हम हर ऐसे विचारक को संदेह से देखने लगे हैं. जो इस सिद्धि में जुटा हुआ है।

नैतिक सिद्धांतों का अन्तरंग सत्य यह है कि ये सिद्धांत हमारी सहज, स्वाभाविक मुक्ति को अस्वीकार करके चलते हैं। वे हमारा क्षितिज छोटा करके तात्कालिक और छोटे-छोटे उद्देश्यों या कर्तव्यों में हमे फंसा देते हैं। वे हमारे दृष्टिकोण को बहुत संकरा कर देते हैं। उनके लिए दरअसल जीवन के विकास की सबसे बड़ी शर्त है—जहालत।

१५

जो जातियां उद्यमी होती हैं, उन्हें खाली बैठना अच्छा नही लगता। अंगरेज जाति ने एक बहुत बड़ा मोर्चा फतह किया, जब उन्होने इतवार का दिन धर्म निष्ठा से जोड़ दिया। धीरे-धीरे हाल यह हो गया कि सारे हफ़्ते किए जाने वाले कामो से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हो गया यही एक छुट्टी का दिन।

१६

प्लेटो के नीति-दर्शन में एक अजीब सुकरातवाद घुसा हुआ दिखाई देता है। प्लेटो का अपना दर्शन न होने के बावजूद सुकरातवादी नीति-दर्शन उसमें है। दरअसल प्लेटो इस तरह की बातो में कुछ ज्यादा ही भला था। उसने लिखा है—"कोई व्यक्ति किसी दूसरे को जान-बूझकर चोट नहीं पहुंचाना चाहता। अगर ऐसा होता है, तो अनजाने मे। बुरा आदमी वस्तुत: अपने-आप को ही चोट पहुचाता है। अगर वह जान जाये कि आमुक काम बुरा है, तो वह ऐसा काम करे ही क्यों? बुरा आदमी गलती से बुरा हो जाता है। अगर कोई उसकी गलती सुधार दे, तो वह अच्छा बन जायेगा।"

इस तरह के विचार से आम आदमी को बड़ा सहारा मिल जाता है। वह समझ जाता है कि बुराई में उसका कसूर इतना ही है कि वह उन लोगों की बात नहीं मान रहा। मान जाये तो सब ठीक।

१७

पुराने आस्तिक दर्शन की समस्या रही है—ज्ञान और आस्था के बीच आस्था का चुनाव। बहस इसी बात पर चली है कि वस्तुओं का विवेचन और मूल्यांकन तर्क के आधार पर किया जाये या सहज अनुभूति के आधार पर।

आस्तिक दर्शन में वस्तुओं की विवेचना ज्ञान के आधार पर नही निर्देशों के आधार पर की जाती रही है। इसीलिए वहां सन्देह की गुंजाइश कभी नहीं रही। ईसाइयत के अभ्युदय से बहुत पहले इस बहस को इस तरह दो अलग-अलग धाराओं में सुकरात ने बांट दिया था। सुकरात ने शुरू में तर्क और ज्ञान का रास्ता अपनाया और तमाम जिंदगी यूनान के उन बड़े लोगों का मज़ाक उड़ाता रहा, जो अच्छे माने जाते थे और अच्छे काम करते थे; लेकिन यह नहीं बता सकते थे कि उनकी उस अच्छाई का तार्किक आधार क्या है? लेकिन अन्तिम दिनो मे सुकरात छिपे-छिपे, अपने-आप का मखौल भी उड़ाने लगा था, क्योंकि उसने सहसा महसूस किया कि जिन बातों का

तर्क से रिश्ता नहीं है, उन्हें छोड़ा किस तर्क पर जाये ! उस महान् विचारक का यही सबसे बड़ा धोखा था।

प्लेटो उससे ज्यादा भोला था। उसने यह माना कि ज्ञान और आस्था के दोनों रास्ते सहज स्वाभाविक है और दोनों मिलकर ईश्वर और नीति मर्यादा तक पहुंचते हैं। प्लेटो के बाद सारे ईश्वरवादी विचारकों ने ठीक यही बात कही। नतीजा यह हुआ कि अबतक तर्क के ऊपर भावना की ही जीत होती आई है। डेकार्ट को भी कोई खास दृष्टि से देखें तभी इनसे अलग कर सकता है। डेकार्ट बहुत महान् बुद्धिवादी था और आधुनिक बुद्धिवाद का पितामह माना जाता है; लेकिन वह भी सिर्फ़ तर्क को ही मान्यता देता था। तर्क दरअसल औजार है, जिससे कुछ किया जाये, कृति या दृष्टि नहीं। डेकार्ट इसीलिए रातहीं था।

१८

ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि सूर्य के आसपास असंख्य ऐसे अंधेरे ग्रह हैं, जो दिखाई नही देते। आदमी के सिलसिले मे इसे एक उपमा के रूप मे देखा जा सकता है। नीतियों का अध्ययन करने वाले मनोवैज्ञानिक भी इसी तरह बहुत कुछ ऐसा मान लेते हैं, जिसकी व्याख्या नही की जा सकती।

सभी नीति दर्शन, जो दूसरों को सुखमय जीवन का आश्वासन देने के लिए गढ़े गए है, सिर्फ़ दूसरों को उनके अपने काल्पनिक भय से मुक्ति दिलाते हैं। लोगो को उनके अन्दर का एक भय दिखाया जाता है और उससे बचने के लिए लोग आज्ञाकारी हो जाते हैं। ये दर्शन बूढ़ी औरत की समझदारी की तरह हर किसी पर थोपे जाते रहते हैं। उनके लिए हर शख्स एक संख्या होता है और हर शख्स के ऊपर उसे सही-सही चिपकना जरूरी होता है।

वे लोग इसे विज्ञान मानते हैं, जबकि यह सिर्फ़ जहालत की टोकरी-भर ही होता है।

२०

मानव इतिहास के सभी युगों में भेडों की रेवड़ों का अस्तित्व रहा हैं। बहुत थोड़े-से लोगों ने बहुत ज्यादा लोगों को हुंकाए रखा है। यानी आज्ञा का पालन करने वालो की तादाद बहुत ज्यादा रही है। हालत यहां तक पहुंच गई है कि आदेश देने वाला बाहरी आदमी न होने पर उन्होंने अपनी अन्तश्चेतना का ही आदेश मानना शुरू कर दिया है। उनकी आत्मा गवाही देने लगी है। आत्मा कहती है—यह करो, यह मत करो। वे इतने ज्यादा परनिर्भर हो जाते हैं कि इसके बिना जी नही सकते। अध्यापक, मां-बाप, कानून, बहुमत और न जाने ऐसी ही दूसरी कितनी हस्तिया उनकी आत्मा की गवाहिया तैयार किया करती हैं। एक स्थिति यह भी आती है कि वे खुद दूसरों को आदेश देने लग जाते हैं। मैं इसे शास्ताओं का आडम्बर कहता हूं।

२१

अब मै वही बात फिर कहना चाहूंगा, जो मेरे जैसे लोगो ने सैंकड़ो बार कही है। सभी कहते हैं कि अगर बिना किसी व्याख्या के कोई आदमी की गिनती जानवरों के साथ कर दे, तो बहुत बुरा लगेगा। इसलिए रेवड़ की बात करना और ज्यादा खतरनाक है; लेकिन उपाय क्या है? नयी नज़र से स्थिति तो ऐसी ही कही जायेगी।

२२

. वैसे यह देखकर गहरा दुख होता है कि कैसे कभी-कभी बहुत बड़ा आदमी भी रास्ते से भटक जाता है और छीजता है; लेकिन जो इस सार्वभौम खतरे को देख लेता है कि मानव खुद छीज रहा है, वह ऐसी तकलीफ से गुजरता है, जिसे त्रासानी कहा जायेगा।

□□

□ नीत्शे

□ इस सदी में नीत्शे के अलावा शायद ही कोई ऐसा दार्शनिक हो, जिसने गैर मार्क्सवादी दुनिया में इतने अधिक बुद्धिजीवियों को प्रभावित किया हो।

□ टामस मान, हर्मन हेस, आन्द्रे माल्रो, आन्द्रे जीद, अल्बेयर कामू, रिल्के, स्टीफेन जार्ज, ज्यां पाल सार्त्र और जर्मनी के अनेक अस्तित्ववादी नीत्शे से गहरे तक प्रभावित हैं।

□ यहां तक कि फ्रायड जैसे विचारक ने भी नीत्शे की तारीफ करते हुए स्वीकार किया है कि नीत्शे मानव मनोविज्ञान में गहरी पैठ रखता था।

□ उसने यहां तक कहा कि 'अपना अन्तरंग समझने वाला नीत्शे के अलावा दूसरा व्यक्ति न पैदा हुआ है, न होगा।'